ख़ून के धब्बे

●

मोहनसिंह सेंगर

किताब महल, इलाहाबाद

समर्पण

उन अनामे-अजाने सैनिकों की स्मृति में,
जिन्हें यह नहीं मालूम कि वे क्यों लड़े,
जिन्हें यह नहीं मालूम कि वे किसके लिए मरे;
पर
जिनके ख़ूनके धब्बे
विश्व-इतिहासके पृष्ठोंपर से कभी मिटेंगे नहीं,
कभी धुँधले नहीं होंगे।

—लेखक

अपनी बात

कहानी किसी ख़ास कैफ़ियत या भूमिका की मुहताज नहीं होती। पर इस संग्रहकी कहानियोंका अपना एक छोटा-सा इतिहास है, जिसके सम्बन्धमें यहाँ दो शब्द कहना शायद अनावश्यक अथवा असंगत न होगा।

इन पंक्तियोंके लेखकने अपने पत्रकार-जीवनके आरम्भिक वर्षोंसे ह फ़ासिज़्मके उटते हुए ख़तरेको आशंकाकी दृष्टिसे देखा है। धीरे-धीरे ज्यों-ज्यों उसका प्रभाव बढ़ता और फैलता गया, त्यों-त्यों उसके नापाक क़दम मानवीय सभ्यताके वरदानों और वैयक्तिक स्वतंत्रताके अवदानोंको कुचलते हुए आगे बढ़ने लगे, त्यों-त्यों उसने देखा कि विभिन्न देशोंके प्रतिगामी और पराजयवादी लोगोंमें उसके आगे आत्म-समर्पण करने और उसमें कुछ 'गुणों' को ढूँढ़ निकालनेकी आत्मघाती प्रवृत्ति ज़ोर पकड़ने लगी। पूर्व और पश्चिमके इने-गिने जनक्रान्तिवादियोंको छोड़कर विजयीके सामने नतमस्तक होनेकी परम्परागत दिमाग़ी ग़ुलामीने बहुतोंको भ्रान्त किया, बहुतोंके विचार बदले। हिन्दीमें हिटलर, मुसोलिनी और जापान की 'आश्चर्यजनक' औद्योगिक क्षमतापर बड़े-बड़े प्रशंसापूर्ण लेख निकले तथा पुस्तकें भी लिखी गईं! इन सबसे संकेत पाकर लेखकने चाहा कि जन-साधारणके सामने फ़ासिज़्मके नग्न रूप और उसकी वीभत्स संभावनाओंको रखा जाय। पर शीघ्र ही ऐसा गुरुतर कार्य करनेका साहस और आत्म-विश्वास वह नहीं जुटा सका।

दूसरे महायुद्धके छिड़ते ही फ़ासिज़्मके ख़तरे ने मूर्त्त-रूप धारण किया। इसे लेकर विश्व-क्षितिजपर आशंकाओं और भयका जो तूफ़ान-सा उमड़ आया, उसने लेखककी तन्द्रा भंग की और फलस्वरूप उसने कहानीके

माध्यमसे फ़ासिज़्म-विरोधी जनताके प्रत्यक्ष संग्रामका आभास देने का विचार पक्का किया। 'युग-सन्धि' को यदि रूपकके रूपमें इस योजनाका प्राक्कथन या भूमिका कहा जा सके, तो उसका पहला चरण था 'विद्रोह' और दूसरा 'नया युग'। पर फ़ासिज़्म-विरोधी चीज़ें लिखनेमें कोरी कल्पना ही काम नहीं दे सकती। उसके लिए पर्याप्त जानकारी और अध्ययन भी अपेक्षित हैं। दुर्भाग्यवश इस दिशामें जितना ध्यान और समय दिया जाना चाहिए था, लेखक नहीं दे पाया। फिर भी जो कुछ वह लिख सका, वह इस संग्रहके रूपमें पाठकोंके हाथोंमें है। कहानीके माध्यमको अपनाकर और उसकी सीमाओंमें रहकर फ़ासिज़्मके इतिहास तथा परिभाषा आदिकी विषद चर्चा करना तो विशेष सम्भव नहीं था; पर पृष्ठभूमि प्रतिक्रिया और प्रत्यक्ष प्रतिरोधकी कुछ चेष्टाओंको बिखरे हुए रूपमें लेखकने पाठकोंके सामने रखनेकी चेष्टा ज़रूर की है। 'युग-सन्धि' उसके बर्बर रूपके स्फोटको ही आमुख अथवा प्रतीक-रूपमें रखनेका एक यत्न अथवा प्रयोग है। इसीको अधिक स्पष्ट और नग्न रूपमें 'जय' तथा 'शोधका परिणाम' में दिखानेकी चेष्टा की गयी है।

पर इन कहानियोंमें दिखाये गये नात्सी-दस्युओंके बर्बर और अमानुषिक कारनामोंमें यह धारणा बना लेना सरासर भ्रान्ति और ज़्यादती होगी कि समग्र जर्मन जनताने ही नात्सीवादको आत्म-समर्पण कर दिया था। नात्सी गुण्डों द्वारा आतङ्कित, पीड़ित और शोषित होकर भी शान्ति और जन-स्वातन्त्र्यके जर्मन पुजारियोंने कभी हार नहीं मानी और नात्सी दस्युओंकी 'सफलता', अमानुषिक दमन और तुमुल विजय-ध्वनिके बीच भी, अपराजेय कही जाने वाली आक्रमणकारी जर्मन सेनाओंके ठीक पीछे, अपनी जानकी बाज़ी लगाकर उसकी पराजयकी तैयारी करते रहे। 'अच्छे दिन', 'वागनर' और 'अन्तका आरम्भ' इन्हीं वीर और विवेकशील जर्मनोंकी स्थिति, मनोवृत्ति एवं प्रवृत्ति का चित्रण करनेके प्रयत्न हैं। ये उस समय लिखी गयीं और छपीं, जब जर्मनीकी हार या आत्म-समर्पणकी

तो बात ही दूर रही, अधिकांश लोग उसके जीतनेकी .खुशखबरी सुननेकी प्रतीक्षामें मुँह बाये बैठे थे। महायुद्ध समाप्तके बाद जो बातें और जन-तान्त्रिक तत्त्व सामने आये हैं, उनसे न सिर्फ़ इन अनुमानित चेष्टाओंकी यथार्थता ही सिद्ध होती है, बल्कि जनतंत्र और मानवताके भविष्यमें विश्वास भी सुदृढ़ होता है।

'वे दोनों' ब्रिटेनकी नयी पीढ़ीके दो प्रतिनिधियोंके फ़ासिस्त-विरोधी युद्ध-सहयोगका एक मजेदार क़िस्सा है। 'पीकिंगका भिखारी' चीनके उस गुरीला-युद्धकी एक झाँकी है, जिसके कारण वह जापान-जैसे अपनेसे कईगुना अधिक सम्पन्न और सशक्त शत्रुके मुक़ाबलेमें कई लम्बे वर्षों तक सफलतापूर्वक डट सका। इस प्रकारके छापामार-युद्धोंने चीनकी 'मुक्ति' में कितना बड़ा काम किया, यह अब सर्वसाधारण पर प्रकट है। 'कप्तानकी वसीयत' में एक ऐसे अमरीकन नागरिकके उद्‌गार हैं, जिसने बिना अपने देशपर आक्रमण हुए विश्वशान्ति और विश्व-स्वातन्त्र्यके लिए अपनी मातृभूमि और परिवारसे हज़ारों कोस दूर, हँसते-हँसते अपने प्राण न्योछावर किये। उसकी वसीयत हर फ़ाशिस्त-विरोधी और शान्तिवादीकी वसीयत हो, यही लेखककी अपील और आकांक्षा है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि दूसरे महायुद्धकी लपटें फ़ासिज़्मके अनेक स्तम्भोंका भक्ष्य लेकर शान्त हो गई हैं; पर सही मानी में और पूरे तौरपर अभी फ़ासिज़्मका अन्त नहीं हुआ है। कल तक जो शक्तियाँ फ़ासिज़्मके विनाशके लिए एक होकर लड़ रही थीं, आज वे ही एक-दूसरे के ख़िलाफ़ आशंका और अविश्वास से ग्रस्त हो एक नई विनाशकारी-सृष्टिकी तैयारी कर रही हैं। पूर्वी यूरोप और एशियाका काफ़ी बड़ा भाग आज फ़ासिज़्मसे भी कहीं अधिक सबल और सजीव सैनिक सत्तावादके फ़ौलादी पंजेमें कसा हुआ है। मानवकी स्वतन्त्रता-रक्षाके नामपर आज अपने-अपने देशोंमें वहाँ की सरकारें उसे बेरहमीसे दफ़ना रही हैं। 'जनतन्त्र' और 'मुक्ति' आज 'नये फ़ासिज़्म' और 'नई गुलामी' के प्रतीक बन रहे हैं।

इसीलिए 'शान्ति' के धुँआँधार प्रोपेगेंडाके पीछे शस्त्रीकरण और अणु तथा हाइड्रोजन बमोंकी होड़ लगी हुई है। इस तरह दक्षिण और वाम दोनों पक्षोंके खेमोंमें आज एक नया फ़ासिज़्म अपना मनहूस सिर उठा रहा है। सच तो यह है कि जब तक दुनियामें शोषण, परोपहरण, उत्पीड़न और दूसरेके श्रम-सम्पत्ति पर पनपनेवाले साम्राज्यवादका बोल-बाला है, फ़ासिज़्म प्रति क्षण जीता-जागता है। इसका प्रभावपूर्ण ढङ्गसे मूलोच्छेदन जनता ही कर सकती है। यदि इस दिशामें कहानियाँ कुछ भी लोकमत जाग्रत और लोकबल संगठित कर सकीं, तो लेखक अपने परिश्रम को सार्थक समझेगा।

मौलिकता, कलात्मकता अथवा साहित्यिकताकी खोज करनेवालों को शायद इन कहानियोंसे बहुत अंशोंमें निराश ही होना पड़ेगा। सच तो यह है कि अपने बुद्धि-विलास या साहित्य-रसिकों और कला-विलासियों के मनोरंजनार्थ लेखकने इन्हें लिखा भी नहीं। इनके पीछे एक निश्चित ध्येय, स्थिर उद्देश्य एवं अटूट प्रेरणा हैं। उनके सन्देशको पाठकों तक पहुँचानेके लिए लेखकको जहाँसे भी साधन सामग्री मिली, उसने ली और जिस रूपमें भी वह उसे रख सका, उसने देखा। ऐसा करनेमें कई जगह कहानीकी परिभाषा और टेकनीककी रक्षा करनेके मोहसे भी उसे छुट्टी लेनी पड़ी है। धृष्टता होनेपर भी शायद यह क्षम्य हो। इसके साथ ही सम्बन्धित देशोंसे हज़ारों कोस दूर, उनकी कोई वैयक्तिक जानकारी न होते हुए और फ़ौजी सेंसरसे घिरे एक ग़ुलाम देशमें बैठकर ऐसा प्रयत्न करना कितना अधिक त्रुटिपूर्ण हो सकता है, इससे भी लेखक अनभिज्ञ नहीं। अतः अपनी ग़लतियोंके लिए सुविज्ञ पाठकों एवं आलोचकोंसे वह सुधार और मार्ग-प्रदर्शनकी आशा करता है।

—मो० सि० सेंगर

———

क्रम

१	युगसन्धि	१
२	अच्छे दिन	१०
३	नया युग	२६
४	विद्रोह	३४
५	वागनर	४१
६	शोधका परिणाम	५८
७	जय	७१
८	अन्तका आरम्भ	८६
९	वे दोनों	१००
१०	पीकिंगका भिखारी	१०८
११	कप्तानकी वसीयत	११६

युग-सन्धि

उस दिन साँझको जब दिन-भरका थका-हारा खग अपने घोंसले पर लौटा, तो उसने देखा कि कोई अपरिचित खगी उसके घोंसलेके बाहर डालपर बैठी है। उसे देखकर भी जैसे खगने न देखा हो, ऐसा अजान बनकर वह उसके पाससे फुदककर अपने घोंसलेमें चला गया।

पर घोंसलेमें वह निश्चित होकर नहीं बैठ सका। उस अपरिचित किंतु तरुणी खगीकी उपस्थितिने उसके मनमें एक अजीब उथल-पुथल पैदा कर दी थी। उसका दिल तेजीसे धुक्-धुक् कर रहा था। न जाने क्या सोच कर उसका रोम-रोम पुलकित हो उठा और उसके पङ्ख जैसे दिन-भरकी थकान भूलकर फिर आकाश नापनेको उतावले हो उठे। दबे पाँव वह धीरे-धीरे अपने घोंसलेके द्वारपर आया और उझककर बाहर बैठी हुई खगीकी ओर देखने लगा।

इसी समय उसकी खगीसे चार आँखें हुईं। वह भी न मालूम कबसे अपनी गर्दन ऊपर उठाये उसके द्वारपर पलक-पाँवड़े बिछाये थी। दोनोंने एक-दूसरेकी आँखोंकी भाषा पढ़ी और मुस्कराये। पर अपनी तस्कर-वृत्तिमें पकड़े जानेके कारण खग कुछ झेंप-सा गया और उसने अपनी आँखें नीची कर लीं।

यह देख खगी ठहाका मारकर हँस पड़ी। उसका ऐसा करना मानों खगके पौरुषको चुनौती थी। उससे भी अब रहा न गया। फुदककर वह घोंसलेसे बाहर डालपर आ बैठा और बनावटी क्रोधके साथ बोला—'क्यों जी, तुम हँसी क्यों? मेरे ही घरपर आकर मेरी ही हँसी उड़ानेकी तुम्हारी यह मजाल कैसे हुई?'

खगी पहले तो कुछ सकुचाई, फिर जरा सहमकर बोली—'क्यों, क्या

यहाँ हँसनेपर भी कोई पाबन्दी है, या इसके लिए भी कर देना पड़ता है ?'

खग कुछ किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो उसे ऊपरसे नीचेतक देखने लगा। अब निकटसे उसकी आँखोंका मुक्त. हास्य और प्रणय-निवेदन पढ़ते उसे देर न लगी। सहसा वह भी खिलखिलाकर हँस पड़ा और बोला—'तुम भी अजीब जीव हो !'

खगी उसके जरा और निकट खिसक आई और अपनी चोंचसे उसके घोंसलेकी ओर इशारा करके पूछा—'यह तुम्हारा ही नीड़ है ?'

'हाँ, मेरी माँका यही एकमात्र स्मृति-चिह्न है।'

'तो तुम इसमें अकेले ही रहते हो ?'

'और नहीं तो क्या ? तभी तो चोरकी तरह तुम्हें लुक-छिपकर देख रहा था। शायद तुम ही इसकी शोभा बढ़ानेकी कृपा कर सको !'

खगी लजा गई। खग उसके बिल्कुल पास आ गया और उसके पङ्खों से अपने पङ्ख सटाकर कहने लगा—'आज तुम मेरे सौभाग्य और सुखकी अयाचित लक्ष्मी बनकर आई हो। अब तुम्हें जाने न दूँगा। आजसे यह नीड़ हम-तुम दोनोंका जीवन-स्वर्ग बनेगा। क्यों, स्वीकार है न ?'

खगीने कृतज्ञता-भरी आँखोंसे खगकी ओर देखा और स्वीकृति के रूपमें अपनी चोंच खगकी चोंचसे मिला दी।

—२—

अँगड़ाई लेते हुए जब खगने अपनी आँखें खोलीं तो सुबहका धुँधका कुछ अधिक साफ़ हो चला था। घोंसलेके द्वारपर आकर उसने देखा कि पूर्व दिशा लाल हो चली है और आसपासके नीड़ोंमें से कोई आवाज नहीं आ रही है, जिससे मालूम होता था कि उनमें रहनेवाले खग-खगी अपनी दिवसयात्राके लिए कभी के जा चुके हैं।

आँखोंमें और अधरोंपर मुस्कान सजाये खगी जैसे अपने प्रियतमके उठनेकी प्रतीक्षा ही कर रही थी। खगके निकट आकर वह बोली—'आज तो खूब सोए ?'

'हाँ, इसका श्रेय तुम्हींको है ! याद नहीं आता, जिन्दगीमें पहले भी कभी ऐसी मीठी और गहरी नींद सोया हूँ। पर कलसे मुझे जल्दी उठानेकी जिम्मेदारी तुमपर है, समझीं। अगर इसी तरह देरसे उठनेकी आदत पड़ गई, तो काम कैसे चलेगा ?'

दोनोंने पङ्ख फैलाए और एकही कमानसे एकसाथ छूटे दो तीरोंकी तरह साथ-साथ आकाश में उड़ चले। आज खगको न तो अपने पङ्ख ही भारी मालूम पड़ते थे और न आकाश-पथ ही सुनसान अथवा नीरस जान पड़ता था। आज उसके पङ्खोंमें बिजली की-सी फुर्ती और हल्कापन मालूम देता था और आकाश तो जैसे उसकी एकही उड़ानमें सिमट जाता था। आज उसकी आँखें इस महाशून्यमें भी मानो शत-सहस्र वसन्तका वैभव-विस्तार विलोक रही थीं। और मधु-मदिर-सुवासित वातास तो जैसे प्रकाशके साथ घुल-मिलकर एक महासागर बन गया हो, जिसपर आशा-आकांक्षाओं से पूरित खग-खगीके जीवन-पोत इठलाते हुए दौड़े जा रहे थे।

'तुम रोज इधर ही आते हो ?'—खगीने पूछा।

'इधर, किधर ? आज तो तुम्हारे साथ जैसे सारा आकाश ही मेरा चिर-परिचित क्रीड़ा-क्षेत्र बन गया है। पता नहीं, हम किधर चल रहे हैं।'

खगीने इधर-उधर और फिर नीचे नजर दौड़ाई और बाईं ओरको मुड़ते हुए बोली—'अच्छा, तब मेरे साथ इधर चलो। आज तुम्हें अपना बाग दिखलाती हूँ। वहाँ अकेले जाना मुझे नहीं सुहाता, इसीलिए मैंने प्रतिज्ञा की थी कि किसी दिन अपने प्रियतमके साथ ही वहाँ जाऊँगी।'

'ओहो !'—खगने खगीके साथही बाईं ओरको मुड़ते हुए कहा—'तो तुमने हमलोगोंके विहारके लिए आनन्द-उद्यान पहलेसेही ठीक कर रखा है ?'

'नहीं तो क्या; तुम्हारी तरह लुक-छिपकर मैं थोड़े ही कुछ करती हूँ !'

दोनों कनखियोंसे एक-दूसरेकी ओर देखकर मुस्कराये और फिर आगे बढ़ चले। कुछ आगे बढ़ने पर वृक्षोंके एक समूहके बीच में एक

जलाशय चमकता हुआ दिखाई दिया। उसकी ओर इशारा करते हुए खगी ने कहा—'यही है हमारा आनन्द-उद्यान।'—और दोनों उस ओर नीचे चल पड़े।

उद्यानमें पहुँचकर दोनोंने खूब सैर की, पेट-भर खाया और अघाकर मीठा-निर्मल जल पिया। उन्हें मालूम नहीं हुआ कि दिन कब बीत गया। साँझ होते ही दोनों फिर अपने घोंसले की ओर उड़ चले।

—३—

एक दिन खगने उठकर देखा, खगी अपने पङ्ख फैलाए बैठी है और उनके बीचमें से दो छोटी-छोटी आँखें टुकुर-टुकुर उसे निहार रहीं हैं। उसने पास जाकर आशा-भरी दृष्टिसे अपने आशा-कुसुमको देखा और मन ही मन आह्लादित हो बोला—'यह नयी पीढ़ी और नये युगका प्रतीक है! इसका पालन-पोषण बड़ी हिफाजतसे करना।'

खगीने गद्‌गद् कण्ठसे कहा—'यह तुम्हारा ही दूसरा रूप है। इसे सौ जानसे प्यार करूँगी। यही तो है हमारे भविष्यकी आशा।'

विस्मय-विमुग्ध दृष्टिसे अपने नौनिहालको देखते हुए खगने कहा—'तुम अभी इसके पास ही रहना। इसे छोड़कर अधिक दूर न जाना। तुम दोनोंके लिए चुग्गा मैं ही ले आया करूँगा।'

'अच्छा'—अपने लालको दुलराते हुए खगीने कहा—'तब तो कुछ दिन तुम्हें अकेले ही दानेकी खोजमें जाना पड़ेगा।'

'तुम इसकी तनिक भी चिन्ता न करो।'—कहकर खगने पङ्ख फैलाये और उड़ चला। आज कई दिनों बाद उसे फिर अकेले उड़नेका काम पड़ा था। पहले-पहल तो उसे कुछ अटपटापन ज़रूर महसूस हुआ; पर शीघ्रही पुत्र-स्नेह और कर्त्तव्यकी प्रेरणाने उसके हृदयमें अपार दृढ़ता भर दी और वह निर्बाध रूपसे उड़ चला। दूसरे दिनसे तो उसे यह अकेलापन बिल्कुलही महसूस नहीं हुआ।

एक दिन खग जानेके थोड़ी ही देर बाद बिना चुग्गेके लौट आया।

खगीको इसपर कुछ आश्चर्य हुआ और कुछ आशङ्का भी। खगके निकट आकर उसने देखा कि वह थर-थर काँप रहा है और उसकी आँखोंमें भय उमड़ रहा है। खगी अवाक् थी। उसकी कुछभी समझमें नहीं आ रहा था। दो-एक क्षण चुप रहकर उसने पूछा—'आखिर बात क्या है, कुछ मुँहसे भी तो कहो। क्या कोई अनिष्ट हुआ है?'

'अनिष्ट!'—खगने विस्फारित नेत्रोंसे खगीकी ओर देखकर कहा—'हाँ, अनिष्ट हुआ है, और साधारण नहीं महान्, भयङ्कर!'

एक सिहरन खगीको ऊपरसे नीचे तक कँपा गई। उनका बच्चा आँखें फाड़-फाड़कर कभी खग और कभी खगीकी ओर देख रहा था। खगीने खगके तनिक और पास आकर दबी हुई ज़बानसे पूछा—'पर कुछ कहो भी, आख़िर बात क्या है? मेरी तो कुछ समझमें ही नहीं आ रहा है।'

'वह जो तुम्हारा आनन्द-उद्यान था न, वह बिल्कुल तहस-नहस हो गया है...और...'

'तहस-नहस हो गया है? क्या कोई भूडोल या आँधी आई है?'

'नहीं, उसके पासके नगरपर आक्रमण हुआ है। सारा नगर श्मशान बन गया है। पग-पगपर मनुष्योंकी लाशें बिखरी पड़ी हैं!'

'आक्रमण! मनुष्योंकी लाशें!'—खगी भयसे काँप उठी। बोली—'लेकिन हिंस्र-जन्तु मनुष्योंको इतनी बड़ी संख्यामें तो कभी नहीं मारते। और फिर मनुष्योंको मारकर वे उनकी लाशें इधर-उधर क्यों बिखरायेंगे? वे तो उन्हें मारकर खा जाते हैं न?'

'तुम यह क्या पागलपनकी सी बातें करने लगीं? हिंस्र-जन्तुओंकी बात मैं करही कब रहा हूँ? मैं तो मनुष्योंकी बात कह रहा हूँ।'

'क्या मतलब तुम्हारा? तब क्या नगरपर मनुष्योंने आक्रमण किया है?'

'हाँ, और नहीं तो मैं कह क्या रहा हूँ?'

'तुम आज यह कैसी बातें कर रहे हो? मनुष्य मनुष्यपर आक्रमण

करेगा, उनकी लाशोंको गली-रास्तोंमें बिखरायेगा और अपनेही बनाये हुए अपनी ही सभ्यता तथा संस्कृतिके प्रतीक, नगर-उद्यानोंको ध्वस्त करेगा ! मुझे तो तुम्हारी बातपर विश्वास नहीं होता।'

'क्या प्रत्यक्षके लिए भी कोई प्रमाण देना होगा ? अगर विश्वास नहीं होता तो ख़ुद चलकर अपनी आँखोंसे देख न लो।'

'अच्छा चलो'—कहकर खगीने अपने बच्चेको एक बार नज़र भर कर देखा और दोनों उड़ चले।

—४—

दोनों अभी कुछही दूर गए होंगे कि एक भारी-भरकम चीज़ गुरु-गम्भीर घोष करती हुई उनके पाससे तेजीसे आगे निकल गई। दोनों विस्मित और भयभीत होकर उसे देखने लगे। न उसके पङ्ख थे और न कोई ऐसी चीज़ ही दिखाई दी, जिसके सहारे वह इतनी ऊँची और इतनी तेज़ीसे उड़ रही थी। उसके भीतरसे जैसा शब्द हो रहा था, वैसा भी उन्होंने कभी नहीं सुना था। अभी वे उसकी बनावट आदिपर विचार कर ही रहे थे कि उसके नीचेसे एक मोटी लम्बी-सी चीज़ निकली और एक अजीब-सा शब्द करती हुई चक्कर खाती नीचेकी ओर चल पड़ी।

कुछ ही क्षण बाद नीचे एक भयङ्कर विस्फोट हुआ, जिसके साथ ही कई भग्नावशिष्ट चीज़ें हवामें इधर-उधर उड़ीं और उनके फैलनेके साथही चीत्कार तथा कोलाहलसे वायु-मण्डल भर गया। खग और खगी अपने विस्मय और आशङ्काओंका पुञ्ज बनी उस भारी भरकम चीजको आगे बढ़ने देकर नीचेकी ओर चलपड़े, ताकि विस्फोटके परिणाम और दृश्यको अधिक निकटसे देख सकें। नीचे आनेपर उन्होंने देखा कि समूचा नगर आगकी लपटोंसे घिरा धाँय-धाँयकर जल रहा है और उसपर से दम घुटा देने वाला धुआँ उठ रहा है। धुआँ इतना घना और दुर्गन्धिमय था कि वे अधिक देरतक उसके आवरणमें न ठहर सके और हाँफ़ते-हाँफ़ते ऊपर उड़ कर आगे बढ़ चले। पर इस संक्षिप्त-सी यात्रामें भी नगरके ध्वंसावशिष्ट

भवनों और इधर-उधर बिखरी लाशोंकी उड़ती हुई-सी झाँकी उन्हें मिल गई थी। नागरिकोंके कोलाहल और नारी तथा शिशु-कण्ठोंका चीत्कार तो अभी तक सुनाई पड़ रहा था।

यह सब देखकर खगीकी जिह्वा जैसे एकदम जड़ हो गई थी। भयके कारण वह सिकुड़ी जा रही थी और अपने पङ्ख भी मुश्किलसे मार पा रही थी। खगने तिरछी दृष्टिसे उसे निहारा और आश्वस्त स्वरमें बोला—'घबराओ मत, पासही एक सरिता है। दो घाटियोंके बीचमें होने के कारण उसके किनारे अधिक सुरक्षित हैं। उसपर एक बड़ा सुन्दर पुल बना हुआ है। चलो, उसीकी छाँहमें बैठकर कुछ सुस्ता लेंगे और पानी भी पी लेंगे।'

खगीने अपने सूखे कण्ठसे बड़ी मुश्किलसे 'हाँ' कहा और सारा धैर्य एवं साहस बटोरकर खगके साथ-साथ उड़ने लगी। सामने ही कुछ दूरीपर दो पर्वत-श्रेणियोंके बीचमें हरे पेड़ोंकी क़तारोंसे सजे किनारोंवाली सरिता हरे बूटोंवाली झिलमिल रेशमी साड़ी-सी चमचमा रही थी। उसे देखकर खगी की जानमें जान आई। दोनों बड़ी उत्सुकतासे उसकी ओर बढ़ चले। ज़रा नीचे आनेपर खग आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगा। कभी वह उत्तर-की ओर जाता और कभी दक्षिणकी ओर। उसे असमंजसमें पड़ा देख खगीने कहा—'जहाँ चलना है, चलते क्यों नहीं। यहाँ ढूँढ़ क्या रहे हो? है तो यही वह तुम्हारी सरिता न?'

'हाँ, सरिता तो वही है। आसपासकी घाटियाँ भी वही हैं। पर पुल कहीं नज़र नहीं आ रहा है। पहले तो ऐसी भूल...।'

खगी चुप रही। दोनों कुछ और नीचे आए। अब खगको साफ़-साफ़ दिखाई पड़ा कि जहाँ पहले पुल था, वहाँ अब कुछ भी नहीं है। नदीके दोनों किनारोंपर उसके टूटे हुए छोर ज़रूर नज़र आ रहे हैं। दोनों ओर पैदल और घुड़सवार सेनाका पड़ाव है। तम्बू लगे हैं। बड़े-बड़े युद्ध-यन्त्र जहाँ-तहाँ रखे हैं। उनके आसपास कुछ लाशें बिखरी हैं,

कुछ घायल पड़े कराह रहे हैं और कुछकी मरहम-पट्टी की जा रही है। चारों ओर एक वीभत्स दृश्य उपस्थित है।

यह सब देखकर खगी भयसे काँपने लगी। खगने उसे अपने पङ्खोंका सहारा देते हुए कहा—'हाय, जान पड़ता है, यह स्थान भी सुरक्षित नहीं रहा। चलो, हम लोग उस सामनेवाली पहाड़ीकी टेकरीपर ही चलकर थोड़ा-सा सुस्ता लें।'

खगी कुछ न बोली और खगके साथही ऊपर उड़ चली। टेकरीके निकट पहुँचकर ज्योंही खगने अपनी आँखें ऊपर उठाईं, उसने देखा कि एक विशालकाय तोपका मुँह किसी मगरमच्छके जबड़ेकी तरह धीरे-धीरे उनकी ओर घूम रहा है। इस बार उसका साहस भी हवा हो गया और घबराकर वह खगीसे बोला—'बस, आगे न बढ़ना। चलो, सीधे नीड़पर ही लौट चलें। अब बाहर कहीं भी अपनी ख़ैर नहीं है। न मालूम इन कम्बख्त मनुष्योंको आज यह क्या सूझा है?'

खगीने डरके मारे आँख भी ऊपर नहीं उठाई और खगका वाक्य पूरा होनेसे पहले ही मुड़ पड़ी। दोनोंने नीड़पर पहुँचकर ही दम लिया।

—५—

कई दिनोंकी अकर्मण्यता एवं अपरिवर्तनसे उदास बैठे-बैठे खग और खगी दोनों ऊब गए थे। पर क्या करते और कहाँ जाते? आज पाँच दिनोंसे वे नीड़से बाहर नहीं निकले थे। खगीने रुआँसी आँखोंसे खगके मुरझाए चेहरेको देखते हुए कहा—'यों कबतक रहना होगा? आज पाँच दिनोंसे न मुँहमें एक बूँद पानी पड़ा है, न एक भी दाना! हम तो ख़ैर जैसे-तैसे सह लेंगे, पर इस बच्चेका क्या होगा? इसने तो कलसे गर्दन भी नहीं उठाई है। इसका दम तो होठोंपर आ लगा है।'

सजल आँखोंसे बच्चेके निर्जीव-से शरीरकी ओर देखते हुए खगने कहा—'मेरी भी कुछ समझमें नहीं आ रहा है, कैसे क्या होगा?'

'न हो, तो कहीं भाग चलें—किसी दूर देशको चले चलें।'

'हाँ',—एक फीकी हँसी हँसकर खगने कहा—'तुमभी कभी-कभी बिल्कुल नादानी करने लगती हो। तुमसे कहा नहीं कि जहाँ-जहाँतक मेरे ये पङ्ख मुझे ले जा सकते थे, वहाँ-वहाँ जाकर देख आया हूँ कि कहीं भी कोई स्थान मनुष्योंकी इस दानवी लीलासे अछूता नहीं बचा है। तुम्हीं बताओ, भागकर फिर कहाँ चला जाय ?'

खगी चुप हो रही। लगभग रोज़ ही वह खगसे कुछ ऐसी ही बात घुमा-फिराकर कहती और रोज़ ही उसे उससे कुछ ऐसा ही उत्तर मिल जाता। फिर दोनों चुप हो जाते। कभी दोनों बच्चेकी ओर, कभी एक-दूसरेकी ओर और कभी नीड़के द्वारसे बाहरकी ओर देखते। प्रातःकाल और सन्ध्या उनके लिए समान रूपसे चिन्ता और निराशा लिये आते और चले जाते थे। फिर दिनकी वही लम्बी उदासी और रातकी वही नीरवता!

इस तरह न मालूम कितने दिन बीत चले। एक दिन विस्फोटका वह स्वर अधिक निकट आ गया और मरणके त्योहारने उस जङ्गलको भी अपना लीला-क्षेत्र बना लिया, जहाँ शतायु वट-वृक्षपर खग और खगीका घोंसला था। आक्रमण और प्रत्याक्रमणने मानव-रक्तसे उस वृक्षको सींचा। कुछ काल बाद वहाँ लाल-पीली लपटें जाग उठीं और कुछ ही क्षणोंमें वह मङ्गलमय जङ्गल एक डरावना स्मशान बन गया। और फिर थोड़ी देर बाद धधकते हुए अङ्गारे ठण्डी राख बनकर धूलमें मिल गए।

न मालूम यह सब विगत-युगका उपसंहार था या आगत-युगकी सूचना; पर अब इसे देखनेको न तो वह खग-परिवार ही वहाँ था और न उनका वह घोंसला ही।

अच्छे दिन ?

—१—

घड़ीने टन्-टन् ११ बजाये। अभी तक रोहेम घर नहीं लौटा था। न मालूम आज उसे इतनी देर कहाँ हो गई ? सुबह वह कुछ खाकर भी तो नहीं गया। एडा जब उसके कमरेमें कॉफ़ीका प्याला लेकर गई, तो मालूम हुआ कि वह कभीका बाहर निकल चुका था। फिर दोपहरका खाना खाने भी तो वह घर नहीं आया। अब तो शामके खानेका वक़्त भी गुज़र चुका था। पहले तो उसने कभी ऐसा नहीं किया था।

उसकी बूढ़ी माँ एडोरीलीन और एडा (पत्नी) अधबुझी अँगीठीके पास बैठी शामसे ही उसका रास्ता देख रही थीं। रोहेमकी प्रतीक्षा और चिन्तामें उन्हें भी जैसे भूख नहीं लग रही थी। ज्यों-ज्यों रात बढ़ती जाती थी, उसकी चिन्ता भी बढ़ रही थी। 'ढिब्ब' की धीमी रोशनी भी उनके चेहरोंकी मुर्दनी और आकुलताको स्पष्ट बता रही थी।

रोहेमका ६ वर्षका लड़का पीटर थोड़ी-सी कॉफ़ी पीकर ही सोगया था। उसे पूरी आशा थी कि आज रोहेम उसके लिए बाज़ार से छोटी-सी बंदूक और टैंक ज़रूर लावेगा। पर नींदके आगे वह अपनी इन प्रिय वस्तुओंकी प्रतीक्षा अधिक देर न कर सका।

सहसा एक लॉरी आकर रोहेमके मकानके आगे रुकी और दूसरे ही क्षण फ़ौजी बूटोंको तेज़ीसे खटाखट करते हुए रोहेमने दरवाज़ा खोल-कर घरमें प्रवेश किया। एडा अपनी जाँघपर से पीटरका सिर उठाकर नीचे रखते हुए बोली—'आज इतनी देर कहाँ लगाई ? हम लोगोंकी नहीं तो अपने पेटकी तो फ़िक्र करनी चाहिए थी।'

'ईश्वरका शुक्रिया अदाकर बेटी कि यह अब भी आ तो गया।' एडोरीलीनने निराशा और क्षोभमिली मुस्कराहटके साथ कहा।

न-मालूम क्यों, आज रोहेम कुछ बोला नहीं। वह इतना हँसमुख और मसखरे स्वभावका था कि घरमें पाँव रखते ही जैसे हँसीका फुहारा छोड़ देता था। रोहेम आते ही पीटरको अपने सिर या कन्धेपर बिठा लेता और एडा तथा एडोरीलीन जबतक मेज़पर खानेकी चीज़ें सजातीं, वह बरामदेमें पीटरको लिये नाचा-गाया करता। घरसे कई क़दमोंकी दूरी पर से ही उसकी सीटी सुनाई देने लगती थी और पीटर दौड़कर दरवाज़ेपर पहुँच जाता था। पर आज यह सब कुछ भी नहीं हुआ। एडा और एडोरीलीन रोहेमके इस आकस्मिक परिवर्तनका कारण नहीं समझ सकीं।

रोहेमने अपना ओवरकोट उतारा और खूँटीपर टाँगनेके बजाय चारपाईपर ही डाल दिया। सिरसे टोपी भी उतारकर उसने उसीपर पटक दी और दोनों हथेलियोंके बीचमें सिर रखकर ऐसे बैठ गया, जैसे कुछ गंभीर बात सोच रहा हो। एडोरीलीन और एडाको जब खानेकी मेज़ पर बैठे-बैठे कुछ मिनट हो गये, तब भी रोहेमको वहाँ न पाकर उन्हें कुछ चिन्ता-सी हुई। एडोरीलीनने एडाको इशारा किया कि वह जाकर रोहेमको बुला लावे।

रोहेमकी क़मीजका एक पल्ला हाथमें लिये उसे खींचते हुए एडा रोहेमको खानेकी मेज़तक ले गई और काँपती हुई आवाज़में अपनी सास से बोली—'यह खाना खानेको मना करते हैं।'

'मना करता है?' एडोरीलीनने आँखें फाड़कर रोहेमकी ओर देखते हुए कहा—'मगर क्यों? कहीं खा आया है क्या?'

'कुछ तो खा लिया है, माँ'—कुर्सीपर पूरे वज़नके साथ बैठते हुए रोहेमने टूटती हुई आवाज़ में कहा—'और कुछ तबियत ठीक नहीं है।'

'तबियत ठीक नहीं है? क्यों क्या हुआ?'

'हुआ तो अभी कुछ नहीं, पर मालूम होता है शीघ्र ही होनेवाला है। नाशके बादल सिरपर मँडरा रहे हैं।'

'यह तुम क्या कह रहे हो ?

'ठीक ही कह रहा हूँ' रोहेमने भरी हुई आँखोंसे अपनी वृद्धा माँ और चिन्तासे पीली पड़ी हुई पत्नीके चेहरोंको देखते हुए कहा—'मुझे अपनी नहीं, तुम्हारी फ़िक्र है। मेरे पीछे न जाने तुम्हारा क्या होगा !'

एडाकी आँखें बरस पड़ीं। एडोरीलीन अपनी कुर्सी छोड़कर रोहेम के पास आ गई और अपने रूमालसे उसके आँसू पोंछते हुए बोली—'मेरे अच्छे बच्चे, आज तू यह क्या बहकी-बहकी बातें कर रहा है ? साफ़-साफ़ क्यों नहीं कहता कि बात क्या है ?'

'रूस और जर्मनीमें समझौता हो गया है और हमें.........'

'क्या कहा रूस और जर्मनीमें ? बोल्शेविक रूस और नाज़ी जर्मनीमें समझौता ?—ह—ह—ह—ह—ऽ—ऽ—ऽ—। अरे, किस बेवकूफ़ने तुझे यह कहा है ? और तूने इसपर विश्वास भी कर लिया ?'

'यह सच है।'

'सच है ? किसीने तुझे अच्छा बेवकूफ बनाया आज। अरे, कभी साँप और नेवलेमें भी समझौता हुआ है ?'

'अबतक तो मुझे किसीने बेवकूफ़ नहीं बनाया माँ, पर तुम जरूर बना रही हो।'

'अच्छी बात है, कल सुबह जाकर डॉ० स्मिड्टसे पूछूँगी। उनके यहाँ तो रोज बर्लिनका अखबार आता है न ? माना कि हिटलरकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है, लेकिन इतना बौड़म तो वह नहीं कि अपनी कजा खुद बुलावे।'

'तुम न मानो। रूस जर्मनीकी मदद करेगा और जर्मनी...पोलैंड पर हमला ! हमें कल शामको किसी 'अज्ञात स्थान' पर जानेका हुक्म हुआ है।'

इस बार एडोरीलीन कुछ न बोली। उसके काँपते हुए ओठोंसे सिर्फ इतना ही निकला—'क...ल...शा...म...को...अ!'

—२—

शेमिट्ज नगरमें आज सूर्योदय या प्रातःकाल जैसे हुआ ही न हो और सब लोग रातकी तरह सो रहे हों ऐसी निस्तब्धता थी। जब-तब श्मशानकी मनहूस नीरवताका स्मरण हो आता था। सड़कों और रास्तों का ट्रैफिक पिछली शामसे ही बन्द था। बिना एक भी मृत्यु हुए जैसे सब घरोंमें मातम मनाया जा रहा था! रोते-बिलखते अबोध बच्चों और माँ, बहन तथा पत्नियोंको छोड़कर आज जर्मनीके 'वीर' सैनिक पोलैंडपर 'विजय' प्राप्त करने जा रहे थे। जिन्होंने कभी चींटीको भी नहीं सताया, वे आज लाखों निर्दोष स्त्री, पुरुषों और बच्चोंके खूनसे अपने हाथ रँगने जा रहे थे। अधिकारका विश्वास और विजयका मोह जैसे मानवतापर हावी हो गया हो। जीवन और जागृतिके ये सन्देश-वाहक आज मृत्यु और अन्धकारको वरने जा रहे थे। न-मालूम आज इनकी विवेक-बुद्धि कहाँ गुम हो गई थी?

सूर्य अस्ताचलकी ओर जा रहा था। अब इधर-उधर कुछ चहल-पहल नजर आने लगी थी। सैनिकोंके जानेका समय आ गया था। फौजी लारियाँ इधरसे उधर चक्कर काट रही थीं। रोहेम अपनी माँ और पत्नीसे बिदा ले रहा था। पीटर कॉफीका एक टंबलर लाया, जिसे रोहेम गट-गट कर गलेसे नीचे उतार गया और टंबलर पीटरके हाथोंमें देते हुए बोला—'पीटर, अपने बापको भूलोगे तो नहीं? अब शायद तुम्हारे हाथसे कॉफी पीनेका दूसरा मौका न मिले!'

रोते-रोते एडाकी हिचकी बँध गई थी। अब वह और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। रोहेमने उसके कंधेपर हाथ रखते हुए कहा—'कायर न बनो एडा। मैं जानता हूँ कि मैं कोई बहुत अच्छा काम करने नहीं जा रहा, पर

यह इच्छा नहीं—मजबूरी है। मैं पेटके लिए नहीं, प्राणोंके लिए जा रहा हूँ। डैनजिग या कॉरीडॉर जर्मनीको मिल भी गये तो क्या, न-मालूम मुझ-जैसे कितने प्राणी उनका मूल्य चुकानेमें बलिके बकरे बनेंगे। न-मालूम कितनी युवतियाँ विधवा होंगी और कितनी माताएँ पुत्र-विहीन।' कहते-कहते रोहेम आवेशमें आ गया था। उसके नथने फूल रहे थे।

'तो फिर तुम जाते क्यों हो? और सैनिक क्या नहीं हैं? ईश्वरके लिए तुम न जाओ।'

'लेकिन एडा, जाकर, लड़कर, मरनेमें कुछ दिन लग ही जायँगे, तबतक तो मैं जीवित कह और कहवा सकूँगा। पर न जानेका मतलब तो यह है कि बिना लड़े ही मुझे अभी एकाध घन्टेमें ही गोलीका शिकार होना पड़ेगा और मेरी लाश इसी घरमें तुम लोगोंकी आँखोंके सामने सड़ती नजर आवेगी, या फिर जिन्दगीका एक-एक पल मुझे अपमान, जिल्लत और अकथनीय यंत्रणाओंमें बिताना पड़ेगा। तुम्हें हिटलरके कानून-कायदे नहीं मालूम?'

एडा फिर फफक-फफककर रोने लगी। एडोरीलीनके तो होश-हवास ही गुम थे। पीटर कॉफीका खाली टंबलर हाथमें लिये सजल नेत्रों से कभी अपनी माँ और कभी पिताको देख लेता था। और कुछ उसकी समझमें ही नहीं आ रहा था।

रोहेमके मस्तिष्कमें एक अजीब-सा तूफान उठ रहा था। कुछ समझमें नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? पर उसका कर्त्तव्य तो पहले ही निश्चित किया जा चुका था। अचानक घरके सामने एक फौजी लॉरी आकर रुकी और दो स्टॉर्म-ट्रूपर्सने भीतर प्रवेश किया। रोहेम तो तैयार था ही। उसके चेहरेपर उदासीकी जगह अब फीकी मुस्कराहट दौड़ गई थी। न-मालूम आदमी अपने आपको यों किसलिए धोखा देता है? अपनी पत्नी, माँ या लड़केकी ओर देखे बिना ही रोहेम दोनों आगन्तुकों

के साथ घरसे बाहर निकल आया। लॉरी उसे लेकर धूल उड़ाती हुई आगे बढ़ गई।

आज शेर्मिट्ज़से सैनिकोंको लेकर ६ स्पेशल ट्रेनें प्रागके लिए रवाना होनेवाली थीं। सब सैनिक जलूस बनाकर मार्च करते हुए स्टेशन पर जानेको थे और नागरिकोंको आज्ञा हुई थी कि वे उन्हें हर्ष-ध्वनिसे बिदा करने और विजयकी प्रार्थना करनेको अधिकाधिक संख्यामें उपस्थित हों। केवल बीमार, अंधे या अपाहिज ही इस कर्तव्य-पालनसे मुक्त थे। शेष लोगोंमेंसे न आनेवालों पर फी आदमी ७ मार्क जुर्माना किये जाने का एलान हो चुका था। लोगोंका पेट ही मुश्किल से भरता था। ७ मार्क जुर्माना देना भला किसके बसकी बात थी! पीटरको अपनी उँगली थमा-कर एडोरीलोन भी सैनिकोंको बिदा देनेके लिए चल पड़ी। उन दोनोंके पीछे-पीछे सिसकियाँ भरती हुई एडा पागलोंकी तरह लड़खड़ाती हुई चली जा रही थी।

सड़कके दोनों ओर स्त्रियों, बच्चों और बूढ़ोंकी अपार भीड़ थी। बीचमें सैनिक चार-चारकी कतार बनाये नई वर्दियों और साज-सामान से लैस होकर अपने बूटोंकी नालोंसे सड़ककी छाती कँपाते हुए मार्च कर रहे थे। हाथोंमें रूमाल हिलाते हुए बूढ़ों, बूढ़ियों, युवतियों और बच्चोंकी हर्ष-ध्वनि से आकाश गूँज रहा था। 'हेल हिटलर' के नारे कानों के पर्दे फाड़े डाल रहे थे। बैंडका मृत्यु-संगीत इस हर्ष-ध्वनि और सैनिकोंके बूटोंके शब्दसे मिलकर एक ऐसा भयानक शोर पैदा कर रहा था कि न-मालूम कितनोंके दिल बैठे जा रहे थे। सैनिकोंका वह दरिया जैसे जीवनके अंतिम उफानके साथ डाँडें मारता हुआ बहता जा रहा था। उसे बिदा करनेकी एकत्र हुई यह भीड़ हर्षसे पागल हो रही थी या विषाद से घुल रही थी, इसे समझनेवाले वहाँ कितने लोग थे? वहाँ जो कुछ था, वह था आतंक।

एडाकी हिचकी अब रुक गई थी। उसकी आँखोंका पानी भी

शायद सूख गया था। वह बड़ी खोजपूर्ण दृष्टिसे पाससे गुजरनेवाले हरएक सैनिकको गौरसे देख रही थी। सहसा उसकी नजर रोहेमपर पड़ी। अपने साथियोंके कदम-से-कदम मिलाये वह पत्थरकी मूर्तिकी तरह अकड़े हुए आगे बढ़ रहा था। एडा आनन्दसे चिल्ला उठी—'रोहेम, मेरे प्यारे रोहेम!' और ज्यों ही रोहेम उसके पाससे गुजरने लगा, उसने अपने हाथका रूमाल उसके मुँह पर फेंक दिया और पागलोंकी तरह चिल्लाकर बोली—'तुम कब आओगे? जल्दी ही न? हाँ, जल्दी आना, वर्ना मैं तो रो-रोकर मर जाऊँगी!'

रोहेम कुछ नहीं बोला ज्योंका त्यों मूर्तिवत् चलता रहा। इस वक्त वह ड्यूटीपर था। रुकने, एडासे बात करने या उसके प्रश्नोंका उत्तर देने का उसे समय या सुपास ही कहाँ था? पर कनखियोंसे उसने एडाकी तरफ देखा जरूर था। फौजका अनुशासन जो था। अस्ताचलगामी सूर्यकी किसी किरणने उसकी आँखमें उमड़े हुए पानीको भी शायद चमका दिया था। एडाने यह देखा था। रोहेमके ओंठ फड़के थे, यह भी उसने देखा था। उसके गलेसे जैसे खूनका एक घूँट नीचे उतरा हो, यह भी उसने देखा था। उसके कन्धेपर रक्खी हुई सङ्गीन लगी राइफल कुछ हिली थी—जैसे उसका हाथ कुछ काँपा हो—यह भी एडाने देखा था। इन सबके आधारपर वह उसके शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित शरीर-रूपी पिंजड़ेमें तिलमिलाते हुए उसके दिलकी अवस्थाकी भी कुछ कल्पना कर सकी थी।

उसकी तन्द्रा उस समय टूटी, जब उसने देखा कि पीटर भीड़को रोकनेके लिए लगे तारोंके बीचमें से निकलकर रोहेमके पास पहुँच गया है और रोहेमकी कमीजका पल्ला पकड़नेसे पहले ही किसीने एक झटके के साथ उसे पीछे खींच लिया और पूरे जोर के साथ भीड़की ओर ढकेल दिया। पीटरने एक चीख मारी और औंधे मुँह सड़कपर गिर पड़ा। कुछ क्षणों में भीड़में से रास्ता बनाकर एडा जब उसके पास पहुँची, तो उसने देखा कि उसके मुँहसे खून गिर रहा है और न-मालूम कितने लोग दाँत

पीसते हुए उसकी ओर देख रहे हैं। एडा जोरसे रो पड़ी और पीटरको छातीसे लगाकर भीड़में से बाहर निकल आई। एडोरीलीन आँसू पोंछते हुए उसके पीछे-पीछे चल रही थी।

बाहर आकर वह फूट-फूटकर रोने लगी। उसके मुँहसे अचानक निकला—"सत्यानाश हो इन राक्षसोंका और इनके आका उस कम्बख्त हिटलरका!" उसने अपने रूमालसे पीटरके मुँहका खून पोंछा और घरकी तरफ चलदी। अभी वे लोग २०-३० कदम मुश्किलसे चले होंगे कि उसके कानोंमें आवाज आई—"फ्राउ एडा, हमें आपसे कुछ कहना है।"

एडाने पीछे मुड़कर देखा। चेहरेपर क्रूर मुस्कराहट लिये यमदूतों की तरह लम्बे-चौड़े गेस्टेपोके दो जवान खड़े थे। सहसा वह एड़ीसे चोटी तक काँप गई। सजल नेत्रों और फड़कते ओठोंसे काँपते हुए स्वरमें उसने कहा—"कहिए, क्या बात है?"

"हर ब्राजनने हमें आपकी गिरफ्तारीकी आज्ञा दी है। आपको इसी समय चलना होगा।"

एडा अभी कुछ जवाब भी नहीं दे पाई थी कि एक मोटर आकर रुकी और दोनों आदमियों सहित एडाको लेकर चल पड़ी। एडोरीलीन पीटर को अपने कन्धेपर लिये हुए आँखें फाड़कर-देखती ही रह गई। उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला।

—३—

पीप्लुस-कोर्टके पहरेदारसे लेकर बड़े-से-बड़े जज तकके पास एडोरीलीन सिर पटक आई थी, पर उसे एडाके बारेमें किसीने कुछ न बताया। गेस्टेपोका द्वार उसके लिए बन्द हो चुका था। नजरबन्द-कैम्पोंमें रक्खे गए लोगोंकी सूची उसे इसलिए नहीं बताई गई कि उसे ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं था। वकील इस मामलेमें मुँह खोलने तकका साहस नहीं करते थे। हताश होकर एडोरीलीन चुप हो बैठी थी।

रोहेम और एडाके बिना पीटरको घर अच्छा नहीं लगता था, पर अब तो एडोरीलीनके सिवा उसकी देख-रेख करनेवाला और कोई नहीं था। अपना खेल भी वह भूल गया था। मुँहका घाव तो उसका भर गया था, लेकिन दिन-ब-दिन उसका स्वास्थ्य गिरता जा रहा था। सिपाहियों को देखते ही उसे डर-सा लगने लगता था। उसे अपने जीवनमें पहले-पहल सिपाहियोंको देखकर पूछा गया वह प्रश्न सहसा आज याद आ गया "यह कौन हैं माँ ?" और "यह सैनिक हैं बेटा" एडाने कहा था।

"लेकिन क्या ये आदमी नहीं हैं ?" उसने पूछा था।

"कभी ये भी आदमी थे, पर अब तो सैनिक हैं, जिन्हें मानवतासे कोई सरोकार नहीं। लड़ना, मारना और मरना ही इनका पेशा है।"

"पर बिना कारण या कसूरके यह किसीको क्यों मारते हैं, माँ ?" उसने पूछा था।

"इसीलिए कि इनमें पाशविकता और दानवता अधिक बढ़ गई है।" एडाने कहा था।

"पर मनुष्य मनुष्यके खूनका प्यासा क्यों होता है, माँ ? वह आपसमें लड़ता और मारता-मरता क्यों है ?"

"अभी तू इन बातोंको नहीं समझ पायेगा, मेरे भोले बच्चे !" एडाने यह कहकर उसकी सारी उत्सुकताको शान्त कर दिया था।

पर वास्तवमें उसकी वह उत्सुकता शान्त तो हुई नहीं थीं, दब जरूर गई थी। तबसे बराबर वह उसके मस्तिष्कमें उथल-पुथल मचाए थी। आज जब एडोरीलीन कॉफीके साथ उसे ब्लैकब्रेड खिला रही थी, तो वह गुमसुम बैठा मन-ही-मन यही प्रश्न फिर दोहरा रहा था। उसका कन्धा पकड़कर हिलाते हुए एडोरीलीनने कहा—"पिटी मास्टर, आज तुम गुमसुम क्यों हो ? ऐसा क्या सोच रहे हो ?"

"कुछ नहीं दादी ! यही सोच रहा था कि आदमी आखिर लड़ता क्यों है ?"

"पर तुझे इसकी कैसे फिक्र हुई रे ?"

"वैसे ही। उस दिन तुम कह रही थीं न, कि पिताजी लड़ने गए हैं। वे किससे लड़ेंगे दादी ?"

"अपने मुल्कके दुश्मनोंसे।"

"दुश्मन हमारे मुल्कके कौन हैं ?"

"पोलैण्डके लोग।"

"लेकिन उन्होंने हमारा क्या बिगाड़ा है ?"

"वे हमारी जमीनका कुछ हिस्सा नहीं लौटा रहे।"

"लेकिन जमीन भी किसीकी होती है क्या ?"

"हाँ, जहाँ हम रहते हैं, वह हमारी जमीन है। मैं भूल गई, हमारी नहीं हिटलरकी।"

"लेकिन इसके लिए लड़नेकी क्या ज़रूरत ?"

"इसका जवाब तो हिटलर ही दे सकता है। पर तू अभीसे क्यों इन बातोंकी उधेड़-बुनमें लगा है ? ज़रा बड़ा हो ले, फिर अपने-आप सब कुछ जान लेगा।"

दरवाजेपर किसीने धीरेसे दस्तक दी। एडोरीलीनने जाकर जब किवाड़ खोले तो देखा कि सामने ही भयङ्कर स्वरूप बनाए एडा खड़ी है। मुँह उसका कुम्हलाकर काला हो गया है। गालोंपर मैल जम गया है, जिन पर आँसुओंकी धारासे धुला हुआ हिस्सा साफ नजर आता है। ओंठ सूख गए हैं और उनपर पपड़ी जम गई है। कपड़ोंके मैलका तो कहना ही क्या। बीसियों जगहसे वे फट गए हैं। बालोंमें मिट्टी पड़ी है और वे आपसमें बुरी तरह उलझ गए हैं। पाँवोंपर धूल जमी है। हाथोंकी हथेलियाँ मैलसे काली पड़ रही हैं। जहाँ-तहाँ शरीर और कपड़ोंपर खूनके दाग भी स्पष्ट नजर आते हैं। एडोरीलीनने नीचेसे ऊपर तक कुछ आशङ्काके साथ एडाको देखा। सहसा वह काँप उठी। एडाको जोरसे सीनेसे लगाते हुए उसने कहा—"मेरी प्यारी बच्ची, तेरा यह क्या हाल है ?"

"हाल पूछती हो माँ, आज अपनी आँखोंसे साक्षात् नरक देखकर आ रही हूँ। जरा चारपाईपर कम्बल बिछा दो, तो लेट जाऊँ। खड़ा नहीं हुआ जाता। अङ्ग-अङ्ग टूट रहा है। मेरा पीटर........वह अच्छा तो है ?"

एडोरीलीन उसे कन्धेके सहारे भीतर ले गई। चारपाईपर कम्बल डालकर उसे लिटा दिया। एडाका शरीर ज्वरसे जल रहा था। उसकी आँखोंमें आज सिर्फ पानी ही नहीं था, आग भी थी। लेटनेपर उसकी फ्राकका सीनेके पासका हिस्सा फटा होनेके कारण जरा हट गया। एडोरीलीनकी नजर वहाँ पड़ी हुई नीलपर पड़ी। उसने हाथकी उँगलियोंसे देखा—दोनों स्तनोंके बीचका कुछ हिस्सा सूजा था और वहाँ थोड़ा-सा ख़ून भी जम गया मालूम होता था। उसने रोनी-सी आवाज़में पूछा—"यह क्या है एडा ? यहाँ यह ख़ून कैसा ?"

एडा कोई उत्तर नहीं दे सकी। दोनों हाथोंकी हथेलियोंसे आँखें मूँदकर वह फूट-फूटकर रोने लगी। उसका बिसूरना देखकर एडोरीलीन का रहा-सहा धैर्य भी जाता रहा। उसने इस घावका कारण जाननेकी बहुत कोशिश की, पर एडा उसे कुछ भी न बतला सकी।

एडाके पास पीटरको छोड़कर एडोरीलीन एक टंबलर हाथमें लेकर राशन-डिपोकी तरफ चल पड़ी। राशन-कार्ड इन्चार्जके आगे करते हुए एडोरीलीनने बड़े विनीत स्वरमें कहा—"आज मैं थोड़ा-सा दूध भी लूँगी। मेरी पुत्र-वधू बीमार है।"

इन्चार्जने राशन-कार्डको ग़ौरसे देखते हुए कहा—"यह नामुमकिन है। दूध तुमको नहीं मिल सकता। वह कुछ ख़ास अफ़सरोंके घरोंके लिए ही देनेका हुक्म है।"

"लेकिन मेरी पुत्र-वधू जो बीमार है। वह दूध और चीनीके बिना कॉफ़ी कैसे पी सकेगी ?"

"इसका जवाबदेह मैं नहीं हूँ"—कहते हुए इन्चार्जने उसका राशन-कार्ड लौटा दिया।

एक मिनट एडोरीलीन चुप रही। फिर नम्रता प्रदर्शित करते हुए धीरेसे बोली—"अच्छा, अगर वैसे नहीं दे सकते, तो यह ब्लैक-ब्रेड ले लो और इसके बदलेमें मुझे थोड़ा-सा दूध दे दो। तुम्हारी बड़ी दया होगी।"

"फ्राउ एडोरीलीन, आप एक सरकारी अफ़सरको नियम-भङ्ग करने और रिश्वत लेनेके लिए फुसला रही हैं। आपको मालूम है, इसका फल क्या होगा?" कठोरतापूर्वक इन्चार्जने कहा।

एडोरीलीन नात्सी-सलाम देकर अपना-सा मुँह लिये वहाँसे चल दी। मन-ही-मन वह कहती जा रही थी—पहले मक्खन बन्द हुआ, फिर चीनी, अब दूध भी बन्द हो गया। कल शायद ब्लैक-ब्रेड और कॉफ़ीका यह पानी मिलना भी बन्द हो जाय। लोग फिर क्या हवा या पत्थर खाकर जिन्दा रहेंगे? क्या इस तरह भूखों मारकर ही हिटलर हमें सुख और समृद्धिके मार्गपर ले जा रहा है? सत्यानाश हो इस मानव-रूपधारी शैतानका!

—४—

एडाकी स्थिति सुधरनेके बजाय और बिगड़ती ही गई। उसके पेटमें गाँठें पड़ गई थीं। सीनेमें आठों पहर दर्द रहता था। पेशाबके साथ ख़ून जाना जारी था। हरारत उसे प्रायः हर वक़्त बनी ही रहती थी। एडोरीलीनने पहले तो दो-चार घरेलू दवाइयोंका प्रयोग किया। पर जब उनसे कोई लाभ नहीं हुआ, तो एडाको शेमिट्ज़के केन्द्रीय अस्पतालमें ले जाना तय किया।

दूसरे दिन सुबह उठकर एडोरीलीनने एडाके कपड़े बदले और उसे अपने कन्धेके सहारे अस्पताल लेकर चली। अस्पताल यद्यपि उनके घरसे बहुत दूर नहीं था, पर एडा वहाँ पहुँचते-पहुँचते भी काफ़ी थक गई और उसकी साँस फूल गई। अस्पतालकी सीढ़ियोंपर कुछ सुस्ताकर वह डॉक्टरके

पास पहुँची और कहा कि एडाको अमुक-अमुक तकलीफ़ है, लिहाज़ा उसे इलाजके लिए वहाँ भर्ती कर लिया जाय।

डॉक्टरने एक उपेक्षापूर्ण दृष्टि एडाके चेहरेकी तरफ़ डाली और नाक-भौं सिकोड़कर एडोरीलीनसे कहा—"अस्पतालमें युद्धके घायलोंके लिए भी जगह पूरी नहीं पड़ रही है। फिर बाहरके लोगोंको हम कैसे ले सकते हैं? हमें किसी भी स्थानीय मरीज़को न लेनेका सख्त हुक्म है।"

पास खड़े हुए एक दूसरे डॉक्टरने कहा—"इसे ऐसी तकलीफ़ ही क्या है? मालूम होता है युद्ध सेवासे जी चुरानेको यह सब ढोंग किया गया है। जवान औरत है, शर्म नहीं आती इसे बीमार बनते?"

एडा और एडोरीलीनकी इस समय जो दशा थी उसे दूसरा कौन समझ सकता था?

पहले डॉक्टरने कहा—"कुछ दवा चाहो तो मैं दे दूँ।"

एडोरीलीनके उत्तर देनेसे पहले एडा बोल उठी—"नहीं, धन्यवाद! ढोंग और बहानेमें दवाकी क्या ज़रूरत?" एडोरीलीनका कन्धा हाथसे दबाते हुए उसने कहा—"जल्दी लौट चलो; मुझसे अधिक देर खड़ा नहीं हुआ जायगा।"

उसे लेकर एडोरीलीन लौट पड़ी। घर आते-आते उसे ध्यान आया कि डॉ० स्मिड्टके यहाँ क्यों न होते चलें। डॉक्टर स्मिड्टका घर रास्तेमें ही पड़ता था। वे पिछले महायुद्धके एक पीड़ित थे जो अपने जीवनके शेष दिन शेमिट्ज़के क़स्बेमें बिता रहे थे। एक विधवा लड़कीके अलावा उनके परिवारमें और कोई नहीं था। वह एक अस्पतालमें नर्स थी। उसीके वेतनपर दोनोंका गुज़र होता था। डॉ० स्मिड्टका सब कुछ नात्सियोंने ज़ब्त कर लिया था। वे अब अपनी लड़कीको मिले क्वार्टरमें ही रहते थे। सुबह अख़बार पढ़ना और शामको रेडियो सुनना ही उनके मुख्य काम थे। इन दोनोंके द्वारा आनेवाली ख़बरोंको वे शेमिट्ज़के आधे-से-अधिक लोगों

को सुनाते थे। सुबह-शाम उनके यहाँ ख़बरोंके शौक़ीनोंका ताँता-सा बँध जाता था।

एडा और एडोरीलीनको देखते.ही डॉ० स्मिड्ट आरामकुर्सीसे उठ खड़े हुए और हाथका अख़बार मेज़पर रख पास पड़ी कुर्सीकी ओर इशारा करते हुए मुस्कराकर बोले—"आज तो बड़े दिनों बाद दीखीं फ्राउ एडो-रीलीन! मैं तो समझा था कि तुम भी पोलैण्ड जीतनेके लिए गई हो।"

"यों क्यों नहीं कहते डॉक्टर कि हिटलरका मर्सिया पढ़ने गई थी।" एडोरीलीनने क्रूर हास्यके साथ कहा।

"हाँ, हाँ, वह वक्त भी अब दूर नहीं है। अच्छा, रोहेमका कुछ समाचार मिला?"

"अभी तक तो कुछ नहीं। क्यों, आपने कुछ सुना?"

धीमे स्वरसे डॉक्टर स्मिड्टने कहा—"वह पिछले महीनेकी १३ तारीख़को केट्टोविज़के पास लड़ता हुआ मारा गया। उसीके साथ लड़ने-वाले एक सैनिकने, जो घायल होकर पिछले हफ़्ते शेमिट्ज़के अस्पतालमें आया है, मेरी पुत्री मेरियाको यह बतलाया है। सरकार तो इन ख़बरोंको लोगोंसे छिपा रही है। न-मालूम कितने लोगोंका वहाँ रोज़ ख़ून-ख़राबा हो रहा है।"

"लेकिन मुझे तो उसकी १८ तारीख़की चिट्ठी मिली है, जिसमें लिखा है कि वह मज़ेमें है।"

"पर इस बातका क्या सबूत कि वह चिट्ठी फ़र्ज़ी नहीं है? ऐसी चिट्ठियाँ और कई परिवारोंके पास भी आई हैं।"

"डॉक्टर, अब हम क्या करें? रोहेम, मेरा रोहेम, अब......"

"जो कुछ होना था वह तो हो गया, फ्राउ एडोरीलीन। अब पछतानेसे क्या?"

"हम अब क्या करेंगे, डॉक्टर?"

"ज़रा धैर्य रक्खो। इस बार सरकारने मरे हुए सैनिकोंके आश्रितोंकी

सहायता करनेका नियम भी हटा दिया है। उसके पास धरा ही क्या है ?"

"फिर हमारा क्या होगा ? एडा बीमार है। मेरे हाथ-पाँव चल नहीं रहे। पीटर तो अभी बिल्कुल नासमझ बच्चा है।"

"घबरानेसे कुछ नहीं होगा, फ्राउ एडोरीलीन। पर इतना विश्वास रक्खो कि हमारे अच्छे दिन बहुत जल्द आनेवाले हैं। हम चाहें तो उन्हें और भी जल्द ला सकते हैं।"

"हम ला सकते हैं ? तुम आज कह क्या रहे हो, डॉक्टर।"

"ठीक ही कह रहा हूँ। ज़रा धीरे बोलो, फ्राउ एडोरीलीन, बात करते समय यह न भूलो कि जर्मनीकी दीवारों और पेड़ोंके भी कान हैं।" ज़रा और धीमी आवाज़में डॉ० स्मिड्टने कहा—"तुम्हें हमारी मदद करनी होगी। फिर देखना, जर्मनीकी पददलित जनता हिटलरके फ़ौलादी पंजेसे कितनी जल्दी छूटती है ?"

"वह कैसे ?"—एडोरीलीनने डॉ० स्मिड्टके कानमें कहा।

"मेरियाकी तरह तुम और एडा भी नर्स हो जाओ। तुम्हें रखवानेका ज़िम्मा मेरा है। वहाँ युद्धके घायल सैनिकोंको, जो मैं बताऊँ, वह सब कहना होगा। अस्पतालके समयके अलावा असंतुष्ट और पीड़ित जनताको क्रांतिके लिए तैयार करनेका कुछ काम और करना होगा। रास्ता तुम्हें मेरिया बता देगी। इस समय वह शेमिट्ज म्यूनीशन वर्क्सके मज़दूरोंको कलसे काम छोड़नेके लिए राज़ी करने गई है। पूरे एक हफ़्तेकी उसकी कोशिश है। शायद आज सफलता प्राप्त कर लौटे।"

एडोरीलीनने एक प्रश्न-भरी दृष्टि एडाकी ओर डाली, जो रोना-कराहना भूलकर बड़े ध्यानसे डॉक्टर स्मिड्टकी बातें सुन रही थी। बड़ी तत्परतासे उसने कहा--हमें मंजूर है, डॉक्टर। आजसे आप हमपर जो ज़िम्मेदारी डालेंगे, उसे हम अधिक-से-अधिक मुस्तैदीसे पूरा करेंगी। एक रोहेम गया तो गया, हम लाखोंकी जान तो बचायेंगी। ब्रिटेन और फ्रांस

से पहले हिटलरका खात्मा हम करेंगे, क्योंकि उनसे बड़ा काल वह हमारे लिए है।'

"तब तो मुझे विश्वास हो गया कि जर्मनीके अच्छे दिन अब आ गए।"

"तो फिर हम कब आवें ?"—एडाने पूछा।

"आजकी डाकसे मैं आप दोनोंके नाम भेज देता हूँ। परसों शाम तक नियुक्तियोंकी तारसे सूचना मिल जायगी। आप कष्ट न करें। मेरिया द्वारा मैं स्वयं ही आपको ख़बर करवा दूँगा।"

"अच्छा, शुक्रिया" कहकर एडा और एडोरीलीन अपने घरकी ओर चल दीं।

नया युग

अभी सबेरा नहीं हुआ था। वारसा कुहरेमें ढँका हुआ जैसे आज़ादी-की अन्तिम साँसें ले रहा हो। बारकोंमें कुछ लोग जग गए थे और कुछ अधजगी अवस्थामें कम्बलमें लिपटे-लिपटे ही मृत्यु और जीवनका लेखा-जोखा कर रहे थे। वे आज जीवित हैं, इतना तो उन्हें मालूम था; पर कलका सूर्योदय वे देख सकेंगे, इसका उन्हें विश्वास नहीं था। उन्हें ऐसा लग रहा था कि पल, घड़ी, दिन और रात असाधारण तेज़ीसे बीत रहे हैं। वे जैसे उन्हें छोड़कर दौड़े जा रहे हों—हमेशाके लिए उन्हें पीछे छोड़कर वे आगे भागे जा रहे हों और फिर कभी नहीं लौटेंगे। वे दिन और दिनोंसे—जिनके बीतनेका किसीको ध्यान भी नहीं रहा—न जाने क्यों इतने निराले और न्यारे हो गए थे?

सहसा बिगुल बज उठा। सब सैनिक अपने-अपने बिस्तरे छोड़-छोड़कर उठ खड़े हुए और जल्दी-जल्दी वर्दी पहनने लगे। थोड़ी ही देर में बारकोंका सोया हुआ यौवन सैनिकोंकी टुकड़ियोंके रूपमें चलती-फिरती दीवारोंका-सा रूप धारण कर उठा। लगभग सभी सैनिकोंके चेहरे मुर्झा-से रहे थे। कुछकी आँखोंमें खुमारी नज़र आ रही थी और कुछकी आँखें आग उगल रही थीं। कुछके पाँव भारी पड़ और उठ रहे थे और कुछके आज्ञा मिलनेसे पहले ही जैसे उठकर दौड़नेको तैयार हो जाते थे। कुछकी आँखोंका पानी तो कुहरेके पर्देमें भी चमक रहा था।

सैनिकोंके तनकर खड़े हो जानेके कुछ ही क्षण बाद दूरसे एक बूढ़ा कई जवान और अधबूढ़े लोगोंके साथ आता हुआ दिखाई दिया। बाएँ हाथकी पतली छड़ी जैसे उसके काँपते हुए शरीरको सँभाले थी। सैनिककी पहली कतारसे कुछ क़दम दूरीपर वह रुक गया और अपनी झुकी हुई गर्दनको जैसे झटका देकर ऊपर उठाया। यह पोलिश सेनाके प्रधान सेनापति स्लिग्ली रिज़ थे। विषाद, गम्भीरता, जरा-जीर्ण शिथिलता और

अनिष्टकी काली छायासे प्रभावित उनकी मुख-मुद्रा देखकर सैनिक जैसे सहम गए हों। उनकी दृष्टि प्रत्येक सैनिकके चेहरेपर से दौड़ती हुई एक ओरसे दूसरी ओर तक चली गई। सैनिकोंकी सलामीका उत्तर उन्होंने दिया या नहीं, यह उन्हें याद नहीं रहा। आजकी-सी मुख मुद्रा उनकी पहले किसीने नहीं देखी थी। सैनिकोंका दिल तो पहलेसे ही बैठा जा रहा था, प्रधान सेनापतिकी अवस्था देखकर जैसे उनका रहा-सहा और धैर्य भी जाता रहा।

जलद-गम्भीर घोषसे उस आशङ्कामयी मनहूस शान्तिको भङ्ग करते हुए सेनापतिने कहा—"भाइयो, तुम लोग आज उदास क्यों देख पड़ते हो? मेरे चेहरेकी तरफ़ इस तरह घूरकर तुम क्यों देख रहे हो? कोई ऐसी अनहोनी बात तो नहीं है। जिस बातकी हमें आशङ्का थी और जिसके लिए हम पूरी तैयारी कर चुके थे, वही आज घटी है। जर्मनोंने तीन ओर से हमारे देशपर आक्रमण कर दिया है।"

इन शब्दोंके मुँहसे निकलते-निकलते सेनापतिका चेहरा और उदास हो गया। उनकी आवाज़ लड़खड़ाने लगी। तनकर खड़े हुए सैनिकोंमें कँपकँपीकी एक लहर-सी दौड़ गई। उनके कन्धोंपर रखी हुई बन्दूकें सहसा हिला गईं।

कोई २-३ मिनट चुप रहकर सेनापतिने कहा—"पर हमारे लिए यह कोई नई बात नहीं है और न इस सम्बन्धमें हमारा कर्त्तव्य ही अनिश्चित है। पोलैण्डवासी अपनी वीरता और साहसके लिए यूरोपके इतिहासमें प्रसिद्ध रहे हैं। शत्रुके सामने झुकना या पीछे हटना वे लोग जानते ही नहीं। मुझे विश्वास है कि आप लोग अपना कर्त्तव्य पालन करते समय अपने पूर्वजोंकी विश्व-विश्रुत प्रतिष्ठा और देशके अभिमानको भूल नहीं जायँगे। देशके भाग्यका निपटारा आप ही लोग करेंगे। आज हमारी परीक्षाका दिन है। आज आपको यह सिद्ध कर देना है कि एक-एक पोल, न सिर्फ़ पोलैण्ड का, बल्कि विश्वकी शान्ति और स्वतन्त्रताका

सन्देशवाहक है। अब दो घण्टेके लिए आप लोगोंको छुट्टी है, उसके बाद सबके जानेके स्थान बता दिए जायँगे।"

सब सैनिक इस तरह गुमसुम अपनी-अपनी बारकोकी तरफ़ चल पड़े जैसे श्मशानमें कई मुर्दे उठ कर इधर-उधर चलने लगे हों। कोई किसीसे बोल-बतला नहीं रहा था और सबके पाँव जैसे लड़खड़ा रहे थे।

—२—

सारे पोलिश डिवीज़नको मालूम हो गया कि स्पाकने कल जो बात कही थी, वह एकदम ग़लत नहीं है। उनकी सरकार रूमानियामें चली गई है! बहुतोंको इस बातपर विश्वास नहीं हुआ और जब कर्नल हेलिंस्की और स्पाकमें गरमागरम बातचीत हुई, तब तो सबको यह विश्वास होगया कि स्पाककी बात ही ठीक जान पड़ती है।

दूसरे दिन न सिर्फ़ स्पाककी बातोंका ज़ोरोंसे खण्डन ही किया गया, बल्कि उसे विदेशी गुप्तचर देशद्रोही बतलाकर कैद भी कर दिया गया। इससे सैनिकोंमें आतङ्क ज़रूर छागया, पर उन्हें इस बातपर विश्वास नहीं हुआ कि स्पाकने जो कुछ कहा है, वह एकदम मिथ्या है। पर प्रकट रूपमें यह कहनेको कौन तैयार था? सब सहमे-से रह गए।

एक कैंपमें स्पाकको हथकड़ी-बेड़ीमें कसकर डाल दिया गया। एक बूढ़ा-सा सन्तरी वहाँ पहरा देनेपर तैनात कर दिया गया। सन्तरी कैंपके ऊपर खड़ा-खड़ा दूरसे आनेवाली बन्दूकों, तोपों, मशीनगनों की गोलियों की सनसनाहट और बमोंके धड़ाकोंको मिश्रित भावोंसे सुन रहा था। सहसा कैंपमें से किसीके अट्टहासका रव सुनाई दिया। उसने आश्चर्य और क्रोधके साथ देखा—जो कुछ उसने देखा, उसपर जैसे वह विश्वास नहीं कर सका। अट्टहास करनेवाला व्यक्ति और कोई नहीं था, स्पाक बैठा हुआ खिलखिलाकर हँस रहा था। बूढ़े सन्तरीने डपटकर कहा—"शर्म नहीं आती तुझे हँसते हुए, स्पाक? देश के साथ विश्वासघात और विद्रोह करके भी तुझे उसके इस सङ्कट-कालमें हँसी आती है? तुझे डूब मरना चाहिये।"

"हो सकता है, तुम्हारी बात ठीक हो स्लीमैंक"—स्पाकने गम्भीर होकर जरा लापरवाहीसे कहा—"पर इसका अन्तिम निर्णय तो बादमें ही होगा कि पोलैण्डके साथ विश्वासघात और विद्रोह मैंने किया है या तुमने और तुम्हारी पृष्ठपोषक सरकारने ?"

"हूँ, पाजी कहींका, नालायक। अपने मुल्कके लिए भी लड़नेमें तुझे मौत आ गई ? क्या तेरी जान पोलैण्डसे ज्यादा मूल्य रखती है ?"

"यह मैं कब कहता हूँ ? मै तो इस तरहकी तुलना ही नहीं करता। अगर तुम करते हो, तो सुनो, एक मानवकी जान एक नहीं अनेक मुल्कोंसे भी अधिक मूल्य रखती है। मुल्क जैसी कोई चीज बज़ात खुद तो कुछ भी नहीं है। अगर मानव ही नहीं रहा, तो फिर ज़मीन-ज़मीन ही रहेगी, वह मुल्क और बेमुल्क क्या होगी ? मानवताका नाश करता है युद्ध और इसी लिए मैं उसमें शामिल नहीं हुआ और तुम सबसे भी मैंने यही कहा।'

"लेकिन पगले, हम तो मानवताका नाश नहीं कर रहे। वह तो हिटलर कर रहा है।"

"हाँ, यह ठीक है। पर हिटलर क्या साम्राज्यवादी परिस्थितियों और प्रतिक्रियाओंकी देन नहीं है ? वर्सईकी सन्धि क्या अन्याय और अशान्तिके बीज बोनेका ही हीन प्रयत्न नहीं था ? उस समय पराजित जर्मनी इस साम्राज्यवादी योजनाका विरोध नहीं कर सका। आज वह अपने ही पापका प्रायश्चित्त कर रहा है। काँटा तो आखिर काँटेसे ही निकाला जाता है न।"

"लेकिन उसने हमारे मुल्कपर हमला करके क्या अच्छा किया ? क्या उसके लिए यह उचित था ?"

"मैं कब कहता हूँ कि यह ठीक है ? पर इसमें जर्मनीसे अधिक दोष पोलैण्डका है। जो भाग जर्मनीका था और जर्मनोंका था, उसे लौटाने में जिद कर क्या हमारे देशने अपने ही नाशको निमन्त्रण नहीं दिया ? एक ओर हमारे शासकोंने रूसी सहायताको ठुकरा दिया और दूसरी ओर

जर्मनी की उचित शर्तोंको। दुर्भाग्य तो यह है कि हम आज भी यह नहीं समझ पाये हैं कि हमें कौन अपने स्वार्थके लिए ढाल बनाए हुए है?"

"पर भाई, डैनज़िग और कौरोडोर जर्मनीको देनेके बाद पोलैण्डका रह ही क्या जाता है?"

"कहनेको उसका है ही क्या? उसका सङ्गठन तो विभिन्न राष्ट्रोंके टुकड़े जोड़-जोड़कर किया गया है। ऐसा करनेमें जो चाल थी, वह धीरे-धीरे सामने आ रही है। तुम्हें याद होगा अभी कुछ महीने हुए हमने चेकोस्लोवाकियाके पूर्वीय भागपर हमलाकर कुछ भाग हड़प लिया था। रूसके सङ्कट-कालमें क्या हमें उसपर हमला करना चाहिए था? भाई, यह हमलों की प्रवृत्ति ही बुरी है। अबाध स्वतन्त्रता और आत्म निर्णयका अधिकार मनुष्य-मात्रको है, फिर क्यों एक-दूसरे पर हमलाकर उसे अपने अधीन बनावे।"

"तुम ठीक कह रहे हो स्पाक, लेकिन अब इन बातोंसे क्या हो सकता है? हमारा देश तो बड़ी तेजीसे विनाशकी ओर जा रहा है।"

"विनाश और सृजन तो दुनियाके नियम हैं। इनसे घबराना व्यर्थ है। मेरा तो विश्वास है कि इस तथाकथित विनाशके बाद एक नया पोलैण्ड जन्म लेगा। भले ही उसका नाम आजके अर्थमें 'पोलैण्ड' न हो, पर वह हमारे जीवनका एक नया युग होगा—विश्व-इतिहासके एक नये अध्यायका आरम्भ होगा।"

"लेकिन फिर भी क्या हम निश्चिन्त हो सकेंगे?"

"शायद हो सकें, क्योंकि हम लोग अधिनायक-तन्त्र और निहित हितोंके मुट्ठी-भर लोगोंके शासनका कुफल बहुत देख चुके हैं। युद्ध, युद्धकी आशङ्का और अशान्तिसे हम लोग अब काफी ऊब चुके हैं। अब तो हमें अपनी सारी शक्ति जनताका राज्य स्थापित करनेमें लगानी चाहिए। जब कोई शासक और शासित न होगा, शोषक और शोषित न होगा, तो युद्ध और अशान्ति की आशङ्का अपने-आप मिट जायगी।"

—३—

इस बार स्लीमैंक कुछ नहीं बोला। कुछ क्षण वह खड़ा-खड़ा न जाने क्या सोचता रहा और फिर इधर-उधर देख कर स्पाकके नजदीक जा उसके कानमें कुछ कहा। दूसरे ही क्षण उसने स्पाककी हथकड़ी-बेड़ी खोल दी और दोनों सन्ध्याके बढ़ते हुए अन्धकारमें न मालूम कहाँ विलीन हो गये!

पश्चिमी यूक्रेनका वह गाँव—जहाँ स्लीमैंक रहता था—आज भी जिन्दगीसे उसी तरह लहलहा रहा है, जिस तरह कि कल या कुछ वर्ष पहले लहलहाता था। पश्चिमी पोलैण्डके बड़े-बड़े नगर और प्रान्त मिट्टीमें मिल गए, पर इस गाँवकी कोई एक टहनी भी नहीं उखाड़ सका। रूसी फौजोंको गाँवमें आए दो हफ्ते हो गये, पर कहीं आतङ्कका नाम भी नहीं। पोलिश सेनाके कुछ लोगोंके ही यदा-कदा गाँवमें आ जानेसे लोग भय-भीत होकर घरोंमें घुस जाते थे। बच्चे तो उस रोज सारा दिन घरसे बाहर निकलनेका नाम तक नहीं लेते थे। पर आज तो कुछ मामला ही और है। रूसी सैनिक बच्चोंको गोदमें लिए या उँगली पकड़े हुए उन्हें घुमा रहे हैं। सब गाँववालोंसे इस तरह हँसी मज़ाक कर रहे हैं, जैसे उनमें और ग्रामीणों में वर्षों पुराना परिचय हो।

स्लीमैंक अपने मकानके सामने अपने परिवारके साथ बैठा हुआ कॉफी पी रहा था कि अचानक किसीने पीछेसे आकर उसका कन्धा पकड़-कर हिलाया। उसने मुड़कर जो देखा तो सामने स्पाक खड़ा मुस्करा रहा था। उछल कर वह उसके गलेसे लिपट गया और हर्षातिरेकसे बहनेवाले अपने आँसुओंको पोंछते हुए बोला—"अरे स्पाक, तुम यहाँ कैसे? मैं तो समझ रहा था कि तुम शायद ज़िन्दा ही न रहे होगे?"

"हाँ, अगर तुम मेरी हथकड़ी-बेड़ी न खोलते तो शायद मेरी लाश भी आज जर्मन सैनिकोंकी एड़ियोंके तले रुँदती होती।" कह कर स्पाक हँस पड़ा। पास पड़े हुए लकड़ीके एक चौकोर टुकड़ेपर बैठते हुए वह बोला—"तुम तो मज़ेमें हो न स्लीमैंक?"

"खूब, खूब" कहते हुए स्लीमैंकने कॉफ़ीका एक गिलास स्पाककी ओर बढ़ाते हुए कहा—"लो, पिओ। अब तो हम बड़े खुश हाल हैं। जानते हो, अब मैं ४॥ एकड़ ज़मीन और गाँवका मालिक हो गया हूँ—मालिक।"

"हाँ, सुना है, स्लीमैंक।"

"लेकिन भैया, एक बात तो बताओ, बिना ज़मींदारके काम कैसे चलेगा? कलको किसीने मेरा खेत दबा लिया या और कोई झगड़ा हुआ, तब?"

"हमीं सब आपसमें फैसला करेंगे। तुम अपने घरकी व्यवस्था भी तो करते ही हो, उसमें क्यों किसी मैनेजरकी जरूरत नहीं? जिस तरह अपने परिश्रमका फ़ायदा उठानेके तुम ही एकमात्र अधिकारी हो, उसी तरह दूसरे लोग भी हैं। फिर कौन किसीसे लड़ेगा? जिस नए समाजका हमारी आँखोंके सामने निर्माण हो रहा है, उसका आधार-स्तंभ होगा पारस्परिक प्रेम और विश्वास। लड़ाई-झगड़े तो सब शोषण और शासनकी भावनासे पैदा होते हैं।"

"लेकिन कभी अगर मेरा गाँव फिर पोलैण्ड को मिले, तो ज़मींदार क्या यह ज़मीन मुझसे छीन नहीं लेगा?

"पर ज़मींदार होता कौन है जमीन देने या छीननेवाला? तुम जोतते हो, तो ज़मीन तुम्हारी। कलको उसे और कोई जोतेगा, तो बस उसकी हो जायगी। ज़मींदार जैसे किसी चिड़ियाका तो यहाँ नाम ही नहीं। अब उसके होनेकी बात ख़्वाब-भर रहेगी।"

"और जो पिछला लगान बक़ाया है वह किश्तोंमें देना होगा या फिर ज़मीन गिरवीं रखनी होगी।"

"किसी भी तरह नहीं। अब बक़ाया-वक़ाया कुछ नहीं रहा, तुम जितना पैदा करोगे, क़ानून और रक्षाके लिए थोड़ा-सा सरकारको देकर बाक़ी सब तुम्हारे ही पास रहेगा।"

"लेकिन स्पाक यह तो बताओ कि ज़मीन और गाय हम लोगों को क्यों दी गयी हैं ?"

"इसीलिए कि तुम्हें यह अक्ल आये कि उत्पादनके साधनोंपर किसी व्यक्ति या समाज विशेषका अधिकार नहीं होता—न होना चाहिये। जो गायसे दूध निकाले, उसे पीनेका अधिकार है। जो जमीनसे अन्न पैदा करता है, उसे उसके प्रयोग करनेका अधिकार है।"

"यह नयी सरकार भी अब हमारे साथ जमींदारोंकी तरह सख़्ती तो नहीं करेगी ?"

"सख़्तीका तो कोई सवाल ही नहीं। यह कोई जमींदारों या पूँजी-पतियोंकी सरकार तो है नहीं कि अपने स्वार्थके लिए तुम्हारा गला घोटे। अरे, हम तुम सभी तो सरकार हैं, फिर सख़्ती-ज़्यादतीका सवाल ही क्या ?"

"हाँ एक बात तो पूछना भूल ही गया, स्पाक ! तुम्हें भी ज़मीन ही मिली है न ?"

"नहीं, मुझे तो कुछ भी नहीं मिला है। मैं कोई किसान तो था नहीं।"

"तब भैया तुम अपना गुज़र-बसर कैसे करोगे ?"

मैं हट्टा-कट्टा जवान आदमी हूँ, मज़दूरी करके पेट भरूँगा।"

"लेकिन मज़दूरीका मिलना हमेशा निश्चित तो नहीं होता स्पाक।"

"इसकी अब मुझे चिन्ता नहीं करनी होगी। मुझे रोटी और कपड़ा चाहिये, वह मुझे मिलेगा। मुझसे क्या काम लिया जाय, यह सरकार तय करेगी।"

"अच्छा खाना, अच्छा पहनना और अच्छा काम करना—अगर यह तीन बातें हो सकें तब तो दुनिया-भरमें सुख, समृद्धि और शांति हो जाय।"

"अब ऐसा होनेमें बहुत समय नहीं लगेगा। अच्छा अब चलता हूँ, फिर आऊँगा।"

सबको धन्यवाद देकर स्पाक बिदा हुआ।

विद्रोह

जनरल होज़ा-जैसे फौजी-ज्ञानके माहिरपर कोई भी देश गर्व कर सकता था। चेकोस्लोवाकियाको भी उनपर गर्व था, पर आततायी नात्सियोंके आक्रमणके कारण उसका वह गर्व अधिक दिन क़ायम न रह सका। जिस समय नात्सी-यमदूत प्रागकी छातीपर आकर मूँग दलने लगे थे, सैनिकों, नागरिकों तथा स्त्रियोंको अपमानित और ज़लील करने लगे थे, उस समय भी जनरल होज़ा पागलोंकी तरह इधर-उधर दौड़-धूपकर उनका मुक़ाबला करनेके लिए लोगोंको समझा रहे थे। पर तब क्या हो सकता था? सारा चेकोस्लोवाकिया नात्सियोंके फ़ौलादी पंजेमें पूरी तरह जकड़ा जा चुका था।

जिसे अपने बाहु-बल और बुद्धिपर विश्वास हो, जिसे अपने देश-वासियों की आज़ादी और स्वाभिमान के लिए मर मिटनेकी भावनाका अनुभव हो, उसके लिए बिना लड़े ही विदेशी नर-पिशाचोंकी गुलामी स्वीकार करने को मजबूर किया जाना कितना दुःखदायी और असह्य है, यह शब्दोंमें ठीक-ठीक व्यक्त नहीं किया जा सकता। पर जनरल होज़ाके भाग्यमें शायद आत्म-ताप और ग्लानि का यह गुलाम-जीवन भी नहीं बदा था। उन्हें नात्सियों के खिलाफ चेक-जनता और रही-सही सेनाको उकसाने के अभियोग में गिरफ्तार कर लिया गया था। पहले सुना गया कि उन्हें गोलीसे उड़ा दिया जायगा, फिर सुननेमें आया कि उनपर 'राजद्रोह' का मुकदमा चलेगा। किन्तु महीनों बीत जानेपर भी हुआ कुछ भी नहीं। आज वे लांछित, अपमानित और प्रताड़ित होकर प्रागके एक नज़रबन्द कैम्प में—जो कि पहले बच्चोंका एक स्कूल था और जिसके वार्षिकोत्सवोंमें वे एक उच्च राज्याधिकारीकी हैसियत से कई बार शामिल

हो चुके थे—पड़े सड़ रहे थे। पहले वे बूढ़े नहीं मालूम पड़ते थे, पर यहाँकी दारुण यंत्रणाओंने जैसे बरबस कई वर्ष बाद आनेवाली जरा-जीर्ण अवस्थाको अभी ही बुला दिया हो। वे इसके लिए तैयार रहे हों या नहीं, पर आज उन्हें मैले और फटे-पुराने कपड़ोंमें व्याकुल देखकर ऐसा लगता था कि वे किसी दूसरे देशसे लाये गये हों, क्योंकि इतनी बुरी दशामें तो शायद चेकोस्लोवाकिया के भिखारी भी कभी नहीं देखे गए। आज वे उस बूढ़े सिंहकी तरह थे, जिसके दाँत गिर गये हों और पंजोंके नाखून उखाड़ लिये गए हों।

पर इस अपमान और उत्पीड़नमें भी आशा की एक क्षीण किरण थी, जो उन्हें जिला रही थी—और वह थी चेकोस्लोवाकिया के फिर स्वतंत्र होने की। इसी कारण वे सब कुछ धैर्यपूर्वक सह रहे थे। उनके इस असाधारण धैर्य और सहनशक्ति से एक नात्सी सन्तरी बहुत प्रभावित था। वह जब-तब आकर चुपके से उन्हें इधर-उधरके समाचार बता जाया करता था। प्रागकी चेक पुलिस और नागरिकों पर हुए जुल्मोंकी कहानी वे इसी सन्तरीके द्वारा सुन चुके थे। तभीसे उनका खून खौल रहा था। शूशनिगके वध और पोलैण्ड पर नात्सियों द्वारा की गई चढ़ाई का समाचार भी उन्हें इसी सन्तरीसे मालूम हुआ था और तभीसे न मालूम वे मन ही मन क्या ताना-बाना बुनते रहते थे।

(२)

उस दिन सुबहसे ही प्रागके उस नज़रबन्द कैम्पमें चहल-पहल नज़र आने लगी। संतरी समयसे पहले तैयार हो गये और चारों तरफ़ कानाफूसी चलने लगी। लोहेकी मोटी शलाख़ोंके जँगलेमें से जनरल होजाने जल्दी-जल्दी आने-जाने वाले नात्सी सैनिकों और अफ़सरों को देखा, पर उनकी समझमें कुछ भी न आया। इतना अनुमान वे ज़रूर लगा सके कि इस चहल-पहलके परिणाम-स्वरूप कोई परिवर्त्तन ज़रूर होनेवाला है।

थोड़ी देर बाद उनका परिचित सैनिक ड्यूटीपर आया। दो तीन

चक्करोंमें थोड़ी-थोड़ी करके उसने सारी की सारी बातें जनरल होज़ाको बता दीं। उन सबका आशय यह था कि पूर्वी और पश्चिमी सीमान्तोंपर जर्मन सैनिकोंकी माँग बढ़ जानेसे चेकोस्लोवाकियाके बहुतसे जर्मन सैनिक वहाँ भेजनेके लिए हटाये जा रहे हैं। जिन चेक नज़रबन्दों और क़ैदियों-की वजह से जर्मन सैनिकोंको रुकना पड़ रहा है, उनकी भी कमी की जायगी—उन्हें मुक्त करके नहीं, बल्कि गोलीका शिकार बनाकर।

अभी जनरल होज़ा अपने अनिश्चित भविष्यके सम्बन्धमें कुछ सोच भी नहीं पाये थे कि पाससे हेर स्ट्रोवेख़ गुज़रे। जनरलने दबी हुई आवाज़में कहा—"महोदय, सुना है कि हेर फ़ान कर्ट शूशनिग अब जीवित नहीं है?"

"चुप रहो, बदमाश कहींके—" स्ट्रोवेख़ने रुकते हुए डपट कर कहा—"तुम्हें कैसे मालूम हुआ? तुम उन्हें कैसे जानते हो?"

"वैसे ही अन्दाज़से कहता हूँ। मेरी समझमें तो यह आपकी बहुत बड़ी कृपा और उदारता है कि अब तक आपने उन्हें अपने पापका प्राय-श्चित्त करनेका इतना मौक़ा दिया। अगर कोई दूसरा देश होता तो शूशनिग जैसे पापीको कभीका गोलीसे उड़वा दिया गया होता। ऐसे देश और जातिद्रोही को इतने दिन तक बख़्शता कौन है?"

स्ट्रोवेख़के चेहरेका रंग अचानक बदल गया, उसके ललाटमें पड़े हुए बल ग़ायब हो गये और बिना कुछ बोले वह आगे बढ़ गया। जनरलने मुस्कराहटको होठों के भीतर ही दबा लिया और सिर खुजलाने लगे। दिन भर उनके दिमाग़में यही बात घूमती रही कि स्वदेश-प्रेमका इज़हार कर गोलीका शिकार होना अच्छा होगा या······?"

शामको सूर्यास्तसे पहले स्ट्रोवेख़ फिर कैम्पमें आया। बड़ी तेज़ीसे वह कभी इधर और कभी उधर चक्कर लगाने लगा। उसके चेहरेसे साफ़ ज़ाहिर हो रहा था कि आज वह काफ़ी परेशान है। जब वह जनरल होज़ा-की कोठरीके पाससे गुज़र रहा था, तो होज़ाने उसे रोका और कहा—

"महोदय, अगर लड़ाई छिड़े तो सेवकको न भूलियेगा। हालाँकि मैं अब बूढ़ा दीखने लगा हूँ, पर इन कायर पोलों के छक्के छुड़ानेका साहस अब भी इस ठठरीमें है। डैनज़िग और कॉरीडॉर हमारे हैं। हम उन्हें थर्ड-राइख़में लौटाये बिना दम न लेंगे। अगर लड़ाई छिड़े तो······।

अभी हेर स्ट्रांवेख़ जनरल होज़ाकी कोठरीसे एक-दो क़दम ही आगे गया होगा कि अचानक रुक गया। एक मिनट तक वहाँ खड़े रहकर उसने कुछ सोचा और फिर जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाता हुआ आगे बढ़ गया।

(३)

एक दिन अचानक जनरल होज़ाको फिर अपनी पुरानी फ़ौजी पोशाकमें देखकर प्राग-निवासी दाँतों-तले अँगुली दबाने लगे! कहाँ तो उनके गोलीसे उड़ाये जानेकी अफ़वाहें उड़ रही थीं, और कहाँ आज वे फिर अपने पुराने स्थानपर थे। सुना गया कि जर्मन हाईकमाण्डने उन्हें स्लोवाकगैरीज़नका जनरल नियुक्त कर दिया है और बहुत जल्द वे अपनी गैरीज़न के साथ लड़नेके लिए पोलैंड जा रहे हैं।

चेक जनताके कानों में पहले-पहल जब यह ख़बर पड़ी, तो सहसा उसे विश्वास नहीं हुआ कि यह सच है। किसीने कहा कि जर्मन हमें बेवकूफ़ बनानेके लिए इस तरहकी मनगढ़न्त बातें फैलाते हैं। किसीने कहा कि और कोई ग़द्दारी करे तो हम मान सकते हैं, पर जनरल होज़ा जर्मनों के हाथ अपनी आत्मा नहीं बेच सकते। कुछ बूढ़ोंने कहा—कौन जाने यह स्वाँग उन्होंने जर्मनोंसे देशको मुक्त करने के लिए ही भरा हो? कुछ ऐसे भी थे, जिन्होंने कहा कि अपने देशके शत्रुओंसे मिलकर जनरल होज़ाने न सिर्फ़ अपने और अपने कुल के नाम पर ही बट्टा लगाया है, बल्कि चेकोस्लोवाकियाके नामको भी कलंकित किया है। अपने बुढ़ापे में खुद धूल डालनेकी उन्हें यह क्या सूझी?

पर उस समय चेक जनताका सारा भ्रम दूर हो गया जब कि उसने जनरल होज़ाको जर्मन-जनरलकी पोशाकमें और बाँहोंपर स्वस्तिक-चिह्न

लगाये एक मोटरमें प्रागसे पोलिश मोर्चेके लिए जाते हुए देखा। उनके अभिवादनमें बहुत कम हाथ उठे, बहुत कम रूमाल हिले, लेकिन बहुत-सी भीगी आँखों ने उन्हें निहारा। उनमें हर्ष था या विषाद, उनमें से विक्षोभ की चिनगारियाँ निकल रही थीं या हर्षके आँसू—इसे कितने लोगों ने देखा और समझा होगा ?

स्वयं जनरल होज़ाके मनकी क्या दशा थी, इसे समझनेकी फ़ुर्सत किसे थी, उनकी आँखें क्या देख और बतला रही थीं, उनके चेहरेकी मुस्कराहट कितनी गहरी और वास्तविक थी, इसे कितने लोगोंने देखा होगा ? उनके पास ही हेर स्ट्रोवेख़ बैठा, इधर-उधर नज़र डालता जाता था। उसने अपनी आँखोंसे देखा कि चेक जनता जनरल होज़ाके जर्मनोंसे मिल जाने से प्रसन्न नहीं है। इससे अधिक जनरल होज़ाकी असंदिग्धता का और क्या प्रमाण हो सकता था ?

(४)

ज़िलना स्टेशनपर जनरल होज़ाका स्वागत करनेके लिए जो सैनिक और अफ़सर एकत्र हुए थे, उनमें से इने-गिने जर्मन थे और शेष सब स्लोवाक। स्लोवाक अफ़सरोंमें से बहुतसे जनरल होज़ाके परिचित भी थे और बहुतसे उनके अपरिचित किन्तु विरोधी भी। सब जनरल होज़ाकी कार्य-कुशलता और अनुभवके क़ायल थे, पर यह समझ नहीं पा रहे थे कि जनरल होज़ा इतनी जल्दी जर्मनोंके शत्रुसे मित्र कैसे बन गये ?

जनरल होज़ाको स्लोवाक गैरीज़नका चार्ज सम्हलाकर हेर हेरिंश अपने बंगलेके लिए रवाना होगया। रातके लगभग ग्यारह बजे तक होज़ा स्लोवाक अफ़सरों और सैनिकोंसे ख़ानगी बात-चीत करते रहे। फिर एक अफ़सरसे जेलकी चाबी मँगाकर उसे देखने गये। उसमें नात्सियोंके विरुद्ध आवाज़ उठाने वाले प्रतिष्ठित स्लोवाक नागरिकों और फ़ौजी अफ़सरोंको जेलकी यन्त्रणाओंसे बेहाल देखकर उनकी आँखें भर आईं। न मालूम कितनों से वे गले मिले और उनसे क्या-क्या कहा।

थोड़ी ही देरमें जेलका मुख्य द्वार बन्द कर दिया गया। सब क़ैदी बाहर निकलकर अहातेमें आ गए। सैनिक और अफ़सर भी वहाँ जमा हो गये और जनरल होज़ाने कहना शुरू किया :—

"भाइयो, आप और हम कल तक एक थे, पर आज नात्सी नर-पिशाचोंके षड्यन्त्रके कारण हम अलग-अलग दो गुलामों के झुण्ड भर हैं। चेक-सरकार के ख़िलाफ़ बग़ावतका झण्डा खड़ाकर आप लोगोंने आज़ादीके लिए आन्दोलन किया। पर हमने आपको गुलाम कब बनाया था? दो भाइयों का साथ रहना क्या एक दूसरेकी अधीनता में रहना है? पर तब आप लोगोंकी बुद्धि खो गई थी। जर्मनोंने आपको कहनेके लिए स्वतन्त्र तो कर दिया, पर आप ही सोचिए कि वास्तवमें यह स्वतन्त्रता है या गुलामी? क्या मुझे, हम लोगोंकी इस घातक ग़लतीके बाद, अब फिर मिलकर, अपने देशको आज़ाद करनेके लिए प्रयत्न करनेको आप लोगोंसे नहीं कहना चाहिए? क्या मुझे बतलाना होगा कि आपका कर्तव्य क्या है?

"मैं जेलसे जर्मनोंको झाँसा देकर निकला हूँ, पर क्या आप लोगों को इस बातपर कभी विश्वास होगा कि मैं उन जर्मनोंकी तरफ़से लड़ूँगा, जिन्होंने कि आज हमें गुलाम और ज़लील कर रक्खा है? क्या हम अपने उन पोल-पड़ोसियोंसे लड़ेंगे जो अपनी और हमारी आज़ादीके दुश्मनोंसे लड़ रहे हैं? चेक और स्लोवाक दो नहीं एक राष्ट्र हैं। हमें अपने मुल्ककी आज़ादीके लिए फिर एक बार कोशिश करनी चाहिए। मैं जानना चाहता हूँ कि आप सब हमारी स्वतन्त्रताके शत्रु जर्मनोंके विरुद्ध लड़ेंगे या उन पोलोंके ख़िलाफ़ जो कि अपनी आज़ादीकी रक्षाके लिए लड़ रहे हैं।"

उपस्थित लोगोंने एक स्वरसे कहा—"हम सब जर्मनोंके खिलाफ़ लड़ेंगे।"

"तो इसे मैं आप लोगोंकी प्रतिज्ञा समझूँ?" जनरल होज़ाने हर्ष-गद्गद् स्वरमें पूछा।

"हाँ, हाँ, पक्की प्रतिज्ञा।"

"आज मेरे जीवनका पहला स्वप्न पूरा हुआ।" कहते हुए जनरल होज़ा हर्षातिरेकसे पागल हो अपने स्थानपर बैठ गये।

—५—

अभी पौ नहीं फटी थी। स्लोवाक-सेनाके हेडक्वार्टरका मुख्य द्वार खुला था। पर वहाँ आज कोई सन्तरी नहीं था। हेर हेरिशकी मोटर भीतर आकर रुकी। फाटक खोलकर अभी उन्होंने एक ही पाँव बाहर रखा था कि किसी तरफ़ बन्दूक चलनेकी-सी आवाज़ हुई और वे वहीं गिरकर ढेर हो गए।

× × ×

स्लोवाक गेरीज़नने पोलिश-मोर्चे पर जानेसे इन्कार कर दिया है, यह समाचार सारे शहरमें बिजलीकी तरह फैल गया। दोपहर होते-होते स्लोवाक सेनाके हेडक्वार्टरके सामने जर्मनोंकी लाशोंका ढेर लग गया। जिन जर्मनोंको जानसे नहीं मारा गया, उनको स्लोवाक लोगोंने वैसे ही मार-मार कर अधमरा कर दिया। जनरल होज़ा कहाँ हैं, कहाँ नहीं, इसका किसीको पता नहीं।

वागनर

अभी पौ नहीं फटी थी। बर्लिन स्टेशनपर सैनिकोंसे भरी एक गाड़ी कहीं जानेके लिए तैयार खड़ी थी। वर्दी पहिने कई सैनिक और सैनिक-अफ़सर प्लेटफ़ार्मपर बड़ी फुर्तीसे इधरसे उधर घूम रहे थे। कहीं कुछ लोग खड़े धीमी आवाज़में बातचीत कर रहे थे। लाश पर मँडराने वाले गिद्धों की भाँति गेस्टापो (खुफ़िया-विभाग) के दूत सादी पोशाकमें .अर्थभरी दृष्टि से इधर-उधर ताकते हुए टहल रहे थे। इनके अलावा प्लेटफ़ार्मपर कोई भी नागरिक नज़र नहीं आ रहा था।

सहसा भीड़को चीरती हुई एक युवती—जिसकी आँखोंमें आँसू छलछला रहे थे, केश बिखर कर हवामें इधर-उधर उड़ रहे थे और चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं—"वागनर", "वागनर" चिल्लाती तेज़ीसे क़दम बढ़ाती हुई गाड़ीके पास आई। कभी वह रुक कर ध्यानसे एक डिब्बेमें बैठे हुए सैनिकोंके चेहरे देखती और कभी "वागनर", "वागनर" चिल्लाती हुई अर्द्ध-पागलकी तरह फिर आगे दौड़ने लगती। इसी समय एक डिब्बे का दरवाजा खुला और वर्दीसे लैस एक सुन्दर-सुडौल नवयुवक प्लेटफ़ार्म पर उतर आया।

"एरीका, प्यारी एरीका!"—कहते हुए वह तेजीसे युवतीकी ओर बढ़ा। एरीकाने दौड़कर उसके सीनेमें अपना मुँह छिपा लिया और दोनों हाथ उसके गले में डालकर सिसकते हुए कहा—"प्यारे वागनर, तुम इस तरह मुझसे बिना मिले, मुझे अकेली छोड़कर चले जाओगे, इसकी मैंने कभी स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी।" और वह फफक-फफक कर रोने लगी।

वागनरकी भी आँखें भर आईं और लड़खड़ाती हुई ज़बानसे उसने कहा—"लेकिन एरीका, ज़रा मेरी स्थिति भी तो समझनेकी कोशिश

करो। सच मानो, मैंने ऐसा जान-बूझ कर कदापि नहीं किया। कल रात तक मुझे इस आकस्मिक यात्राकी कोई ख़बर तक नहीं थी। रातको तीन बजे मुझे सूचना दी गई कि साढ़े चार बजे तक फ़ौजी हल्केके केन्द्रमें हाज़िर हो जाओ! वहाँ पहुँचनेपर हमें यहाँ लाकर इस गाड़ीमें सवार करा दिया गया। पता नहीं, अब हमें कहाँ जाना होगा।"

"पता नहीं कहाँ जाना होगा!"—एरीकाने अपनी आँखें वागनर की आँखोंमें गड़ाते हुए पूछा—"यह तुम क्या कह रहे हो, वागनर?"

"ठीकही कह रहा हूँ, एरीका!"—वागनर अपने रूमालसे उस के आँसू पोंछते हुए कहा और फिर धीमी-सी आवाज़में उसके कानमें कहा—"शायद हमें पूर्वमें रूसपर हमला करने के लिए भेजा जा रहा है।"

"पूर्वमें, रूसपर हमला करनेके लिए?"—एरीकाने आश्चर्यसे आँखें फाड़कर पूछा—"यह भला क्यों? रूसने तो हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ा।"

"चुप, चुप, धीरे बोलो,"—वागनरने एरीकाके मुँहपर अँगुली रखते हुए कहा—"देखती नहीं; ये चारों ओर गेस्टापोके शैतान जो चक्कर लगा रहे हैं। इनके कानमें अगर तुम्हारी बातकी भनक पड़ गई, तो बस हम-तुम दोनों की ख़ैर नहीं है!"

इस बार एरीका कुछ न बोली। पर वागनर के रूसकी ओर जाने की बात सुनकर उसके मस्तिष्कमें तरह-तरहकी आशंकाएँ पैदा होने लगीं। उसकी आँखोंमें फिर आँसू उमड़ आये और वागनरको अपने गाढ़ आलिंगनमें बाँधकर वह फिर सिसकने लगी। वागनरने उसे और भी कसकर अपनी भुजाओंमें बाँध लिया।

कुछ क्षण दोनों बिना कुछ बोले स्थिर रहे। फिर वागनरने भर्राई हुई आवाज़में कहा—"प्यारी एरीका, मुझे भूल न जाना। मैं जितनी जल्दी हो सकेगा, यहाँ लौटनेक कोशिश करूँगा। आगे भाग्यकी बात है।

मेरा विश्वास है, इतनी जल्दी मैं मरूँगा नहीं। तुम्हारा प्रेम और तुम्हारी याद मुझे एक बार ज़रूर तुम तक खींच लायेगी।"

एरीकाने कहा—"मैं तुम्हें पत्र लिखूँगी। तुम अपने समाचार बराबर देते रहना। जैसे भी हो, बड़े दिनों तक तो हमें अवश्य ही विवाह कर लेना होगा।"

"विवाह!"—वागनरके चेहरेपर एक व्यंग्यात्मक क्रूर मुस्कराहट चमक गई और ठण्डी साँस लेकर उसने कहा—"जीवनके वे मीठे सपने, वे मधुर अरमान और यह लड़ाई, यह रक्तपात, यह नरसंहार! हा... हा ..हा !!"

भय-विह्वल हरिणीकी भाँति कातर दृष्टिसे एरीकाने वागनरके चेहरे की ओर देखा और किंचित् घबराहट के साथ बोली—"यह तुम क्या कह रहे हो, वागनर? अभी तो तुम लौटनेकी बात कह रहे थे और अब यह निराशा और डर..."

"डर!"—अपने ओंठोंको बल देकर एक फीकी मुस्कराहटके साथ एरीकाकी बात काटते हुए वागनरने कहा—"मौतके मुँहमें स्वयं छलाँग लगाने वालेको डर किसका होगा, एरीका? उसे तो तुम्हारी सान्त्वनाके लिए यहीं छोड़े जा रहा हूँ।"

कँपकँपीके साथ एरीकाके होंठोंपर एक फीकी-सी मुस्कराहट दौड़ गई। वागनरके सिरपर रखी टोपी ठीक करते हुए उसने कहा—"ईश्वर तुम्हें सकुशल वापस ले आयेगा।"

इसी समय गाड़ीके छूटनेकी सीटी हुई। वागनरने एरीकाको आलिंगन कर चूमा और बोला—"धीरज रखना एरीका, दिलको मजबूत बनाना; शीघ्र ही हम फिर मिलेंगे। कभी-कभी मेरी माँ की खबर भी लेती रहना।" यह कहकर वागनर डिब्बेमें जा चढ़ा और एरीका सजल आँखोंसे उसे देखती रही।

शीघ्र ही गाड़ी चल पड़ी और दोनोंने हाथ हिलाकर एक-दूसरेसे बिदा ली।

(२)

अभी वागनरने अपना मुँह खिड़कीसे भीतर करके अपनी जगहकी तरफ़ पाँव बढ़ाया ही था कि पास खड़े एक सैनिकने, जिसके एक हाथमें रोटी (ब्लैक-ब्रेड) का एक बड़ा-सा टुकड़ा और दूसरेमें कॉफ़ीका बर्त्तन था, बाईं आँख मारकर एक व्यंग-पूर्ण मुस्कराहटके साथ पूछा—"तुम बड़े खुश-क़िस्मत मालूम होते हो दोस्त! इस खूबसूरत छोकरीको कहाँसे फँसाया? उसे देखकर तो बस मेरी भी तबियत......"

उसका वाक्य अभी पूरा भी नहीं हो पाया था कि वागनरने लाल-लाल आँखोंसे मुड़कर एक बार उसकी ओर देखा और दूसरे ही क्षण पूरे ज़ोरके साथ एक घूँसा उसकी नाकपर जमा दिया। कराह कर सैनिक जहाँ खड़ा था, वहीं ढेर हो गया और उसकी नाकसे खून बहने लगा। इसी समय आस-पास बैठे हुए अन्य सैनिकोंकी नज़र वागनर और उसके घूँसेसे घायल हुए सैनिककी तरफ़ गई और मधु मक्खियोंकी भाँति वे उस पर टूट पड़े। एकने घायल सैनिकको उठाकर सीटपर लेटाया और उसके मुँह पर पानीके छींटे देने शुरू किये।

बेचारे अकेले वागनरपर इस समय न केवल लातों और घूँसों की ही, बल्कि गालियों और व्यंग्य बाणोंकी भी वर्षा हो रही थी। एकने कहा—"बड़ा मनहूस आदमी है, मजाकसे ही इतना बिगड़ उठा!" दूसरेने कहा—"यह कोई आदमी है; हैवान है, हैवान!" तीसरा अपनी क़मीज़ की आस्तीनें ऊपर चढ़ाता हुआ बोला—"हैवान ही नहीं, हैवानका बाप भी क्यों न हो; अभी एक ही घूँसेमें इसकी सारी शेख़ी निकाले देता हूँ।" और सारे सैनिक ज़ोर से ठहाका मारकर हँस पड़े। उनके चेहरे पाशविक क्रूरता और प्रतिशोधकी भावनासे लाल हो रहे थे।

इसी समय एक कोनेमें बैठा सैनिक उठा और "हटो, हटो" करता

हुआ आगे बढ़ा। पिटते हुए वागनरका हाथ पकड़ कर उसे एक ओर खींचते हुए उसने गरज कर पीटने वालोंको सम्बोधन करके कहा—"हान्ज, फ्राइड्रिख़, एन्र्स्ट; ठहरो, पीछे हटो। यह क्या मूर्खता कर रहे हो, शर्म नहीं आती तुम्हें अपने ही एक साथीके साथ यह व्यवहार करते हुए ? तुम सब क्या......"

बीच ही में उसका वाक्य काटते हुए एक पीटने वाले सैनिकने गरज कर कहा—"और उसने विकहेमके साथ जो व्यवहार किया है, सो ?"

"उसके लिए स्वयं वागनरको दुःख होगा। और फिर उसकी मानसिक स्थितिको देखकर क्या तुम उसे इस भूलके लिए क्षमा नहीं कर दोगे ?" और बिना उत्तरकी प्रतीक्षा किये उस सैनिकने कहा—"अच्छा, अब सब अपनी-अपनी जगह बैठो।"

बड़बड़ाते हुए सब सैनिक अपनी-अपनी जगह लौट गये। वागनर की बाँह पकड़ कर वह सैनिक उसे अपनी जगह पर ले गया और अपने पास बैठाते हुए बड़े सान्त्वनापूर्ण स्वरमें पूछा—"तुम्हारा नाम वागनर ही है न ?"

"हाँ"—वागनरने किंचित् मुस्कराहटके साथ कहा।

"तुम म्यूनिखके विल्हेम अस्पतालमें ही काम करते थे न ?"

"नहीं, मै तो बर्लिन-विश्वविद्यालयमें पढ़ता था।"

"ओह, तभी छात्र-सुलभ-भावसे तुमने विकहेमकी नाकपर घूँसा जमा दिया ! पर भाई, विश्वविद्यालयका वातावरण यहाँ नहीं है।" और फिर ज़रा धीमी आवाज़में बोला—"कहाँ तुम विश्व-विद्यालयके सुशिक्षित और कहाँ ये मनहूस, अशिक्षित, उजड्ड लोग ! इनके मुँह न लगना ही श्रेयस्कर है, समझे ! फिर कभी ऐसी भूल न कर बैठना।"

वागनरको महसूस हुआ कि वास्तवमें उसने बिना सोचे-विचारे हाथ उठाकर ग़लती की थी। इन लोगोंके मुँह न लगना ही अच्छा है। समझाने वाले सैनिककी ओर कृतज्ञताभरी दृष्टिसे देखते हुए उसने

कहा—"इस नेक सलाह और चेतावनीके लिए मैं तुम्हारा बहुत-बहुत कृतज्ञ हूँ, दोस्त ! पर हाँ, बातोंमें मैं तो तुम्हारा नाम तक पूछना भूल गया। अपना नाम क्या नहीं बतलाओगे ?"

"मेरा नाम विल्हेम एण्डरसन है। मैं भी तुम्हारी ही तरह एक पढ़ा-लिखा अभागा हूँ, जो बदक़िस्मतीसे रोटीके टुकड़ोंके लिए, कुत्तोंकी तरह लड़ने वाले इन अर्द्ध-पशुओंके बीच आ फँसा हूँ। अनिवार्य सैनिक सेवाका क़ानून मुझे अपनी स्त्री, बच्चों, बहिन और माँसे छीनकर इस मृत्यु-पथपर खींच लाया है। यहाँ आकर मेरी आँखें खुली हैं और मैं जान गया हूँ कि किस तरह हमारे मदान्ध शासक अपनी ही गर्वोक्तियोंसे धोखा खाकर और हमारी तथा हमारे देशकी दशा सुधारनेकी दुहाई देकर हमें मौतके मुँहमें ढकेल रहे हैं।"

"तब यह लड़ाई पितृ-भूमि, ग़रीबों और बेकारोंके हितके लिए कैसे हुई ? क्या यही इने-गिने धूर्त्त हमारे भाग्यके निर्णायक हैं ?"

"और नहीं तो कौन ? यही राजनीतिक लुंगाड़े हमारी हठधर्मी, असहयोग एवं असहिष्णुताका नाजायज़ फ़ायदा उठा रहे हैं और पितृ-भूमि के नामपर उसकी सन्तानका तर्पण कर रहे हैं !"

"लेकिन......" वागनरके मुँहसे दूसरा शब्द नहीं निकल सका, कारण विकहेम अपनी सीटपर उठकर बैठ गया था और लाल-लाल आँखों से वागनरकी ओर देखता हुआ बड़बड़ा रहा था—"बेहूदा कहींका, सुअरका बच्चा, देख तुझे इसका कैसा मज़ा चखाता हूँ।"

फ्राइड्रिखने विकहेमका कन्धा पकड़ कर उसे फिर लिटानेकी चेष्टा करते हुए कहा—"चुप, चुप, विकहेम; ज्यादा गरम होनेकी ज़रूरत नहीं। देख, अभी भी तेरी नाकसे खून आना रुका नहीं है। अभी आरामसे लेट। कल तक न मालूम कितनी रूसी छोकरियाँ तुझपर बलाएँ लेंगी ! और इस वागनरको, इस पाजीको हम भुगत लेंगे।"

विकहेमका मुरझाया हुआ चेहरा फिर एकबारगी खिल उठा। ओठोंपर ज़बान फेरते हुए उसने कहा—"फ्राइड्रिख़, सचमुच इसके लिए अब मेरा दिल बेचैन हो रहा है। बीयर पीते-पीते तो अघा गया। चलो, अब जी भरकर वोडका पीयेंगे।"

"और यूक्रेनकी छोकरियाँ, कोज़ाककी सुन्दरियाँ..." फ्राइड्रिख़के मुँहसे सहज ही में निकल गया। दूसरे ही क्षण भावावेशमें आकर दोनों ने कसकर हाथ मिलाया।

वागनरने घूमकर एक दबी हुई मुस्कानसे एण्डरसनकी ओर देखा। दोनों आँखों ही आँखोंमें मुस्कराए और फिर बिना कुछ कहे खिड़की से बाहर मुँह निकालकर देखने लगे। गाड़ी धड़धड़ाती हुई उत्तर-पूर्व चली जा रही थी।

—२—

रातके साढ़े ग्यारह बज चुके थे। ख़ेमेमें एक छोटी-सी मेज़के सहारे बैठा वागनर मोमबत्तीके प्रकाशमें एक पेंसिलका टुकड़ा लिये सामने पड़े काग़ज़पर कुछ शब्द लिखता और फिर पेंसिलसे रगड़ कर उन्हें काट देता। सहसा उसकी नज़र कलाईपर बँधी घड़ीपर गई और जैसे ओंठों ही ओंठोंमें उसने कहा—"साढ़े ग्यारह-बारह बजेसे पहरेकी ड्यूटी शुरू होनेवाली है और सुबह न मालूम कहाँ चल देना पड़े। अगर इस आध घण्टेमें एरीकाको पत्रोत्तर न लिख सका, तो फिर शायद कल भी न लिख सकूँ...और कौन कह सकता है, उसे पत्रोत्तर लिखनेका आजके बाद शायद फिर कभी अवसर ही न आये। लेकिन मैं यह सब क्या......।" वह अचानक चुप हो गया और पेंसिल काग़ज़पर रखकर, खड़ा हो, ख़ेमेमें इधर-उधर टहलने लगा।

उसके दिमाग़में एक तूफ़ान-सा उठ रहा था। शान्त-चित्त होकर एरीकाके सम्बन्धमें उठने वाले सब भावोंको लिपिबद्ध करना जैसे सारे समुद्र को चुल्लूसे भर लेनेकी तरह उसे कठिन, बल्कि कहना चाहिए

असम्भव—मालूम हो रहा था। टहलते-टहलते वह रुक गया, मेज़के पास पड़े स्टूल पर आ बैठा और जेबसे एक काग़ज़ निकालकर उसे मोमबत्तीके पास करके फिर पढ़ने लगा। न मालूम इससे पहले वह कितनी बार इसे पढ़ चुका था; पर ठीक-ठीक कुछ निर्णय नहीं कर पा रहा था। इस बार पत्र समाप्त करने के बाद उसके चेहरेपर एक क्रूर मुस्कराहट झलक गई और दोनों हाथोंकी मुट्ठियाँ बाँधकर, दाँत पीसकर वह बड़बड़ाने लगा—"हरगिज नहीं, स्वप्न में भी नहीं, यह एरीकाका पत्र हो ही नहीं सकता। उसके हस्ताक्षर भी असली नहीं हैं। किसीने बड़ी होशियारीसे उसके हस्ताक्षरोंकी नक़ल की है! और पत्रके भाव और भाषा? तो इस तरह मुझे उल्लू बनाया जा रहा है!"

आवेशमें आकर उसने पत्र फाड़ डाला और फिर ख़ेमेमें टहलने लगा। टहलते-टहलते वह सहसा रुक जाता और फिर टहलने लगता। फिर मोमबत्तीकी ओर स्थिर दृष्टिसे देखते हुए बोला—"पितृभूमि के लिए मुझे लड़ने भेजकर एरीका गर्व और गौरवका अनुभव कर रही है? बर्लिनमें शान्तिकालमें भी जो सुख-सुविधाएँ नहीं थीं, वह आज उनका उपभोग कर रही है? खाने-पीनेकी चीज़ोंकी कोई कमी नहीं है? वे बड़ी सस्ती और इफ़रातसे मिल रही हैं।" और इस वाक्यकी समाप्ति के साथ ही वह ठहाका मार कर हँस पड़ा और फिर पूर्ववत् टहलने लगा।

ख़ेमेके दरवाज़ेके पास आकर किसीने दबी हुई ज़बानमें कहा—"वागनर, वागनर, जग रहे हो क्या? पहरा बदलनेका समय हो गया। तुम तैयार तो हो न?"

"हाँ, अभी एक मिनटमें आया।" कहकर वागनर वर्दी पहनने लगा। उसके दिमाग़में एरीकाके पत्रके शब्द और उसके बनावटी हस्ताक्षर चक्कर लगा रहे थे। आज उसका मन उसके वशमें नहीं था।

ठीक बारह बजे वागनर पहरे पर आ डटा। पर आज उसे न तो ठण्डी हवाके झोंके ही कँपा रहे थे और न रात्रिका भयानक अन्धकार ही डरा

रहा था। आज अन्धेरेमें भी उसे चारों ओर अगणित तारों के रूपमें एरीका का चेहरा चमकता हुआ नज़र आ रहा था और हवाका प्रत्येक झोंका उसका श्वास-प्रश्वास मालूम हो रहा था। ख़ेमोंकी उस क़तारके पास टहलते हुए ऐसा मालूम हो रहा था, मानो उसके कानोंके पास एरीकाके ओंठ हिल-हिलकर कुछ कह रहे हैं। इस मूक सन्देशको सुनकर न जानें कितनी बार वागनरका चेहरा खिल उठा और न मालूम कितनी बार उसने कनखियोंसे बाईं ओर देखा—मानों एरीका सचमुच उसके पार्श्वमें ही खड़ी है!

दूसरे ही क्षण उसका चेहरा उदासीसे फिर मुरझा गया। यन्त्रकी भाँति क्रमसे उठते हुए उसके पाँव कुछ भारी और शिथिल हो गए; उसके ललाटपर पसीनेकी बूँदें चमक उठीं। सिहर कर उसने अन्धेरेमें इधर-उधर आँखें घुमाईं—कहीं कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था। हवाके दूसरे झोंके के साथ फिर जैसे एरीका उसके सामने आ खड़ी हुई और उसका हाथ पकड़ कर खींचते हुए बोली—"वागनर, प्यारे वागनर, चलो, कहीं भाग चलें। यह काम तुम्हारे योग्य नहीं है। फेंको इस बन्दूकको और चलो मेरे साथ। दूसरों को मार कर स्वयं क्यों मरोगे? चलो!"

"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता"—वागनर कुछ सहमा और ललाट का पसीना पोंछते हुए, इधर-उधर देखकर, मन ही मन बोला—"एरीका, तुम यहाँ कैसे? अभी तुम जाओ; ड्यूटी पूरी होते ही मैं सीधा तुम्हारे पास आऊँगा। अभी तुम जाओ। कोई देख लेगा, तो......"

इसी समय सामनेके झुरमुटमें कुछ खड़खड़ाहट हुई, जिसने वागनर की तन्द्रा भङ्ग कर दी। एक क्षण रुक कर उसने अपनी बन्दूक उसी ओर तान दी। उसके ओंठ काँप रहे थे, पर मुँहसे कोई शब्द नहीं निकल रहा था। दो-एक क्षण बाद उसे ख़याल आया—योंही हवासे खड़खड़ाहट हुई होगी; और बन्दूक फिर कन्धेपर रखकर वह टहलने लगा।

टहलते-टहलते उसे ख़याल आया—'सचमुच एरीका मेरे लिए घबरा रही होगी; रो रही होगी ? तब क्यों न उसके पास लौट जाऊँ ? लेकिन इस हालतमें लौट कैसे सकता हूँ ?' फिर उसे याद आया, 'अभी कल ही तो कुछ बीमार और घायल सैनिक बर्लिन भेजे गये हैं। बीमार तो वह स्वेच्छासे इतनी जल्दी और आसानीसे नहीं हो सकता, लेकिन घायल... घायल शायद वह हो सकता है।'

कुछ क्षण और टहल लेनेके बाद वह रुका। बन्दूक कन्धेपर से उतार कर एक घुटना ऊँचा करके उसपर लम्बी रक्खी। फिर एक हाथ नालके मुँहपर लगाया और दूसरेसे बन्दूकका घोड़ा दबा दिया। धायँ-से एक आवाज़ रात्रिकी निस्तब्धता भङ्ग करती हुई क्षितिजमें विलीन हो गई और गोली वागनरकी हथेलीको पार कर न मालूम किधर निकल गई ! बन्दूक का धमाका सुनते ही कई सैनिक और सैनिक-अफ़सर ख़ेमोंसे बाहर निकल आये। कप्तान हरमानने कुछ सैनिकोंको आस-पासके झुरमुटोंकी छानबीन के लिए भेज दिया और वागनरकी ओर बढ़ते हुए पूछा— "वागनर, क्या है ? किधरसे आवाज़ आई ?"

वागनरने दाहिनी ओर देखकर कहा—"उधर, उस झुरमुटमें से। शायद शत्रुओंने हमें...।" वागनरका वाक्य पूरा होनेसे पहले ही, कप्तान हरमान पिस्तौल और टॉर्च लेकर, तीरकी तरह उस ओर बढ़ गये।

अभी वागनरने सन्तोषकी एक साँस भी न ली होगी कि कर्नल हाइनरिख़ अपने ख़ेमेसे निकले और उसकी ओर बढ़ते हुए बोले— "किधर से गोली आई थी वागनर ?"

कर्नल हाइनरिख़को अपने सामने पाकर वागनर कुछ हतप्रभ-सा हो गया—कारण, उनकी क्रूरता, तीक्ष्ण-बुद्धि और दूरदर्शितासे जर्मन अफ़सर और सैनिक कायल ही न थे, बल्कि उनसे बुरी तरह डरते भी थे। उन्होंने वागनरकी बन्दूककी नाल पकड़ी, वह गरम मालूम हुई। तुरन्त उन्होंने टॉर्च जलाकर देखा, उसके मुँहके पाससे हलका-सा धुआँ भी

निकल रहा था। दूसरे ही क्षण टॉर्चकी रोशनी वागनरके चेहरेपर और फिर उसके बायें हाथकी हथेलीपर जिसमेंसे रक्त बह रहा था, जाकर ठहर गई। वागनर सिहर उठा।

पास खड़े हुए हान्ज़को सम्बोधित करके वे बोले—"हान्ज़, वागनर को गिरफ्तार कर लो और अभी हिरासतमें ले लो। सुबह इसे हमारे सामने पेश करना। और विकहेम, पहरा तुम सँभालो।"

विकहेमने कर्नल हाइनरिख़को फ़ौजी सलाम किया और वागनर के हाथसे बन्दूक लेकर पहरेपर जा डटा। हान्ज़ वागनरकी बाँह पकड़ कर उसे एक ओर ले चला।

—४—

लोहेकी दो पतली-पतली पटरियोंपर कोयलेसे भरा ठेला धकेलते हुए, जब वागनर लड़खड़ाता हुआ कारख़ानेकी भीतरी दालान में चला जा रहा था, तो न मालूम दालानमें कब ठेलेका ऊपरी किनारा, पास खड़े हुए एक सन्तरीके कोटसे रगड़ता हुआ निकल गया। यद्यपि इससे न सन्तरीको कोई आघात लगा था और न कोई अन्य नुक़सान ही हुआ था, फिरभी वागनर ने सानुनय कहा—"क्षमा कीजियेगा। मेरी असावधानीसे ही ऐसा हुआ। मुझे आपको सतर्क कर देना चाहिए था।"

वागनरका वाक्य पूरा हुआ ही था कि सन्तरीके हाथका हण्टर तड़ाक से वागनरकी पीठपर जा लगा और क्रुद्ध मुद्रासे सन्तरीने कहा—"सतर्क मैं तुझे किये देता हूँ, गधा, नालायक़, पाजी कहींका! अन्धा होकर चलता है!"

क्रोध और आवेशसे वागनरकी आँखें जल उठीं। उसके जीमें तो आया कि एक ही घूँसेसे मानवके इस छद्म-वेषधारी राक्षसको धराशायी कर दे; पर एक तो वह इस समय नज़रबन्द था और दूसरे कई दिनोंसे आधा-पेट भूखा रहनेके कारण, उसके शरीरमें वह पहलेका-सा बल भी नहीं रह गया था। अतः अपमानके इस विष-घूँटको पीकर, वह चुपचाप आगे बढ़ गया।

अभी वह कुछ ही क़दम आगे बढ़ा होगा कि किसीके भारी हाथका स्पर्श उसे अपने कन्धेपर महसूस हुआ। बिना रुके ही उसने सिर घुमाकर देखा और सहसा रुककर हर्षोद्रेकसे चिल्ला उठा—"तुम, हेरमान, तुम यहाँ? कब आये? कैसे हो? तुम्हारा यह हाल कैसे?"

"तुम्हारा हाल भी तो कुछ अच्छा नहीं है, वागनर!"

—भारी आवाज़में हेरमानने कहा और इधर-इधर देखकर एक हाथ से ठेलेको धकेलते हुए बोला—"रुको मत, चलते चलो; नहीं तो किसीको सन्देह हो जायगा।"

सिर हिलाकर अपनी स्वीकृति देते हुए वागनर भी ठेलेको धकेलते हुए आगे बढ़ गया। उसकी आँखोंमें भय स्पष्टतः झाँक रहा था। हेरमानने कहना शुरू किया—"मुझे यहाँ आये कोई बाईस दिन हुए हैं। आज सुबह ही तुम्हारा पता मालूम हुआ। युद्ध-क्षेत्रोंसे तुम्हारे कुशल क्षेमका पत्र हर पन्द्रहवें दिन मिल जाता था, इसलिए हम लोग तो समझ रहे थे कि तुम वहीं होगे।"

"मेरे कुशल-क्षेमका पत्र? हर पन्द्रहवें दिन? तुम क्या कह रहे हो, हेरमान?" वागनरने आश्चर्यसे आँखें फाड़कर पूछा।

"हाँ, हाँ, तुम्हारा पत्र! तुम्हें आश्चर्य क्यों हो रहा है? भूल गए क्या?"

"नहीं। अच्छा, मेरा आख़िरी पत्र तुम्हें कब मिला था?"

"यही कोई पचीस-छब्बीस दिन पहले।"

"हूँ!"

"क्या मतलब?"

"इसका मतलब पूछकर क्या करोगे, हेरमान?"

"आख़िर मालूम भी तो हो।"

"तो, सुनो हेरमान! पिछले तीन महीनोंसे मैं यहाँके नज़रबन्द-कैम्प

में हूँ और उससे कोई बीस दिन पहले तक मैंने एरीकाको कोई पत्र नहीं लिखा था।"

"यह तुम क्या कह रहे हो? तुम्हारी और एन्स्र्टकी चिट्ठी साथही साथ आया करती थी।"

"एन्स्र्टकी? हा...हा...हा...हा! बेचारा एन्स्र्ट!"

"यह तुम हँस क्यों रहे हो? मैंने खुद अपनी आँखोंसे एन्स्र्टकी माँ के पास उसकी चिट्ठियाँ देखी हैं। उसकी आख़िरी चिट्ठी भी, जो मेरे सामने आई थी, कोई बीस-बाईस दिन पहले ही आई होगी।"

"सुनो हेरमान, एन्स्र्टको मारे गए आज चार महीने होते हैं। गहरी चोटोंसे तड़प-तड़प कर मेरी आँखोंके सामने वह सदाके लिए सो गया।"

एक कँपकँपी हेरमानके स्वस्थ और सबल शरीरको झकझोर गई। हक्का-बक्का होकर उसने वागनरकी ओर देखा और लड़खड़ाती आवाज़ में पूछा—"यह क्या पहेली है, वागनर?"

"पहेली-वहेली तो कुछ नहीं, हमारे परिचित-परिजनोंको धोखा देने की अधिकारियोंकी एक चाल-मात्र है। मेरे पास भी एरीकाके ऐसे ही फ़र्जी पत्र पहुँचे थे; पर मैं किसी तरह उनकी असलियत भाँप गया और उनमें से एकका भी उत्तर नहीं दिया।"

सहसा हेरमान रुक गया, और उसकी आँखों में घृणा और क्षोभकी लपटें जल उठीं। उसकी बाँह पकड़ कर आगे बढ़ाते हुए वागनरने कहा—"चलो, क्रोध करनेका यह समय नहीं है। पिंजरेमें बन्द शेरके गुर्राने-गरजने का मतलब ही क्या? अच्छा यह बतलाओ, एरीका कैसे है? मेरी माँका क्या हाल-चाल है? तुम्हारी पत्नी तो ठीक है न?"

बिना कुछ उत्तर दिये हेरमान भारी क़दम उठा-उठाकर चलने लगा। उसकी आँखें भर आईं। चेहरा कुम्हला-सा गया। वागनरने एक प्रश्न-भरी दृष्टि उसपर डाली और फिर रुककर उसका कन्धा पकड़कर झक-

झोरते हुए पूछा—"तुम चुप क्यों हो ? बोलते क्यों नहीं ? एरीका तो मजे में है न ?"

इस समय ठेला भट्टीके द्वारपर आ लगा था। उसे वहीं छोड़कर वागनर और हेरमान एक ओर—जिधर कुछ अँधेरा-सा था—हटकर खड़े हो गए। वागनर बराबर उत्सुकता-भरी दृष्टि से हेरमानकी ओर देख रहा था। हेरमानके ओंठ काँप रहे थे और आँखोंसे आँसू बहने लगे थे। उसके मुँह से जैसे कोई शब्द निकल ही नहीं रहा था। वागनरसे अधिक न सहा गया। दोनों बाँहोंसे पकड़ कर हेरमानको झकझोरते हुए उसने चिल्लाकर पूछा—"हेरमान, मर गया क्या, जो तेरी ज़बान नहीं खुलती ! बताता क्यों नहीं, एरीका कैसे है ? वह जीवित भी है या नहीं ?"

"वह जीवित है, वागनर !"—सधी हुई-सी आवाज़में हेरमानने कहा—"पर तुम कितने क्रूर और निर्दय हो, जो एक भाईके मुँहसे ही उसकी बहिनकी कुकीर्त्ति-कथा सुननेको पागल हो रहे हो।"

"हेरमान, क्या हुआ एरीकाको ? जल्दी बताओ।" वागनर आवेश में चीख़ उठा।

"हाँ, कहता तो हूँ; जरा जी कड़ाकरके सुनना। तुम्हारे चले आने के बाद अनिवार्य युद्ध-सेवा कानूनके कारण एरीकाको नर्स होना पड़ा था। अस्पतालके कुछ डाक्टरोंकी कुदृष्टि उसपर पड़ी और वे उसे तंग करने लगे। एक रात एक डाक्टरने उसके साथ बलात्कार भी किया, जिसकी शिकायत करनेपर एरीकाको चेतावनी मिली कि 'भविष्यमें इस तरहकी शिकायतें करने पर उसे दण्ड दिया जायगा। सरकारी अफ़सरोंका मनोरंजन करना उसके कार्यका ही एक अंग है।' इसके बाद···एरीका अस्पतालमें एक तरहसे बंदिनी बनाकर रखी गई और उसे वेश्यासे भी बुरा जीवन बिताने पर मजबूर किया गया। और···"

सहसा हेरमान चुप हो गया। वागनरने रुँधे हुए गलेसे पूछा—"और फिर क्या हुआ ?"

"एक दिन हम लोगोंने सुना कि एरीकाके गर्भ रह गया है। वह उसने किसी तरह गिरवा दिया। इस राष्ट्रीय क्षतिके जुर्ममें उसे दंडित किया गया। मुझे उसका गर्भ गिरवानेमें सहायक होनेके जुर्ममें यहाँ भेजा गया है।"

"हूँ।" वागनर की आँखें झुक गईं और उनसे टप्-टप् आँसू गिरने लगे।

इसी समय किसी ने टॉर्चसे उनके मुँहपर रोशनी डाली और दूसरे ही क्षण दो कोड़े साँपकी तरह उनसे आ उलझे। सन्तरियोंने गरजकर कहा—"कामचोर कहींके, यहाँ आकर छिपे हैं।" और घसीटते हुए उन दोनोंको पकड़कर ले चले। वागनरकी आँखोंसे अब भी आँसू बह रहे थे।

(५)

"हेरमान, मूर्खता मत करो। मुँहसे केवल दो शब्द कहने में तुम्हारा बिगड़ता ही क्या है? क्यों व्यर्थ ज़िद करके अपनी जान गँवाते हो?"

"नहीं, नहीं, नहीं। एक बार कह जो दिया एरीका, मुझसे यह सब नहीं होगा। मैं माफ़ी क्यों माँगूँ। मेरा क़सूर क्या है?"

"वही तो मैं भी कहती हूँ कि तुम्हारा कोई क़सूर नहीं। फिर यहाँ सड़नेसे लाभ ही क्या? इसीलिए तो मैं कहती हूँ कि माफ़ी माँगकर घर चलो। तुम्हारे बिना माँका बचना सम्भव नहीं।"

"माँके प्राणोंका मोह मुझे अन्याय और अनीतिके सामने झुका नहीं सकेगा, एरीका! ऐसा करके क्या मैं उनकी कोख और दूध नहीं लजाऊँगा?"

"तुम यह क्या कह रहे हो हेरमान?"

"जो कह रहा हूँ, वह क्या तुम सचमुच नहीं समझ रहीं, एरीका? तब तो मुझे खेद है, तुम्हारा समय मैंने व्यर्थ ही नष्ट किया।"

"नहीं, नहीं, हेरमान,"—एरीका रो पड़ी—"मेरे साथ इतना कठोर व्यवहार न करो। मैं इतनी पतिता और मूर्खा तो नहीं हूँ। हाँ,

मेरा अपराध यह ज़रूर है कि मैं स्त्री हूँ, जिसका दूसरा नाम है दुर्बलता, और तुम पुरुष हो, जिसे परुष होते देर नहीं लगती।"

एक क्षण हेरमान चुप रहा। फिर भरी हुई आवाज़में बोला—"एरीका, अब तुम जाओ। माँसे कहना कि हेरमानने तुम्हें खोकर भी तुम्हारी अमूल्य थातीकी रक्षा की है—अन्याय और अनीतिके आगे उसने अपना सिर नहीं झुकाया। उनसे यह भी कह देना कि अब मुझसे मिलने की आशा छोड़ दें। यमलोकसे भी भला कोई जीवित लौटा है ? अच्छा, अब.तुम जाओ।"

आँखोंमें आँसू भरे, हेरमानके चिन्तासे मुरझाये हुए चेहरेकी ओर कातर भावसे देखती हुई एरीका उठ खड़ी हुई। हेरमान बड़ी मुश्किलसे अपने आँसुओंको रोक पा रहा था। उसके सीनेपर जैसे आज सैकड़ों शिलाएँ रख दी गई हों। अभी उसने द्वारकी ओर क़दम बढ़ाया ही था कि उसका एक साथी नज़रबन्द दौड़ता हुआ आया और हाँफते-हाँफते बोला—"हेरमान, हेरमान, प्यारे दोस्त, ग़ज़ब हो गया ! उफ़् !"

हेरमानने अपनी सजल आँखें आगन्तुककी आँखोंमें गड़ाते हुए पूछा—"क्या हुआ काण्ट, कुछ कहोगे भी ?"

"वह अपना एक साथी पागल हो गया था न......" हाँफते हुए काण्टने कहा और सहसा उसका गला रुँध गया।

दाँत पीसकर हेरमानने कहा—"हाँ, हो गया था, फिर क्या ? बात क्या है, साफ़-साफ़ कहो न !"

"न मालूम कैसे आज वह सहसा फिर यहाँ आ पहुँचा......"

काण्टकी बात को बीचमें ही काटते हुए हेरमानने लापरवाहीसे कहा—"आ गया होगा, इसमें इतने आश्चर्यकी क्या बात है ?"

"सिर्फ़ आ ही नहीं गया भाई !"—काण्टने एक ठण्डी साँस लेकर कहा—"अगर आही गया होता, तब तो कोई बुराई नहीं थी।"

"तब क्या हुआ, कहते क्यों नहीं ?" हेरमानने ज़रा कुण्ठित होकर कहा।

"अरे भाई, वह आज सहसा न जानें कैसे यहाँ आ पहुँचा और··· कारख़ानेकी भट्टीमें कूद गया। फिर क्या था, एक क्षणमें ही पतिंगेकी तरह सब कुछ राख हो गया।'

"काण्ट···काण्ट···"—एक ज़ोरकी चीख मार कर हेरमान अर्द्ध-मूर्च्छित हो वहीं पर गिर पड़ा। पास खड़ी एरीका सिरसे पैर तक काँप गई। उसने सजल आँखोंसे एक बार काण्टकी ओर देखा और फिर झुककर हेरमानका सिर सहलाने लगी। उसकी कुछ समझमें नहीं आ रहा था कि ऐसा कौन-सा व्यक्ति है, जिसकी आत्महत्या हेरमानको इतना दुःखी एवं विचलित कर सकती है।

कुछ क्षण बाद सहसा हेरमान उठ खड़ा हुआ और "मैं अभी आता हूँ" कहकर तेज़ीसे कमरेके दरवाजेसे बाहर हो गया।

एरीकाकी आँखें काण्टकी ओर फिरीं। वह चिन्ताका असह्य भार लिये अभी भी जड़ मूर्त्तिकी तरह खड़ा था। उसकी आँखोंमें धीरे-धीरे उमड़ते हुए आँसुओंको देखकर एरीकाकी उत्सुकता और भी बढ़ी और उसने साहस बटोरकर पूछा—"मुझे क्षमा करना काण्ट, क्या तुम उस पागल नज़रबन्द का नाम जानते हो ?"

"हाँ, हम लोग उसे वागनर कहकर पुकारते थे। पर तुम उसे कैसे जान सकती हो ?···तुमने तो शायद उसका नाम भी नहीं सुना···"

काण्ट अभी अपना वाक्य भी समाप्त नहीं कर पाया था कि एक तीखी और मर्मभेदी आवाज़में एरीका चीख उठी, "वागनर" और धड़ामसे वहीं गिर पड़ी।

काण्ट ज्योंका त्यों हतबुद्धि-सा अचल खड़ा था। उसके कानोंमें अबभी हेरमान और एरीकाके कण्ठ-स्वरका एक शब्द गूँज रहा था—"वागनर !"

शोध का परिणाम

काफ़ीका दूसरा प्याला खाली करके रखनेपर भी जब डाक नहीं आई, तो प्रो० अलेखेई आर्मियांस्कका धीरज छूट गया। कुछ अनमने-से होकर वह कमरेमें इधरसे उधर चहलक़दमी करने लगे। सहसा कुछ सोचते हुए-से वह रुके, और भारी आवाज़में पुकारा—"मारिया! बेटी मारिया पालाश्का!"

कुछ क्षण उत्तरकी प्रतीक्षामें वह चुप रहे, फिर कमरेसे हाल में आये। वहाँ भी मारियाको न देख, उसे पुकारते हुए वह बरामदेकी ओर बढ़े। किन्तु बरामदेमें पाँव रखते ही वह ठिठक गये। देखा, मारिया बरामदेकी सीढ़ीपर बैठी, दोनों घुटनोंपर कुहनियाँ रखे, हथेलियोंके बीच मुँह टिकाये, निर्निमेष दृष्टिसे, शान्त भावसे चमचमाते हुए काले सागरको निहार रही है। सागरकी लहरें मानों उससे मिलने के लिए होड़ बदकर दौड़ती चली आ रही थीं, पर बीच ही में ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी किनारोंसे टक्करा कर किसी अल्हड़ नवोढ़ाके मुक्त हास्य-सी बिखर जाती थीं। पहाड़ी के ढलावपर कहीं स्थिर गम्भीर भावसे खड़े देवदारुके वृक्ष सागर-लहरोंके इस अनन्त, अविश्रान्त खेलपर मानों मन-ही-मन मुस्करा रहे थे, तो कहीं श्वेत चम्पकके वृक्ष अपने मनोहारी फूलों और मांसल, चिट्टे पत्तोंको फहराकर मानो झूम-झूमकर नाच रहे थे! उनकी आम्ल, मादक गंध वातावरण में एक अनोखी मस्ती बिखेर रही थी।

प्रो० आर्मियांस्क चुपचाप आगे बढ़े, और मारियाके पास आकर बैठ गये। अपना बायाँ हाथ उन्होंने मारियाके सिरपर रखा, और दाहिने हाथमें उसका एक हाथ लेकर आश्वासन भरे स्वरमें बोले—"बेटी मारिया, देखता हूँ, आज सुबहसे ही तू कुछ खोई-सी है। भला सुनूँ तो, तुझे आखिर हुआ क्या है!"

तरल मोतियोंसे लबालब सीप-से दो बड़े, चमकीले नेत्र प्रो० आर्मि-यांस्ककी ओर घूमे, और दूसरे ही क्षण एक झटकेके साथ मारियाका सिर उनके कन्धेपर आ टिका। वह फफक-फफक कर रोने लगी।

प्रो० आर्मियांस्कने अपनी आँखोंमें उमड़ते हुए आँसुओंको रोकनेकी चेष्टा करते हुए कहा—"यह कैसा पागलपन है, मारिया ? छिः ! छिः ! तू क्या निरी बच्ची है, जो यों रोती है ?"

"पापा", काँपते हुए स्वरमें मारिया बोली—"आज न जानें मन कैसा हो रहा है। सोचती हूँ, शायद ईवान अब इस दुनियामें नहीं है। अगर होता, तो क्या वह पत्र भी न लिखता ?"

"बस, इतनी-सी ही बातपर यह ग़म-गिला है ! अरी, जैसी पगली तू है, वैसा ही पागल है तेरा भाई ईवान ! एक नम्बरका काहिल और गप्पी है वह शैतान ! चिट्ठी लिखनेकी भला उसे फ़ुर्सत कब मिलती होगी ?"

"नहीं, ऐसा वह कदापि न करेगा। वह किसीकी बरातमें नहीं, लड़ाईपर गया है। वहाँ उसकी काहिली और गप्पीपन सब दूर हो गये होंगे। इतना पाजी तो वह नहीं है, पापा !"

इसी समय "आर्मियांस्क ! ओ आर्मियांस्क दादा !" कहता हुआ डाकिया वासिली आ पहुँचा। पर आज न तो वह डाकियेकी वर्दी पहने था, और न उसके पास डाकका थैला ही था। एक हाथमें सफ़ेद काग़ज़ का एक टुकड़ा अवश्य था। उसे मारियाको दिखाकर वासिलीने कहा --"मारिया बेटी, यह लो ईवानकी चिट्ठी !"

वासिलीके हाथसे पुर्ज़ा छीनकर मारिया एक ही साँसमें उसे पढ़ गई। बच्चोंके-से मोटे-मोटे अक्षरोंमें पेंसिलसे लिखा था—"प्यारी बहन मारिया, मुझे खेद है कि कई आवश्यक कार्योंमें फँसे रहनेके कारण मैं तुम्हें अब तक पत्र न लिख सका। क्षमा करना ! मैं तुम्हें और पिताजीको हर घड़ी याद करता रहता हूँ। मैं मज़ेमें हूँ। तुम लोग किसी तरहकी चिन्ता न करना। तुम्हारा बहुत-बहुत प्यारा भाई, ईवान।"

मारियाकी सजल आँखें मुस्करा उठीं। पुर्जेको मोड़-माड़ कर दूर फेंकते हुए, उसने सहसा वासिलीकी दाढ़ी पकड़ ली, और बनावटी क्रोधके साथ उसे खींचते हुए बोली—"वासिली चाचा, तुम इतने शरारती कबसे हो गये ? क्या मैं तुम्हारे अक्षर भी नहीं पहचानती ? मुझे बनाने चले हो !"

वासिलीने, जो प्रो० आर्मियांस्ककी ओर देखकर आँखों ही आँखों में हँस रहा था, बनावटी गिड़गिड़ाहटके साथ कहा—"देखो, दादा, ज़रा अपनी लड़कीकी करतूत देखो ! मैंने तो ईवानकी चिट्ठी लाकर दी, और मेरे साथ यह गुस्ताखी !"

प्रो० आर्मियांस्कने मारियाके हाथसे वासिलीकी दाढ़ी छुड़ाते हुए कहा—"अच्छा, इस बार इस बूढ़े मूर्खको माफ़ कर दो, मारिया ! पर, वासिली, आज डाक अभी तक नहीं आई ?"

"हाँ", ज़रा गम्भीर होकर वासिलीने कहा—"और शायद अब वह न आये !"

"न आये ! क्या मतलब है इसका ?"

"यही कि अब उसे बन्द समझो, जर्मन सेनाएँ बड़ी तेज़ीसे आगे बढ़ रही हैं। यातायातकी गड़बड़ीसे अब डाक-व्यवस्था नियमित नहीं रह सकती।"

"हूँ !" कह कर प्रो० आर्मियांस्क कुछ गम्भीर हो गये। अभी वह कुछ कहने ही जा रहे थे कि अचानक हवाई हमलेकी सूचनाका भोंपू बज उठा। तीनों उठ कर, बिना कुछ कहे-सुने, जल्दीसे पिछवाड़ेकी ओर बने रक्षा-गृहमें भाग गये।

—२—

सोवियत्-सायंस-एकेडेमीके नक्षत्र-विज्ञान-विभागके अध्यक्ष डा० निकोलायविचका पत्र देते हुए कप्तान इलेंकफ़ने कहा—"मैंने टेलीफ़ोनपर आपसे जिस पत्रका उल्लेख किया था, वह यह है। पहले आप इसे पढ़ लें, फिर मैं इस सम्बन्धमें आपसे कुछ बातें करूँगा।"

पत्रको पढ़कर चश्मेके केसके नीचे दबा कर रखते हुए, प्रो० आर्मि-यांस्कने कहा—"डा० निकोलायविच मेरे गहरे दोस्तोंमें से हैं। पता नहीं वह मुझे अपनेसे भी अधिक बूढ़ा और निर्बल कैसे समझने लगे हैं! ख़ैर, तुम क्या कहना चाहते हो, इलेंकफ़?"

"जी, मुझे आपसे सिर्फ़ यही अनुरोध करना है कि सोवियत् सायंस-एकेडेमीके साथ ही लाल सेनाके अधिकारी भी चाहते हैं कि फ़िलहाल आप याल्तासे कहीं अन्यत्र चले जायँ। सेनाधिकारी इस स्थानको अब अधिक समय तक सुरक्षित नहीं समझते।"

"न समझें! पर मैंने किसीका क्या बिगाड़ा है, जो मुझे कोई खा जायगा? मैं जो शोध-कार्य कर रहा हूँ, क्या उसका महत्त्व सिर्फ रूसके लिए ही है? विज्ञान राष्ट्रीय और भौगोलिक सीमाओंको नहीं जानता, इलेंकफ़!"

"पर आप बर्बर नात्सियोंको नहीं जानते! उनके सामने आज कला, साहित्य और विज्ञानका कोई मूल्य अथवा महत्त्व नहीं रह गया है! मनुष्यके रूपमें आज वे शैतान बन रहे हैं!"

"मैं इसपर विश्वास नहीं कर सकता। तुम कम्यूनिस्त हो, इसलिए प्रोपेगेंडा करना खूब जानते हो। पर यह तुम्हरा भ्रम है, इलेंकफ़। सभी जर्मन बर्बर और नात्सी दस्यु तो नहीं हैं!"

"प्रो० आर्मियांस्क, भ्रममें मैं हूँ या आप, यह तो समय ही बत-लायेगा। पर इसके लिए हम आपका बलिदान करनेको तैयार नहीं। आप-का जीवन रूसके ही नहीं, विश्वके लिए भी आवश्यक एवं मूल्यवान है।"

"मेरे जीवनका मूल्य और महत्त्व विज्ञानके उस काममें निहित है, जिसके लिए मैं पिछले २५ वर्षोंसे खप रहा हूँ! कायर की तरह प्राणोंके मोहसे भाग जाना मेरे अनुरूप न होगा। मैंने जो वर्षों तक येवपातोरिया, सेवेस्तपल, कर्च, फिदोसिया और सूदाककी ख़ाक छान कर याल्तामें अपनी

प्रयोगशाला क़ायम की है, वह इसलिए नहीं कि एक दिन प्राण बचानेको मैं इसे छोड़ कर भाग जाऊँ !"

"लेकिन आपके कामके लिए तो एकेडेमीने लेनिनग्राडमें सारी व्यवस्था कर दी है। फिर आपको वहाँ चलनेमें क्या आपत्ति है ?"

"बताऊँ, आपत्ति क्या है ! कहकर प्रो० आर्मियांस्कने अपनी मेज़का बायाँ दराज़ खोला, और उसमें से एक पुराना-सा मोटा और मुड़ा हुआ काग़ज़ निकाल कर कप्तान इलेंकफ़की ओर बढ़ा दिया। फिर बोले—"लो, इसे पढ़ देखो।"

कप्तान इलेंकफ़ने खोलकर काग़ज़को पढ़ना शुरू किया ! उसमें लिखा था—"मेरे अज्ञात, अपरिचित उत्तराधिकारी ! कल १७ जुलाई, १६६६ ई० को मैंने पूर्वी क्षितिजपर आन्द्रोमडा नक्षत्र-समूहके निकट प्रकाश की एक तिरछी रेखा देखी, जो तलवारके आकारकी थी। काफ़ी सोच-विचारके बाद मैं इस निष्कर्षपर पहुँचा हूँ कि यह एक बड़े नक्षत्रकी दुम है। बहुत हिसाब एवं गणनाके बाद मैंने इसका नाम 'पर्सीफ़न' रखा है। यह २४५ वर्षोंमें अपना रूप स्पष्ट एवं सम्पूर्ण करेगा, अर्थात् १६४१ में यह अपने पूर्ण रूपमें फिर दिखाई देगा। तब मानवोंकी आशाओंके लिए इसकी फिर गणना करना।—पादरी आर्नालियस देर्फेल, प्रुशियाके बादशाहका नक्षत्र-विज्ञानका शिक्षक, बुर्ज़बाख़। १७ जुलाई, १६६६ ई०।" ('दि क्रीमियन स्काई से—लेखक।)

पढ़ लेनेके बाद कप्तान इलेंकफ़ने काग़ज़ प्रो० आर्मियांस्कको लौटा दिया। उसकी समझमें नहीं आया कि प्रोफ़ेसरसे क्या कहे। वह उठ खड़ा हुआ, और विनम्र भावसे बोला—"आपके कामका महत्त्व मैं कम नहीं कूतता, प्रो० आर्मियांस्क, पर नात्सी-दस्यु इसे नहीं समझेंगे। आज वे मानव-रक्तके प्यासे हो रहे हैं !"

"हो सकता है, तुम्हारी ही बात ठीक हो, कप्तान" कप्तान इलेंकफ़-को द्वारतक पहुँचाने आते हुए प्रो० आर्मियांस्कने कहा—"पर मैं अपने

कर्त्तव्यसे मुख मोड़ना नहीं चाहता। मेरे कामका महत्त्व रूस ही नहीं, विश्व के लिए अमित है, और जर्मनी विश्व से बाहर नहीं है।"

कप्तान इलेंकफ़ने प्रो० आर्मियांस्कका हाथ अपने हाथमें लेकर बड़ी भावुकताके साथ दबाते हुए, श्रद्धा, एवं स्नेह-भरे स्वरमें कहा—"आपका साहस, विज्ञान-प्रेम और कर्त्तव्य-परायणता सराहनीय है, प्रोफेसर! मैं आपके कार्यकी हृदयसे सफलता चाहता हूँ।" और यह कहकर वह चला गया।

—२—

प्रयोगशालाकी मेज़पर केवल एक मोमबत्ती जल रही थी। उसीके धुँधले प्रकाशमें अपने चारों ओर नक्शे और गणनापुस्तकें फैलाये प्रो० आर्मियांस्क कभी पेंसिलसे कुछ लिखने लगते थे और कभी मेज़पर लगी विशाल खुर्दबीनसे पूर्वी क्षितिज के आकाशको देखने लगते थे। खुर्दबीन से देखते-देखते सहसा उन्होंने आँखें हटा लीं, और हाथकी पेंसिलको मेज़ पर पटक कर पुकारा—"मारिया! बेटी मारिया!"

दूसरे कमरेका पर्दा हटाकर मारिया हॉलमें आयी, और प्रश्न-भरी दृष्टिसे प्रो० आर्मियांस्ककी ओर देखने लगी। प्रोफेसरने कुछ खिन्न स्वरमें पूछा—"आज खुर्दबीनका शीशा अच्छी तरह साफ़ किया था, मारिया?"

"जी हाँ, पापा, अभी शामको ही साफ़ किया था।"

"खाक़ किया था! फिर उससे ठीक दिखाई क्यों नहीं देता?"

"ज़रा देखूँ तो, क्या गड़बड़ी है"—यह कहकर मारियाने नज़दीक आ, खुर्दबीनकी नालको अपनी दाहिनी आँखके पास ले जाकर देखा। उस समय आकाश तारोंसे भरा था, पर खुर्दबीनसे एक भी तारा नजर नहीं आ रहा था—मानो गहरे, घने बादलोंने तारोंको ढँक लिया हो। उसने खुर्दबीन के मुँहको धीरे-धीरे दक्षिण-पश्चिमकी ओर घुमाया। उसे जहाँ-तहाँ कुछ तारे दिखाई दिये, और दाहिनी ओरसे तेज़ीसे बढ़ते हुए धुएँके

घने काले बादल छाते हुए-से दीख पड़े। कुछ ही क्षणोंमें तारे ढँक गये, और कुण्डलाकार धुआँ ऊपर एवं चारों ओर फैल गया।

खुर्दबीनसे आँखें हटाकर ज़रा डरी हुई-सी आवाज़में मारियाने कहा—"पापा, खुर्दबीनका शीशा तो साफ़ ही है, पर गहरे काले धुएँने क्षितिजको ढँक लिया है। दक्षिण-पश्चिमकी ओरसे वह बढ़ रहा है।"

"क्या कहा?" प्रो० आर्मियांस्क जैसे एकबारगी चौंक पड़े। "धुआँ! गहरा काला! भला यह क्या बला है?"

मारिया कुछ कहे, इससे पहले ही तटपर से रूसी तोपखानेकी तोपोंने सर्चलाइटकी तेज़ रोशनीकी सहायतासे गोले दागने शुरू किये, और जंगलके हवाई-अड्डे से उड़कर लाल सेनाके बम-वर्षक दक्षिण-पश्चिमकी ओर झपटे। इसी समय फिर हवाई-हमलेकी सूचनाका भोंपू बज उठा। मारिया के कन्धेका सहारा लेते, प्रो० आर्मियांस्क उठे, और धीरे-धीरे रक्षा-गृहकी ओर चले।

रक्षा-गृहमें जानेके कुछ ही क्षण बाद आस-पास ज़ोरोंकी बम-वर्षा होनेका शब्द सुनाई पड़ने लगा। एक बमका विस्फोट तो इतने निकट हुआ कि प्रो० आर्मियांस्कने समझा, जैसे उनकी प्रयोगशाला ही उड़ा दी गई हो पर बिना 'ऑल क्लियर' हुए वह बाहर आकर कुछ देख भी नहीं सकते थे। एक गहरा आघात उनके मनको लगा। और वह सोचने लगे, 'यदि प्रयोगशाला नष्ट कर दी गई होगी, तब?' और फिर उनकी आँखें मारियाकी ओर फिरीं। आज वह पिताकी नहीं, किसी और ही दृष्टिसे उसे देख रहे थे। उसका सौन्दर्य, उसका स्वास्थ्य, उसकी सुडौल, सुगठित देह, मानो आज उनकी आँखोंमें शूल-से चुभ रहे थे। हृदयके साथ ही उनकी आँखें भी भर आईं। अँधेरेमें उनके होंठ कुछ हिले, मानो कह रहे हों—'अपने स्नेहकी इस अमूल्य थातीको जर्मन भेड़ियोंके हाथोंमें कदापि नहीं पड़ने दूँगा, चाहे मुझे स्वयं गला घोंटकर इसे मार ही क्यों न देना पड़े।' आज प्रयोगशालासे अधिक उन्हें मारियाकी चिन्ता हो रही थी।

सहसा मारियाका ठंडा, कोमल हाथ प्रो० आर्मियांस्कके हिलते हुए होठोंसे छू गया। दोनों एकबारगी सिहर उठे। फिर मारियाने दबी-सी आवाज़में पूछा—"आप कुछ कह रहे थे क्या, पापा?'

"नहीं, नहीं, नहीं! कुछ भी नहीं! हाँ, मैं तुझसे पूछना चाहता था कि यहाँ तुझे डर तो नहीं लग रहा है, बेटी?"

"यहाँ डर भला किस बातका? इसका तो नाम ही रक्षा-गृह है। और फिर आप जोमेरे इतने निकट हैं?"

"हाँ, ठीक है, ठीक है!" कुछ अन्यमनस्क भावसे प्रो० आर्मियांस्क ने कहा, और चुप हो रहे।

इसी तरह बैठे-बैठे रात खत्म हो गई। पौ फटने तक भी 'ऑल क्लियर' नहीं हुआ, तो प्रोफेसरको कुछ विस्मय हुआ। वह बाहर निकल आये। प्रयोगशाला के द्वारपर पहुँच कर उन्होंने देखा—कई जर्मन सैनिक हॉलमें घूम-घूमकर इधर-उधर खाना-तलाशी-सी ले रहे हैं। एक मेज़पर पड़ी उनकी गणना-पुस्तकों को उलट-पुलट रहा है। प्रोफेसर सीधे उसीकी ओर गये। उन्हें देखकर सैनिकने संगीन लगी बन्दूक उनकी तरफ़ की, और कड़क कर कहा—"हाथ ऊपर करो!"

प्रोफेसरके हाथ मानो अनायास ऊपर उठ गये। सैनिकने संगीनकी नोंक उनके पेटसे छुआते हुए पूछा—"कम्युनिस्त?"

"नहीं!" शुद्ध जर्मनमें दृढ़ता के साथ प्रोफेसरने कहा।

"ओह! तो तुम जर्मन भी जानते हो?" सैनिकने एक क्रूर मुस्कराहट के साथ कहा—"कौन? यहूदी हो?"

"नहीं!" उसी दृढ़ता के साथ प्रोफेसरने उत्तर दिया।

इसी समय एक दूसरे सैनिकका घूँसा उनकी नाकपर आकर बैठा, और खून बहने लगा। उसने कर्कश स्वर में कहा—"ज़रा होशसे बात

करो ! तुम एक जर्मन फौजी अफ़सर से बातें कर रहे हो ! 'नहीं, नहीं' काफ़ी नहीं !"

पहले सैनिकने फिर पूछा—"तुम रूसी खुफिया हो ?"

"नहीं !" उसी दृढ़तासे प्रोफेसर आर्मियांस्कने कहा।

"तब तुम क्या हो ?" गरजकर उसने पूछा।

"मैं हूँ सोवियत्-साइंस-एकेडेमीका एक सदस्य, नक्षत्र-विज्ञानका एक अध्यापक, शोधक।"

"ओह, यह मुँह और साइंस !" कह सैनिकने बन्दूक मेज़पर रख दी, और प्रो० आर्मियांस्कके पास आकर बोला—"इन चालोंसे तुम बच नहीं सकते, चालाक बुड्ढे ! सच-सच बताओ कि तुम कौन हो, वर्ना हम तुम्हारी चमड़ी उधेड़ देंगे !"

प्रो० आर्मियांस्कने कोई उत्तर नहीं दिया। सैनिकने उनकी छाती पर एक घूँसा मारकर कहा—"मेरी बातका जवाब दो ! समझे ? मैं तुमसे बात कर रहा हूँ !"

"मैं जवाब दे चुका हूँ ! मैं झूठ नहीं बोलता !"

"ओह, बड़े सत्यवादीके बच्चेहो ! सुनो, इतने सस्ते नहीं छूटने पाओगे ! एक शर्त्तपर हम तुम्हें बख्श सकते हैं—हमें यह बतला दो कि यहाँ आस-पास लाल सेनाकी चौकियाँ और डेरे कहाँ-कहाँ हैं और उनके मार्ग किस-किस तरफ़ हैं !"

"यह सब मैं कुछ नहीं जानता। मुझे कुछ पता नहीं।"

इसी समय पूरे ज़ोरके साथ बन्दूकके कुन्देका एक ज़ोरदार धक्का प्रोफेसर के सीनेपर आकर लगा, और वह बेहोश होकर वहीं गिर पड़े।

—४—

जब प्रोफेसरको होश आया, तो उन्होंने देखा कि वह किसीकी गोद में सिर रखे लेटे हैं, और कोई गर्म पानीमें रूई भिगो-भिगोकर उनके चेहरे का खून पोंछ रहा है। बड़ी तकलीफसे उन्होंने पलकें ऊपर उठाईं,

और देखा—एक हाथसे वासिली अपनी आँखें पोंछ रहा है, और दूसरेसे उनके चेहरेपर का खून; उसके सिरपर मैले कपड़ेकी एक पट्टी बँधी है, तथा बाईं आँखके नीचे एक हरा-नीला निशान उभर आया है, और उसके आस-पास का हिस्सा सूज गया है। प्रोफेसर ने बड़ी व्यथा के साथ कहा—"भाई वासिली, तुम यहाँ कब आये? मारिया कहाँ है? और फिर इधर-उधर नज़र घुमाकर कहा—"और मेरी प्रयोगशालाका सब सामान क्या हुआ? मेरी वह विशाल खुर्दबीन?"

"धीरज धरो, आर्मियांस्क दादा, ज़रा दिलको कड़ा करो! घबराने से काम नहीं चलेगा। याल्तापर जर्मनों का अधिकार हो गया है!"

"यह तो देख ही रहा हूँ—सब कुछ देख रहा हूँ, भाई!" फिर सहसा जैसे कुछ याद कर प्रो० आर्मियांस्क बोल उठे—"मारिया कहाँ है?"

वासिली ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसकी आँखोंसे अजस्र अश्रु-धारा बह चली। उसे चुप देख कराहते हुए प्रोफेसर उठ बैठे, और दाँत पीसकर बोले—"वासिली, मेरे सवालका जवाब दे! बता, मारिया कहाँ है? बोल, जल्दी बोल!"

"उसे भूल जाओ, दादा!" काँपते हुए होंठोंसे वासिलीने कहा—"वह अब इस दुनियामें नहीं है!"

"नहीं है, नहीं है वह! क्यों यह कैसे हो सकता है, वासिली? मुझे जल्दी बता, बात क्या है?"

आर्मियांस्क दादा, जी कड़ा करके सुनो। पहले तो न जानें कितने नात्सी गुण्डोंने उसके साथ बलात्कार किया, और फिर उसके शरीर को संगीनोंसे छेद डाला। उसकी लाश मैंने तुम्हारे रक्षा-गृहके बाहर ही गढ़ा खोदकर दफना दी है। तुम अपनी आँखोंसे शायद उसे देख भी नहीं सकते थे। ओह, कितना वीभत्स हो गया था उसका चेहरा! मैं तो देखकर काँप गया?"

"हाय! बेटी, मारिया!" यह कह कर प्रो० आर्मियांस्क वासिली

की गोद में मुँह छिपा फूट-फूटकर रोने लगे। उन्हें रोता देखकर वासिलीका अश्रु-प्रवाह और भी तीव्र हो गया।

इसी समय दो जर्मनोंने प्रयोगशालाके हॉलमें प्रवेश किया। अब उनके पास बन्दूकें नहीं थीं। कमरसे चमड़े के केसमें बन्द पिस्तौलें लटक रही थीं। उनमें से एकने आगे बढ़कर कहा—"क्या हो रहा है, प्रोफेसर?"

प्रोफेसरने क्रोध, घृणा और उपेक्षाकी दृष्टि से एक क्षण उन्हें देखा, और फिर चीख उठे—"मेरी आँखोंके आगे से हट जाओ, शैतान के बच्चो, कमीने कुत्तो! मुझे नहीं मालूम था कि तुम इतने गिर चुके हो।"

"ओह! तो यह गुस्सा उतारा जा रहा है! खैर कोई बात नहीं। पर मैं तो सुलह और मैत्रीका प्रस्ताव लेकर आया हूँ।" और एक क्षण चुप रहने के बाद प्रो० आर्मियांस्कके पास आकर सैनिकने कहा—"इस कस्बेमें तुम्हारे सिवा कोई जर्मन नहीं जानता, प्रोफेसर! अतः मैं चाहता हूँ कि तुम हमारे दुभाषियेका काम करो। यह काम बहुत थोड़े समयका होगा। बाकी समय में तुम अपना शोध-कार्य कर सकते हो। हम तुम्हारा सामान लौटा देंगे। तुम्हें कोई कष्ट न होगा।"

"यह मुझसे न हो सकेगा!"

"मगर क्यों? देखो, तुम तो कम्युनिस्त नहीं हो। पढ़े-लिखे और समझदार हो। कम्युनिस्त न ईश्वरको मानते हैं, न धर्मको। उन्होंने तुम्हारी भी क्या क़द्र की है? हम इन्हीं आततायियोंके चंगुलसे रूसको मुक्त कराना चाहते हैं! इसमें तुम हमारी बहुत-कुछ सहायता कर सकते हो।"

प्रोफ़ेसरने इस बकवासका कोई उत्तर नहीं दिया। इसपर सैनिकने बूटकी एक ज़ोरदार ठोकर वासिलीकी गोदमें सिर रखकर पड़े हुए प्रोफ़ेसर के कन्धेपर लगाई, और कड़क कर कहा—"गुस्ताख़ बुड्ढे! सुनता नहीं, मैं क्या पूछ रहा हूँ?"

कराहकर प्रोफ़ेसरने अपना सिर वासिलीकी गोद में छिपा लिया। इसी समय दूसरी ठोकर उनकी पीठपर लगी। सैनिकके बूटकी नाल और

कीलें उनकी पतली कमीज़को फाड़कर पीठकी चमड़ीको छीलती हुई ऐसी फिसल गई, मानों बाघने अपने पंजेसे नोंच लिया हो! पहले छिले हुए स्थानपर तेज़ जलन हुई, और फिर खून निकल आया। एक दबी हुई कराह उनके मुँहसे निकल गई, और वह अधमरेकी तरह वहीं निश्चेष्ट पड़ रहे। एक सैनिक वासिलीको रास्ता बतानेके लिए घसीटता हुआ अपने साथ ले गया।

कई घण्टोंतक प्रो० आर्मियांस्क उसी स्थितिमें अचेत पड़े रहे। कुछ सचेत होनेपर जब बड़ी कठिनाईसे उन्होंने करवट बदली और बरामदे के बाहरकी ओर देखा, तो आकाशमें तारे जगमगा रहे थे। पता नहीं रात कितनी बीत चुकी थी। एक ओर भूखसे उनका पेट जलने लगा था, और दूसरी ओर सारा शरीर दर्दसे फटा जा रहा था। उन्हें ऐसा जान पड़ रहा था, मानों शरीरका जोड़-जोड़ खुल गया हो। सहसा उन्हें याद आई 'पर्सीफ़न' की। पर दूसरे ही क्षण अपनी साधन-हीनतापर वह रो पड़े। न आज उनके पास उनकी गणना-पुस्तकें थीं, न तिथि जाननेका पंचांग और न समय देखने की घड़ी। इन सबसे बढ़कर जिस चीज़ का अभाव उन्हें खल रहा था, वह थी उनकी विशाल खुर्दबीन। यह खुर्दबीन उन्हें ड्रेसडन (जर्मनी) के नक्षत्र-विज्ञान-संघने १६२२ में यह कह कर भेंट की थी कि प्रसिद्ध जर्मन नक्षत्र-विज्ञानवेत्ता जोहान्स केपलर इसीसे शोध-कार्य किया करते थे। पर केपलरके उत्तराधिकारी? छिः! छिः! वे आज कितने गिर चुके थे। क्या उन्हें कोई सभ्य और सुसंस्कृत कहेगा?

मानसिक द्वन्द्वमें फँसे प्रो० आर्मियांस्क उठ बैठे। उन्होंने उठ खड़े होनेकी चेष्टा की, पर खड़े होनेकी शक्ति उनमें रह ही नहीं गई थी। अतः घसिटते-घसिटते वह हॉल पारकर बरामदेमें आये। फिर सीढ़ियोंसे नीचे उतरे, और बाईं ओरकी चट्टानकी ओर बढ़े। काफ़ी तकलीफ़के बाद वह उसकी सतहपर पहुँच पाये। वहाँ पहुँच कर, उन्होंने अपनी आँखोंके आँसू पोंछे, और बड़ी आशा-भरी दृष्टिसे दक्षिण-पूर्वकी ओर देखा। पर

उनकी क्षीण दृष्टि 'पर्सीफ़न' तो क्या, साधारण नक्षत्रोंको भी स्पष्ट नहीं देख पाई। प्रोफ़ेसरको एक गहरा आघात लगा। पचीस वर्षके उनके शोध-कार्यपर सहसा पानी फिर गया! आज जब चौथाई शताब्दीके परिश्रमका परिणाम शायद वह अपनी आँखों देख पाते, उनसे सब-कुछ छीन लिया गया था। पर अपनी व्यथा वह किससे कहते? उन्हें ऐसा महसूस हुआ, मानो उनकी यह मर्मव्यथा सारी कटुताके साथ उनके कण्ठसे फूट पड़ना चाहती हो। पर आज जैसे उनमें रोने-चिल्लानेकी शक्ति भी नहीं रह गई थी!

अचानक दाहिनी ओरसे किसीने सर्चलाइट-द्वारा उनपर रोशनी डाली। उनकी अधखुली, सजल आँखें उधर फिरीं, और दूसरे ही क्षण चौंधियाकर नीचे झुक गईं। इसी समय एक गोली सनसनाती हुई उनकी कनपटीसे आर-पार निकल गई, और प्रोफेसर आर्मियांस्क सदाके लिए वहीं ढेर हो गये।

जय

अधनंगे, अधमूखे, अधमरे उन कुरूप कङ्कालोंको सम्बोधित कर जर्मन-बर्गोमास्टर चिल्ला उठा—"समझ गए न; मै फिर दोहरा देना चाहता हूँ कि यह सारा हल्का फ़ौजी-क्षेत्र घोषित किया जा चुका है। अगर अपना भला चाहते हो, तो एक घण्टेके अन्दर-अन्दर इसे ख़ाली कर दो; वर्ना इसीके साथ ज़िन्दा दफ़ना दिये जाओगे। समझे?"

और यह कहकर बर्गोमास्टरने कठोर मुख-मुद्रा बना इस तरह अपनी बत्तीसी भींच ली, मानो यमके जबड़े अपना भक्ष्य पाकर जुड़ गये हों। फिर उसने एक खूनी दृष्टि, जिसमें से घृणा, क्रोध और क्षोभके शोले-से निकल रहे थे, उन निरीह, निरस्त्र, निःसहाय कंकालोंपर डाली। सबके सब ऐसे गुम-सुम खड़े थे, मानो मिट्टी-पत्थरके पुतले हों। उनकी आँखें इतनी नीचे झुकी जा रही थीं, जैसे पृथ्वीकी परतोंको भेदती हुई पातालमें धँसी जा रही हों। अधिकांशके चेहरोंपर आँखोंकी जगह पुतलियोंपर चढ़ी पलकें ही नजर आ रही थीं।

सहसा अपनी झुकी हुई गर्दन धीरे-धीरे ऊपर उठाते हुए एक बुढ़ियाने, जिसके होठों और आँखोंमें उमड़े आँसुओंमें मानो कँपकँपीकी होड़-सी लग रही थी, डरते-डरते मुँह खोला—"पर हेर मास्टर, मैं कई दिनों से भूखी और बीमार हूँ। मेरे दोनों बच्चे मौतकी घड़ियाँ गिन रहे हैं। भला एक घण्टेमें मैं कहाँ और कैसे......"

बुढ़ियाका वाक्य अभी पूरा भी न हो पाया था कि बर्गोमास्टरकी बग़लमें साँपकी तरह कुण्डली मारे बैठा चाबुक निकला और सड़ाकसे शब्दके साथ बुढ़ियाके ललाट, नाक, बाएँ गाल, कन्धे और छातीके खुले हुए भागपर एक नीली-सी धारी खींचता हुआ फिर अपने स्थानपर लौट

आया। सबके कन्धे और झुकी हुई गर्दनें इस तरह काँप गईं मानो कोई भूडोल या बिजलीका कड़ाका हुआ हो। एक हल्की-सी चीख़ बुढ़ियाके दुर्बल कण्ठसे निकली और वह जहाँ खड़ी थी, वहीं ढेर हो गई। उस क्षीण आहपर एक बड़े पर्वत-खण्डकी तरह चकनाचूर होते हुए बर्गोमास्टरका उच्च स्वर फिर गूँज उठा—"ख़बरदार, अगर किसीने ज़बान भी हिलाई तो! मेरा हुक्म आख़िरी हुक्म है। जर्मनोंके हुक्म कभी सुधार-शंकाओंके लिए नहीं होते। वे पूरा आज्ञा-पालन चाहते हैं—१०० फ़ी-सदी, आँखें मूँदकर और ज़बान दाँतोंके बीचमें दबाकर। समझे!"

उपस्थित व्यक्ति बेंतकी तरह एक बार फिर काँप उठे। फिर दाहिना हाथ ऊपर उठाकर बर्गोमास्टर चिल्लाया—"हेल हिटलर!" और काँपते हुए कुछ हाथ ऊपर उठे, कुछ आधे उठे तथा जो कुछ नहीं उठे, वे उठने-लायक़ रह ही नहीं गए थे। धम्म-से बर्गोमास्टर पिछली सीटपर बैठ गया और धूल उड़ाती हुई मोटर वहाँसे चल पड़ी। एक साथ सबकी आँखें मोटरके पीछे उड़ती हुई धूलकी ओर उठीं और दूसरे ही क्षण सबके चेहरों पर एक दबी हुई-सी मुस्कराहट खेल गई। गिरी हुई बुढ़िया अपने कपड़े झाड़ती हुई कराहकर उठी और एक क्रूर मुस्कानके साथ व्यंगपूर्वक बोली "वाह रे आर्योंकी बहादुरी! पता नहीं, ये शैतान कब तक हमारे सिर-आँखों में इस तरह धूल झोंकते और हमें सताते रहेंगे? न-जानें कब तक हमें ये ज़ुल्म-ज़्यादतियाँ सहनी होंगी?"

"जब तक लाल-सेना नहीं आ जाती!"—पास खड़े एक ८ वर्षीय बालकने सहज भावसे कहा और इस तरह खिलखिलाकर हँस पड़ा, मानो शान्त वातावरणमें कोई झुनझुना बज उठा हो! आश्चर्य और प्रसन्नता से सबके चेहरे खिल उठे और एक साथ सबकी आँखें बच्चेकी ओर फिरीं। पर यह क्या? बच्चेके हाथमें एक नयी पँचनली पिस्तौल देखकर सबके सब अवाक्-अचम्भित रह गए। उसकी भूरी आँखोंमें सन्तोष और प्रसन्नता खौलते हुए पानीकी तरह उछल रहे थे? फटे-मैले चिथड़ोंसे ढँका

स्वस्थ गौर शरीर ऐसा दिखाई पड़ रहा था, मानो संगमरमरकी कोई सुघड़ मूर्ति जहाँ-तहाँसे मैली हो गई हो। पिस्तौलको वह अपने छोटे-छोटे हाथोंमें उछाल-उछालकर इस तरह खेल रहा था, मानो कोई खिलौना हो।

सबको आश्चर्यसे अपनी ओर घूरता देखकर बच्चेने स्वाभाविक मुस्कराहटके साथ कहा—"तुम सब लोग क्या यही ताज्जुब कर रहे हो कि यह पिस्तौल मेरे पास कहाँसे और कैसे आई? भई वाह, क्या यह भी कोई इतने अचरजकी बात है? जब बर्गोमास्टर खड़ा हुआ अपना हुक्म पढ़ कर सुना रहा था, सबकी तरह मैं भी उसे ध्यानसे सुन रहा था। सहसा मेरी नज़र उसके पीछे, सीटके कोनेमें, पड़ी हुई इस पिस्तौलपर गई और धीरे-धीरे आगे बढ़कर मैंने इसे चुपके से उठा लिया। खेद है कि यह खाली मिली, नहीं तो बुढ़िया पर कोड़ा फटकारनेके पहले ही बर्गोमास्टरका खात्मा हो जाता!"

सबके सब बड़े जोरसे ठहाका मार कर हँस पड़े और एक साथ कई लोग बच्चेको चूमनेके लिए दौड़े। जर्मनोंका अधिकार होनेके बाद रूज़िहन के बचे-खुचे लोग शायद आज पहली बार दिल खोलकर हँसे थे।

(२)

"सात बरसकी इस छोकरीने तो नाकोंदम कर रखा है। कभी कहती है, सारा शहर जल रहा है। कभी कहती है, लाल-सेना आ गई। कभी कुछ कहती है, कभी कुछ। है तो सात बरसकी; पर बातें ऐसी करती है, जैसे सत्तर सालकी दादी हो!—कहते हुए ईगोर यारत्सेफ़ने एक लम्बी जँभाई ली। अपने भग्नावशेष घरकी दीवारके साथ पीठके सहारे बैठे-बैठे उसने न मालूम कितने दिन और रातें बिता दी हैं। आसपासका मलवा हटाकर उसने अपने और अपनी एकमात्र बची सात-वर्षीया कन्या ऊन्या के बैठने-लेटनेके लिए ठाँव बना लिया है। उसके भरे-पूरे परिवारमें यही

दो प्राणी और उस सुन्दर-सुखद घरमें बस इतना ही स्थान उनके लिए बचा है।

"पापा, पापा, सुना तुमने ?"—कहती हुई ग्रून्या दौड़कर आई और ईगोरकी गोदमें बैठ गई। उसी तेजीसे चलती हुई साँससे ईगोरने महसूस किया कि वह शायद काफ़ी दूरसे दौड़ी आई है और इसीलिए हाँफ रही है। अपने दोनों हाथ उसके चेहरेपर फेरते हुए ईगोरने कहा—"क्या सुना ? तुझे आज यह हो क्या गया है री ? न रात-भर सोई, न कुछ खाया-पिया। यह क्या पागलपन सूझा है आज तुझे ?"

अपने सिरसे ईगोरकी ठोड़ी रगड़ते हुए ग्रून्याने कहा—"पागल मैं नहीं, तुम हो गए हो। तुम बहरे तो हो नहीं, फिर सुनते क्यों नहीं ? आख़िर मैं अकेली ही तो नहीं सुन रही—सारा गाँव सुनकर प्रसन्नतासे उछल-कूद रहा है।"

"अरे, पर बता भी तो, क्या ? सारा गाँव क्या सुन रहा है ?"

"लाल-सेनाकी तोपोंका स्वर, उसके बमोंका विस्फोट ? देखते नहीं, उसके लड़ाकू हवाई-जहाज लुफ़्टवाफ़ेको टिड्डियोंकी तरह मार-मारकर भगा रहे हैं।"

"अच्छा, जरा चुप तो रह",—ग्रून्याके मुँहपर अपना हाथ रखते हुए ईगोरने कहा—"मैं भी तो सुनूँ कि आख़िर कहाँ लाल-सेना आ रही है।"

दोनों साँस रोककर चुपचाप बैठ गए। दो-चार मिनट तक कुछ भी सुनाई नहीं दिया। फिर सहसा एक जोरका धड़ाका और उसके साथ ही गड़गड़ाहटका शब्द हुआ, मानो कोई घर गिरा हो या कोई लोहेका बड़ा युद्ध-यन्त्र फटा हो। ईगोरने कसकर ग्रून्याको अपनी छातीसे चिपटा लिया। वह उसे कुछ कहने ही जा रहा था कि दूसरा विस्फोट हुआ, फिर तीसरा, फिर चौथा और फिर तो जैसे विस्फोटोंकी झड़ी ही लग गई। चारों ओरसे धड़ाम्-धड़ाम्, धड़-ड़-ड़···धम्मकी आवाजें आने लगीं। लाल-सेनाके हवाई-बेड़ेकी परिचित आवाज कई महीनों बाद सहसा आज फिर सुनाई

पड़ने लगी। फिर तो मोटरों, लारियों, ट्रकों, टैंकों और मोटर-साइकिलोंकी सम्मिलित ध्वनिसे जैसे वातावरण प्रतिध्वनित हो उठा। ईगोरने ग्रून्याको और भी कसकर अपनी छातीसे चिपटा लिया और उसके ललाट, सिर और कपोलोंपर अधीर-असंयत चुम्बनोंकी छाप लगाता हुआ प्रसन्नतासे पागल हो चीख़ उठा—"ग्रून्या, मेरी प्यारी ग्रून्या, वे आ गए। हाँ, सचमुच आ गए। तू कितनी अच्छी बेटी है! तूने ठीक सुना था—ठीक ही सुना था।"

"पर मुझे छोड़ो भी। मुझे जाने दो। देखो, सब लोग दौड़दौड़ कर उनके स्वागत के लिए हर्षध्वनि करते हुए जा रहे हैं।"—पाँव पटकते हुए ग्रून्याने कहा।

"तू अकेली जायगी, ग्रून्या? मुझे अपने साथ नहीं ले चलेगी? पगली कहींकी। चल, मैं भी तेरे साथ चलता हूँ।"—यह कहकर ईगोर यारत्सेफ़ उठा और ग्रून्याके सिरपर हाथ रखकर उसके साथ-साथ चलने लगा।

क्रान्ति चिरजीवी हो, लाल-सेनाकी जय हो तथा सोवियत-संघ ज़िन्दाबादके नारोंसे आकाश गूँज उठा। न जानें कहाँसे, आज फिर सब के हाथोंमें, घरोंके छज्जों और खिड़कियोंसे, लाल झण्डे फहरा रहे थे। उन अधभूखे, अधनंगे और अधमरे कंकालों में सहसा आज फिर नये जीवनका जोश और नये यौवनका ज़ोर आ गया था। उनके दुर्बल कण्ठ आज हर्षध्वनिसे पृथ्वी और आकाशको हिलाये डाल रहे थे। रूज़िहन-वासियोंकी इस सम्मिलित हर्षध्वनिमें ईगोर और ग्रून्याकी पृथक् आवाज़ तो नहीं सुनाई पड़ रही थी; पर ईगोरके गलेकी फूली हुई नसों और ग्रून्या के बैठे हुए गलेसे यह सहज ही अनुमान किया जा सकता था कि वे दोनों कितने चिल्लाये हैं।

गाँवकी सीमापर पहुँचकर लाल-सेनाके घुड़सवार घोड़ोंसे उतर पड़े और दौड़-दौड़कर रूज़िहनवासियोंसे गले मिले। इस अगाऊ-टुकड़ीमें

अधिकांश लोग रूज़िहनके ही थे, जो आसानीसे अपने चिरपरिचित रास्तों से रातके अँधेरेमें भी इतनी सफलतापूर्वक रूज़िहन पहुँच सके थे। कइयों-को उनकी माताएँ मिलीं, कइयोंको पत्नियाँ, बहनें, पुत्र-पुत्रियाँ, कुटुम्ब-परिजन आदि। आज नात्सियोंकी बर्बरतासे कराहनेवाले रूज़िहनने जैसे नया जन्म ग्रहण किया हो। दौड़-दौड़कर सब एक-दूसरेका अभिवादन-अभिनन्दन कर रहे थे।

गाँवमें पहुँचते ही लाल-सेना तीन भागोंमें बँट गई। एक हिस्सा शत्रुओं और उनके किरायेके कुत्तोंकी तलाशमें चारों ओर गश्त करने लगा। दूसरा हिस्सा भूखे नंगे नागरिकोंको रोटी-कपड़े बाँटने लगा और तीसरा नात्सी पैशाचिकताके शिकार हुए लोगोंकी मरहम-पट्टीकी व्यवस्था करने लगा। इसके ज़िम्मे जहाँ-तहाँ पड़ी सड़ रही लाशों और तार तथा बिजलीके खम्भोंपर लटकी लाशोंको दफ़नाना भी था। लाशोंके बुरी तरह सड़ जाने और मांसल भागोंके पक्षियों द्वारा खा लिये जानेसे यह पहचानना असम्भव था कि वे किसकी हैं।

—३—

एक मोटर आकर ईगोरके घरके सामने रुकी। ग्रून्या द्वारके चौखटेके पास खड़ी थी। मोटरमें बैठे एक भद्र व्यक्तिने मुस्कराकर उससे पूछा—"क्या ईगोर यारत्सेफ़ यहीं रहते हैं?"

ग्रून्याने स्वीकृतिमें केवल अपना सिर हिला दिया और भागकर भीतर पहुँची। बोली—"पापा, तुम्हारा नाम क्या है? मैं तो भूल ही गई!"

हाथसे टटोलकर ग्रून्याको पकड़नेकी चेष्टा करते हुए ईगोरने कहा—"क्यों री, फिर तूने अपनी शरारत शुरू की न! देख अब लाल-सेना आ पहुँची है। अगर ज़्यादा शरारत की, तो···हाँ···देख लेना फिर।"

"तो क्या करोगे, तवारिश ईगोर यारत्सेफ़!"—कहते हुए आगन्तुक-ने भीतर प्रवेश किया और ईगोरका दायाँ हाथ अपने हाथमें लेकर ज़ोरसे झकझोरते हुए कहा—"मुझे पहचाना, तवारिश?"

ईगोर हक्का-बक्का रह गया! एक क्षणको वह मुँह फाड़े, भावहीन मुद्रासे, इस तरह आगन्तुककी ओर मुँह किये रहा, मानो अपनी दृष्टिहीन आँखोंसे उसे पहचाननेकी कोशिश कर रहा हो। दूसरे ही क्षण झिझकते हुए उसने कहा—"तुम जरासिमोव, लाल-सेनाके सर्जन जरासिमोव तो नहीं हो? आवाज़ तो कुछ वैसी ही, परिचित और पहचानी-सी मालूम देती है।"

"भई, खूब पहचाना तुमने!"—हर्षोन्मत्त हो सर्जन जरासिमोवने कहा—"लेकिन तुम्हारा यह क्या हाल हो गया? हम लोग तो तुम्हें अस्पतालमें छोड़कर गए थे न।"

"हाँ, अस्पतालमें ही। उसके बाद जो-कुछ हुआ, वह लम्बी करुण-कहानी है। कभी फिर सुनाऊँगा। मेरी जेबमें अगर लाल-पुस्तिका न मिलती, तो जान भले ही चली जाती; पर आँखें शायद न जातीं।"

"तो क्या लाल-सेनाके आदमी होनेके कारण ही तुम्हारे साथ यह हृदयहीन व्यवहार किया गया?"

"हाँ। जर्मन-अफ़सर हमपर लातों, घूसों और कोड़ोंकी बौछार करते, अपशब्द कह-कहकर हमारे चेहरोंपर थूकते और नंगा करके हमें बुरी तरह पीटते हुए दाँत पीस-पीसकर कहते जाते थे कि स्लाव जातिको वे समूल नष्ट कर देंगे और लाल-सेनाका तो नाम भी बाक़ी न रहने देंगे। हमें हफ्तों भूखों मारा गया, जाड़ेमें नंगा रखा गया और बगलमें रस्से डालकर रात-रातभर छतोंसे लटकाये रखा। कँटीले तारोंके घेरेमें, खुली जगह, कीचड़ में रगड़-रगड़कर न-जानें कितने स्वस्थ-सबल साथी भूख और शीतसे तड़पकर मर गए! वे सब बातें मत पूछो सर्जन, कलेजा मुँहको आता है। ओफ्, वे दिन!"

"सब जगहसे ऐसी ही, बल्कि इससे भी भयंकर और रोमांचकारी, बातें सुनता आ रहा हूँ, ईगोर! मैं तो यही नहीं समझ पा रहा कि क्या ये लोग भी मनुष्य हैं? बचपनमें चंगेज़ख़ाँ, बाती, मामई आदिके रोमांचकर

ज़ुल्मोंका वर्णन पढ़ा था; किन्तु इनके ज़ुल्मोंने तो उन्हें भी फीका कर दिया है। पर हाँ भाई, यह तो बताओ तुम्हारी आँखें कैसे जाती रहीं?"

"कहा न, वे लाल-सेनाका नाम तक मिटा देना चाहते थे। हम जितने आदमी पकड़े गए थे, उन्हें उन्होंने घायल होनेके बावजूद अस्पताल से न केवल निकाल ही दिया, बल्कि खाइयाँ खोदने और सड़कोंका मलवा साफ़ करनेको भी मजबूर किया। जिन घायलोंने भूख-प्यास सहकर सारे दिन श्रम करनेमें असमर्थता दिखाई, उन्हें पहले वर्गोमास्टरके कोड़ोंसे और बादमें गोलियोंसे मारा गया। हममें से कुछसे न केवल मार-पीटकर ही लाल सेनाके भेद पूछे गए, बल्कि लाल लोहेकी शलाखोंसे शरीरके कई अंग—यहाँ तक कि कइयोंके गुप्तांग भी—दाग़े गए; कइयोंकी आँखें निकाल ली गईं; हाथ, पाँव, नाक, कान तो न-जानें कितनोंके काट लिये गए! पिटकर बेहोश हो गिरनेवालोंके पेट चीर डाले गए। कई बेहोश-हुओंको टैंकों और फौजी ट्रकोंसे रौंद डाला गया। मेरा बायाँ कान आपको नज़र आता है? मेरे हाथोंकी अंगुलियाँ? और मेरा सीना भी तो ज़रा देखिए!" यह कहकर ईगोरने सीनेपर से अपनी जीर्ण-शीर्ण कमीज़को हटा दिया।

सर्जन जरासिमोवकी आँखें ईगोरकी बाईं कनपटीकी ओर गईं। उन्होंने देखा, बायाँ कान नदारद है! उसकी जगह है सिर्फ़ कानका छिद्र। उसके हाथोंकी अंगुलियाँ भी इस तरह तिरछी कटी हुई हैं, मानो कोई गँड़ासा कच्ची बालोंको एक ही बारमें साफ़ कर गया हो। उसके सीनेपर पहुँचकर तो सर्जनकी आँखें बरबस छलछला उठीं। गरम लोहेके दाग़ पीवसे भरकर पकते-फैलते जा रहे थे। कुछ खड्ढा बनाकर ज़िन्दा चमड़ीमें ही सूखने लगे थे। सर्जनने जेबसे रूमाल निकालकर अपनी आँखें पोंछीं और आर्द्रकण्ठसे कहा—"ईगोर, मेरे साथ अस्पताल चलो। अब और देर न करो।"

सर्जनके कन्धेका सहारा लेकर ईगोर यारत्सेफ़ उठा और पुकारा "ग्रून्या, इधर आ। चल, तेरे भी कान कटवाता हूँ।"

बिना हाथोंकी ग्रून्या, बिना कुछ कहे-सुने, मुस्कराती हुई इस तरह आगे बढ़ आई, मानो कोई बिना पहिएकी गाड़ी (खिलौना) लुढ़क आई हो! सर्जनने एक जिज्ञासा-भरी दृष्टि उसपर डाली और उसके सिरपर हाथ फेरते हुए उसे तथा ईगोरको लेकर मोटरकी ओर बढ़ गये।

तीनोंको लेकर जब मोटर अस्पतालकी ओर चल पड़ी, तो सर्जनने पूछा—"तवारिश ईगोर, तुमने सब-कुछ बताया; पर यह तो बताया ही नहीं कि ग्रून्याके हाथ कैसे काटे गये?"

"ओह, वह तो मैं भूल ही गया। जब जर्मन गुण्डे मेरे घरमें घुसकर ग्रून्याकी माँके साथ बलात्कार कर रहे थे और वह बेचारी तड़प-कराहकर उनके फौलादी पंजेसे छुटकारा पानेकी विफल कोशिश कर रही थी, ग्रून्याने एक आततायी जर्मन सैनिका मुँह नोंच लिया। इसपर एकने उठाकर ग्रून्याको ज़मीनपर दे मारा। दूसरा उसे गोली मारने जा ही रहा था कि एक सैनिकने कहा—'इसके दोनों हाथ काटकर छोड़ दो, ताकि यह जीवन भर किसी जर्मनपर हाथ उठानेकी सज़ा भुगतती रहे। रूसियोंके लिए यह अच्छा सबक़ होगा!' इसके बाद तो ग्रून्या ७ जर्मनोंके प्राण ले चुकी है। मुझसे तो यही अधिक बहादुर निकली!" यह कहकर ईगोर बड़े ज़ोरसे हँस पड़ा। सर्जनने ग्रून्या को चूमकर छातीसे लगा लिया।

(४)

अभियुक्तको सम्बोधित करते हुए विचारपतिने कहा—"कप्तान जोहान मिलर, ईगोर यारत्सेफ़का बयान तुम सुन चुके हो। तुम्हें कुछ कहना है? तुम अपने अपराध स्वीकार करते हो?"

"मैं कह ही क्या सकता हूँ?"—कप्तान मिलरने चमकती हुई सजल आँखोंसे विचारपतिकी ओर मुख़ातिब होकर कहा—"१९०७ के चौथे हेगकन्वेंशनकी ७वीं धारा मुझे मालूम थी। उसके विपरीत युद्ध-बन्दियों-

पर ज़ुल्म करनेके मैं ख़िलाफ़ भी था; पर अफ़सरोंके सामने लाचार था। मैं अपने अपराध स्वीकार करता हूँ।"

"और तुम कर्नल फ़िट्ज़ साकेल?"—विचारपतिने पूछा।

"अपनी करनीपर मैं लज्जित हूँ, विचारपति!"—हतप्रभ होते हुए कर्नल साकेलने कहा—"पर सच मानिए, नागरिकोंको लूटने, सताने, उनका अंग-भंग करने, अनिवार्य श्रमके लिए, स्वस्थ नागरिकोंको जर्मनी भेजने, कम्यूनिस्तोंको गोलीसे मारने या उनकी आँखें निकालने, गरम चाकूसे उनके चेहरोंपर पँचकोना सितारा या स्वस्तिकाका चिह्न बनाने, उन्हें भूखों मारने और छोड़नेसे पहले प्रत्येक स्थानको जलाकर राख कर देनेके जितने भी काम मैंने किये हैं, वे सब ऊपरके हुक्मोंके अनुसार। अपनी सफ़ाईमें मैं ये सब हुक्म पेश करता हूँ।" यह कहकर कर्नल साकेलने फ़ाइलोंका एक पुलिन्दा सरकारी वकीलकी मेज़पर ले जाकर रख दिया।

"और बर्गोमास्टर विल्हेम बौक, तुम्हें क्या कहना है?"

"मैं तो अपना मुँह दिखाने लायक़ भी नहीं हूँ, कहूँ भला क्या? मुझे रूसी मोर्चेपर यह कहकर भेजा गया था कि वहाँ अनाजके पहाड़ लगे हैं, शराबके तालाब भरे हैं और परियोंको मात कर देने वाली रूसी छोकरियोंकी पल्टनकी पल्टन मन बहलानेको हैं! तुम जो चाहो, सो करना। खूब खुलकर खेलना। पर यहाँ आनेपर मुझे काम यह सौंपा गया कि मैं अफ़सरोंके लिए रूसी छोकरियाँ जुटाऊँ! जो आने या जर्मन अफ़सरोंको सुखी-सन्तुष्ट करनेमें आनाकानी करें, उन्हें या तो गोलीसे उड़ा दूँ या उनके नाक-कान, छातियाँ, हाथ, पाँव आदि काट लूँ; नंगा करके उन्हें बेरहमीसे पीटूँ; उनके बाल जला दूँ और उन्हें अन्धा करके हमेशाके लिए कुरूप तथा बेकार कर दूँ। आख़िर मैं भी आदमी हूँ, इस स्वाधीनताने मेरी पाशव वृत्तियोंको भी उभारा और फलतः न मालूम कितनी मासूम और कमसिन लड़कियों, नर्सों, अध्यापिकाओं,

सामूहिक खेतोंकी मज़दूरनियों आदिके साथ मैंने ज़ोर-ज़ुल्म तथा बलात्कार किया ! चाँदमारीके निशानोंके लिए न मालूम कितनी माताओं की गोदसे मुझे उनके मासूम बच्चोंको छीनना पड़ा। पर मैं अफ़सरोंके कठोर आदेशके आगे लाचार था।"

"कर्पोरल रूथ, तुम्हें क्या कहना है ?"

"मुझे तो सिर्फ यही कहना है कि मुझपर जो अभियोग लगाये गये हैं, वे मेरे असली कारनामों का दशमांश भी नहीं हैं। अधिकृत-रूसके इस भागमें शायद ही कोई ऐसा जुल्म हुआ हो, जिसमें मेरा हाथ न हो। मुझे आदेश था कि अधिकृत क्षेत्रोंकी लूटमें वैयक्तिक दिलचस्पी लेना हर जर्मन का फ़र्ज़ है, क्योंकि सरकारको केवल लोहे, पेट्रोल, अनाज, गरम कपड़े, फ़ेल्टबूट, युद्ध-यन्त्र आदिकी जरूरत है; बाक़ी जो जिसके हिस्सेमें पड़े, उसका। स्लाव-जाति और संस्कृतिको समूल नष्ट कर देनेके ख़यालसे मुझसे यह भी कहा गया था कि स्वस्थ-सबल स्त्री-पुरुषोंको गुलामीके लिए जर्मनी भिजवानेमें मदद दूँ और शिक्षण-केन्द्रों, पुस्तकालयों, प्राचीन संग्रहों, क्लबों, कलाभवनों, विश्वविद्यालयों तथा अन्य समस्त संस्कृति-केन्द्रोंको नेस्तनाबूद करवा दूँ।"

"उराज़ बुज़ाकरोफ़, तुम्हें क्या कहना है ?"

"महोदय, मैं उक्रेनका एक यहूदी बनिया हूँ। जर्मनोंके सविशेष अत्याचारोंके डरसे मजबूरन मुझे गेस्टापोमें नौकरी करनी पड़ी। लालसेनाके दो सैनिकों—कौल्या और वास्या—को मैंने ही पकड़वाया। कई कम्यूनिस्टों और गुरिल्लाओंकी हत्याके लिए भी मैं ही ज़िम्मेदार हूँ। गेस्टापो के आदेशसे ही कई गाँवोंमें जाकर मैं चिल्लाया कि लालसेना आ गई, लालसेना आ गई, और जब नागरिक अपने छिपाए हुए अस्त्र-शस्त्र लेकर दौड़ आए, तो जर्मन मशीनगनोंने उन्हें खेतकी मूलोंकी तरह काट डाला ! मेरे

घरसे जो सामान निकला है, वह सब रूज्हिन, सामबेक, विल्की और सोरतावाला गाँवोंकी लूटका ही है।"

"इनोकेन्ती गावरिलोविच, तुम्हें क्या कहना है?"

"मैं क्रासनादोरका एक यहूदी ड्राइवर हूँ। यह सच है कि जर्मनी से पलायन करनेके बाद मैं आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया और हंगेरीमें रहा तथा तीन बार फ़र्ज़ी पासपोर्टसे सफ़र करनेके कारण दंडित भी हुआ। जर्मनोंके अत्याचारोंके डरसे ही मैंने उनकी नौकरी की और लाल-सेनाके सब रास्ते उन्हें बताये। जर्मनोंने मेरे सामने यह घोषणा की कि उनके टैंकोंको रोकनेके लिए सड़कोंके बीचोबीच जो खाइयाँ खोदी गई हैं, उन्हें वे रूसियोंके शवोंसे पाटेंगे। यह भी सच है कि कर्नल क्राइस्टमैन के आदेशसे गेस्टापोके गुर्गे अस्पतालके सब रूसी रोगियों और कई नागरिकों को 'डूशा-गूब्का' नामकी हत्याकारी गाड़ियोंमें भर-भरकर ले गये और गैससे मारे गये लोगोंकी लाशोंसे कई खाइयाँ पाटी गईं।"

"डूशा-गूब्काके बारे में तुम क्या जानते हो?"

"जी, ये ५-७ टनकी गहरे भूरे रंगकी ट्रकें थीं, जिनके पीछे जस्ता-चढ़े टीनकी दोहरी दीवारोंका एक बहुत बड़ा डब्बा लगा था। पीछे एक ऐसा दरवाज़ा था, जिसे बन्द कर देनेपर उसमें हवा नहीं आ-जा सकती थी। इस डब्बेके फ़र्शमें छोटे-छोटे सूराखवाली लोहे की कई नलियाँ लगी थीं, जिनका सम्बन्ध ट्रकके इंजनसे निकलनेवाले धुएँसे था। इसीके कार्बन मोनोऑक्साइडसे डब्बेमें बोरोंकी तरह चिने गए घायलों, औरतों और बच्चों को मार डाला जाता था और उनकी लाशें खाइयोंमें डाल दी जाती थीं।"

"दिन-भरमें ये ट्रकें कितने चक्कर करती थीं?"

"६ से ८ तक, या फिर जितने आदमी होते थे, उनकी आवश्यकता-नुसार कम-ज्यादा भी।"

"इस मृत्यु-ट्रकसे ईगोर यारत्सेफ़के बच निकलनेका हाल तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?"

"एक दिन ग्रून्या अपने किसी साथीसे कह रही थी कि ईगोरने ट्रक बन्द होते ही अपनी कमीजका एक हिस्सा फाड़कर अपने पेशाबसे गीला किया और उसे नाक तथा मुँहपर लगा लिया। इससे वह बेहोश होनेसे बच गया और जब अन्य सब लाशोंके साथ उसे भी एक खाईमें फेंक दिया गया, तो रातको किसी तरह वह उसमेंसे निकल भागा। मैंने यह बात सुन ली और कर्नल साकेलको जा सुनाई। ईगोरको जिन्दा या मृत पकड़ने के लिए हम लोगोंने बहुत कोशिश की; पर उसका कुछ भी पता न चला।"

"अब अदालत बर्ख़ास्त की जाती है"—फ़ौजी विचारपतिने अपनी कुर्सीपर से उठते हुए घोषणा की—"अगली पेशी सोमवारको होगी।" और तेजीसे क़दम बढ़ाते हुए वे ईगोर यारत्सेफ़की ओर गये। उसका हाथ अपने हाथमें लेकर उन्होंने कहा—"तवारिश, मैं हूँ कर्नल म्याकोवस्की, फ़ौजी विचारपति; तुमने मुझे पहचाना ?"

"भला तुम्हें नहीं पहचानूँगा, तवारिश म्याकोवस्की !"—कहकर ईगोरने जोरसे म्याकोवस्कीके हाथको झकझोरा।

ईगोरकी कनपटियोंको स्थिर दृष्टिसे देखते हुए म्याकोवस्कीने कहा—"बायरनके 'प्रिज़नर आफ़् शिलन' में पढ़ा था कि चिन्ता, यन्त्रणा और आघातसे रातोंरात लोगोंके बाल सफ़ेद हो जाते हैं। अब तक इस बातपर विश्वास नहीं होता था। आज २७ वर्षीय ईगोरके सफ़ेद बाल देखकर बायरनके कथनकी यथार्थतापर विश्वास कर सका हूँ।"

(५)

घरोंके मलवोंके बीच तख़्ते बिछाकर बनाई गई रूज़िहनकी जन-नाट्यशाला शेक्सपीयरके 'मिड-समरनाइट्स ड्रीम' के मंचकी यादको ताज़ा कर देती थी। रूज़िहनवासियोंके चेहरोंपर आज वही स्वाभाविक मुस्कराहट

थी, जिसने ज़ारके ज़ुल्मोंसे मुक्ति पानेपर एक दिन उनके चेहरोंको चमकाया था। आज उन्हें ज़िन्दगी अधिक प्यारी और जवानी अधिक स्पृहणीय लग रही थी। अभिनय आज उनके जीवनकी यथार्थताके अधिक निकट था और संगीत कानोंको अधिक प्रिय। आज जैसे उन्हें इनके आनन्दोपभोगका नैतिक अधिकार मिला था।

पहले मस्काओ-आर्ट थिएटरके प्रसिद्ध अभिनेता वाइसिली इवानकाशालोव-लिखित 'विट वर्क्स वो' (बुद्धिसे शत्रुपर विजय) और 'दी फॉरेस्ट' (जंगल) के कुछ भाग खेले गए, और बादमें 'मैकबैथ' का चौथा अंक। उसके घृणा और ज़ुल्मोंके दृश्योंको दर्शकोंने, जर्मन-अत्याचारोंकी याद ताज़ी होनेसे, विशेष पसन्द किया!

अभिनयका आयोजन रूसी बच्चोंके प्रसिद्ध 'तिमूर-संघ' की ओरसे किया गया था। उसकी समाप्तिके बाद संघके नायक विक्टर सामोखिनने कहा—"साथियो, हमारा आजका अभिनय इस बातका सबूत है कि हम मिटे नहीं हैं, मिटेंगे भी नहीं—दुनियाकी कोई शक्ति हमें मिटा नहीं सकती; क्योंकि हम स्वतन्त्र हैं और ज़िन्दा रहनेका हमें अधिकार है। मनुष्यने अज्ञानपर, अन्धकारपर, अन्धविश्वासपर और प्रकृतिपर विजय पाई है। उसने सागर बाँधे हैं, नदियोंके प्रवाह बदल दिये हैं, हवाओंको अपनी चेरी बनाया है, पहाड़ोंको नापा है। फिर क्या वह बर्बर नात्सियोंके कुछ दलोंके आगे हार मान लेगा?"

संघकी मन्त्रिणी सोनिया मोनोवस्किनाने कहा—"ईगोरकी आँखें अब नहीं लौटेंगी, ग्रून्याके हाथ भी नहीं लौटेंगे; पर टूटे हुए घर एक दिन फिर खड़े होकर हवा और धूपसे खेलेंगे। मुरझाए हुए फूल-पौधे फिर लहलहायेंगे। बच्चोंकी किलकारियोंसे फिर यहाँका वातावरण संगीतमय हो उठेगा। राख और लाशोंसे ढँकी भूमि एक दिन फिर हरे-भरे खेतोंमें सुजला-सुफला होगी। हमारे घाव एक दिन भर जायँगे, हमारी स्वाधीनताके लिए बलि हुए बन्धु-बान्धवोंका वियोग भी एक दिन हम भूल जायँगे; पर

लाशोंसे पटी खाइयाँ, स्त्री-बच्चोंके दहनसे काली हुई घरोंकी दीवारें, माँ-बहनोंका अपमान और मासूम बच्चोंकी हत्याएँ स्मृतिकी खूनी थाती बनकर सदा हमें बर्बरताके विरुद्ध लड़नेको उद्यत एवं उत्तेजित करते रहेंगे। 'खूनके लिए खून, मौतके लिए मौत', यही हमारा नारा होगा !"

मञ्चके बीचमें खड़ी होकर संघकी संगीत-संचालिका एलेक्ज़ेन्द्रोवस्कायाने अन्तिम गान आरम्भ किया। खड़े होकर सब दर्शक उसके स्वर में स्वर मिलाकर गाने लगे :—

सब मिलकर बोलो—जय !
आज रूसकी, आज विश्वकी ;
आज नयी मानवताकी जय !—सब०
अद्भुत आज क्रान्तिकी यह जय ;
अत्याचार-भ्रान्तिकी यह क्षय !—सब०
सब मिल जीवनकी बोलो जय ;
मानव औ, स्वतन्त्रताकी जय !—सब०
बिगड़े भवन हँसें फिर सुखमय ;
उजड़े नगर बसें फिर निर्भय !—सब०

अन्तका आरम्भ

कुहरेको चीरती हुई गाड़ी बर्लिनकी ओर दौड़ी जा रही थी। डब्बेमें यद्यपि अभी बिजली जल रही थी; पर बाहरकी धुन्ध धीरे-धीरे दूर हो रही थी। बर्फसे धुले खिड़कियोंके शीशे यात्रियोंको बाहरकी अस्पष्ट-सी झाँकी दे रहे थे। एक कोनेमें बैठे कप्तान फ्रिट्ज़बाख़ पैरिस-प्लास्टरसे बँधे अपने बाएँ हाथको गलेसे लटकी एक पट्टीके सहारे टाँगे मुँहमें दबी पाइपसे धुँएके छोटे-छोटे बादल निकाल रहे थे। उनकी आँखें जैसे बर्लिनके चिरपरिचित पड़ोसको पहचाननेका विफल प्रयत्न कर रही थीं। उनके मनमें आज वह उल्लास और आह्लाद नहीं था, जो घरके निकट पहुँचनेवाले परदेशी में होता है।

फ्रीड्रिख़स्ट्रासे स्टेशनपर जब गाड़ी पहुँची, तो वे उतर पड़े। प्लेट-फ़ार्मपर इने-गिने आदमी फटे मैले कपड़े पहने उदास-से घूम रहे थे। पहलेकीसी भीड़-भाड़ मानों अब अतीतकी कथा बन गई थी। कप्तान को पहले तो सन्देह हुआ कि कहीं वे किसी छोटे स्टेशनपर तो नहीं उतर गए हैं; पर स्टेशनका नाम देखकर उन्हें विश्वास हो गया कि नहीं, फ्रीड्रिख़स्ट्रासे यही है। स्टेशनसे बाहर आकर उन्होंने 'आंगरिफ़' की एक प्रति ख़रीदी। सारा मुखपृष्ठ जर्मनोंकी विजयोंके अतिशयोक्तिपूर्ण समाचारोंसे रँगा था। एक कालमके नीचेवाले कोनेमें बिना शीर्षकके दो पंक्तियाँ छपी थीं—"खारकफ़से हमने अपनी सेनाएँ पीछे हटा ली हैं। लाल-सेना हमारे प्रतिकूल मौसमसे लाभ उठाकर कुछ आगे बढ़ आई है।"

कप्तानका माथा ठनका—"तो ख़ारकफ़ भी हाथसे गया!" फिर उन्हें ख़याल आया—"नहीं, इतनी जल्दी यह कैसे सम्भव हो सकता

है ?" उन्होंने इधर-उधर देखा और कुछ दूरीपर खड़े एक अख़बार बेचनेवाले लड़केको इशारेसे अपनी ओर बुलाया। उसके पास 'दोएचेस एलेग्माइने साईतून' था। कप्तानने उसकी एक प्रति खरीदी और बड़े ग़ौरसे उसका मुखपृष्ठ देखने लगे। वही ख़बर, उन्हीं शब्दोंमें, इसमें भी एक कोनेमें छपी थी। कप्तानके ललाटपर सलवटें पड़ गईं और उनके चेहरेकी उदासी और भी गहरी हो गई। एक ठण्डी साँस लेकर वे टैक्सी-स्टैण्डकी ओर चल पड़े। उन्हें अपने पाँव आज अधिक भारी मालूम हो रहे थे।

ग्रनेवाड बस्तीमें एक घरके सामने पहुँचकर उन्होंने टैक्सी रुकवाई। पाँच मार्कका एक नोट निकालकर ज्योंही उन्होंने ड्राइवरकी ओर बढ़ाया, उसने गिड़गिड़ाकर कहा—"मुझे खेद है कप्तान, यहाँ तकका भाड़ा १७ मार्क हुआ।" कप्तानने एक मर्मभेदी दृष्टि ड्राइवरपर डाली और बिना कुछ कहे जेबसे १२ मार्क और निकालकर उसके हाथपर रख दिये।

दरवाज़ेपर पहुँचकर उन्होंने दस्तक दी। दो भारी पाँवोंकी आहट उनके कानोंमें पड़ी और दूसरे ही क्षण दरवाज़ा खुला। कप्तानने देखा कि उनकी बूढ़ी माँने—जो उनकी लम्बी अनुपस्थितिमें शायद अधिक बूढ़ी हो गई थी—आनन्दातिरेकसे गद्‌गद् हो अपने काँपते हुए दोनों हाथोंको उनकी ओर बढ़ा दिया और चिल्ला उठी—"फ्रिट्ज़बाख़, मेरा प्यारा बेटा!" माँके गले लगकर फ्रिट्ज़बाख़को जैसे आज नया जीवन मिल गया। उसकी भूरी आँखोंमें छलछलाते हुए आनन्दाश्रु और मूक गिराकी विवशतासे काँपते हुए होंठ जैसे माताके सरल-सुण्ठु वात्सल्यकी दुहाई दे रहे थे।

दूसरे ही क्षण बुढ़ियाकी दृष्टि कप्तानके बँधे हुए हाथकी ओर गई। कुछ अनमने-से भावसे उसने पूछा—"और यह हाथमें क्या हुआ रे ?"

"कुछ ख़ास तो नहीं, माँ!"—कप्तानने बनावटी मुस्कराहटके साथ कहा—"यों ही, ज़रा चोट लग गई थी।"

"पर तूने तो मुझे इसकी कभी ख़बर तक भी न दी", बुढ़ियाने किंचित् अविश्वासके स्वरमें पूछा।

"भला इसकी भी कोई ख़बर देने की ज़रूरत थी ? ऐसी मामूली-सी चोटों......"

"बस, बस, रहने दे।" बुढ़ियाने कप्तानको बीच ही में रोककर कहा—"मामूली चोटोंमें पैरिस प्लास्टर बाँधा जाता होगा ? तू तो जैसे मुझे निरी भोली बच्ची ही समझ रहा है।"

कप्तानने अपना दायाँ हाथ माँके कन्धेपर रखते हुए कहा—"लो, फिर आते ही तुमने झगड़ा शुरू कर दिया न। अच्छा, तो मैं कल ही फिर पूर्वी-मोर्चेपर चला जाऊँगा और फिर शायद ज़िन्दा न लौटूँ।"

इस बार बुढ़ियाकी भौंहें तन गईं। उसकी आँखें लाल हो आईं। कप्तानकी ओर देखते हुए उसने दाँत पीसकर कहा—"पूर्वी-मोर्चा ! मेरे सामने फिर उसका नाम न लेना। अब तो वह हमारी नयी पौध और नयी आशाकी समाधि बन रहा है। सत्यानाश हो इस पापी फ्यूहरेरका......।'

कप्तान अब तक जिसे मज़ाक समझ रहे थे, वह उनकी आहत माँकी मर्मवाणी थी और उसके पीछे मानो समस्त जर्मन माताओंका दुर्दम विक्षोभ छिपा था। किसी तरह बात बदलनेके ख़यालसे वे बोले..."अच्छा माँ ईवा कहाँ है ? इतनी देर तक वह दिखाई क्यों नहीं दी ?"

"ईवा, बेचारी ईवा !" एक ठण्डी साँस लेकर बुढ़ियाने अपने आँसू पोंछे और टूटते हुए स्वरमें बोली—"ईवा अब स्वतन्त्र महिला नहीं है। उससे ज़बरदस्ती एक फ़ैक्ट्रीमें काम कराया जाता है। सुबह सात बजे जाती है और रातको ८, ९ और कभी-कभी तो १० बजे तक लौटती है। खाने-पीनेको ठीक मिलता नहीं, इतना काम भी वह बेचारी कर नहीं सकती; इसलिए स्वास्थ्य एकदम गिर गया है। तू तो शायद इतने दिनों बाद सहसा उसे पहचान भी नहीं सकेगा।"

"और हाँ, आनाका क्या हाल है ? क्या वह भी कहीं काम करती है ?"

"नहीं, उसे नात्सी दस्युओंने पोलैण्ड भेज दिया है। मेरे यह कहने पर कि वह तुम्हारी मँगेतर है, अधिकारियोंने कहा कि वे एक अर्द्ध-यहूदी स्त्रीको किसी आर्य जर्मनको कदापि भ्रष्ट नहीं करने देंगे।"

आर्य जर्मन !"—कप्तानके दाँत किटकिटा उठे। फिर कुछ शान्त होकर वे बोले—"अच्छा माँ, तुम्हारे गिरजा जानेका समय हो गया। तुम वहाँ हो आओ। मैं इस समय बहुत थका हूँ, ज़रा आराम करूँगा।"

"गिरजा !" एक व्यंगपूर्ण हँसीके साथ बुढ़ियाने कहा—"अब ग्रूनेवाडमें गिरजा है ही कहाँ ? वह अब शैलफैक्ट्री बन गया है। उसके पादरी को बाध्य-रूपसे श्रम करना पड़ता है और उसमें रहने वाली नन्सको फ़ौजी वेश्यालयोंमें भेज दिया गया है। अब ईसाकी जगह वहाँ गेस्टेपोका उपदेश होता है।"

"यह तुम क्या कह रही हो, माँ ?"

कप्तानका हाथ पकड़कर आगे बढ़ते हुए बुढ़ियाने कहा—"मैं ठीक ही कह रही हूँ। अब तू आ गया है, अपने कानोंसे सब कुछ सुन लेगा। वे तो ईवा को भी पकड़े लिये जा रहे थे; पर जब मैंने कहा कि वह तेरी सगी बहन है, तब कहीं बेचारीका पिण्ड छूटा। अब भी क्या वह सुरक्षित है ? ईश्वर जाने, उसका और हम सबका अब क्या होना है ?"

—२—

ग्रूनेवाडमें फ्रिट्ज़बाख़-परिवारके केवल एक ही मित्र रहते थे और वे थे डा० कोनरेड हाइन। वे बेल्जियममें लड़ते हुए घायल हुए थे। घुटनों से नीचे तक उनके दोनों पाँव काट डाले गए थे। तबसे वे अपने घरपर ही रहते थे। एक पहियेवाली गाड़ीपर चढ़े वे दिन-भर अपने विशाल भवन के एक कमरेसे दूसरे कमरेमें घूमा करते थे। कप्तान फ्रिट्ज़बाख़के पूर्वी-मोर्चेपर चले जानेके बादसे ईवा ही उनके घर अधिक

आती-जाती थी। इन गाढ़े दिनोंमें वे उसके और उसकी माँके लिए एक बहुत बड़ा सहारा थे।

ईवासे कप्तान फ़िट्ज़बाख़के आनेकी बात उन्हें मालूम हो गयी थी। तभीसे वे उनसे मिलनेके लिए अधीर हो उठे थे और थोड़ी-थोड़ी देर बाद उन्हें बुलानेको अपना नौकर भेज रहे थे। अन्तिम बार तो उन्होंने यहाँ तक धमकी दी कि अगर इस बार कप्तान फ़िट्ज़बाख़ उनके यहाँ नहीं गए, तो वे ख़ुद नौकरकी पीठपर सवार होकर आयेंगे! इस बार फ़िट्ज़बाख़को हार माननी पड़ी और ईवाके लौटनेकी अधिक प्रतीक्षा किये बिना ही वे डा० हाइनके घरकी ओर चल पड़े।

कप्तानको देखकर डा० हाइन की प्रसन्नताका ठिकाना नहीं रहा। उनके दाएँ हाथको अपने दोनों हाथों में लेकर दबाते हुए वे बोले—"तुम ज़िन्दा कैसे लौट आए, फ़िट्ज़बाख़? लाल-सेना और सर्दीने तुम्हें कैसे छोड़ दिया?"

"यह मेरा और तुम्हारा दोनोंका सौभाग्य ही समझो, डाक्टर!" कप्तानने सामने रखी कुर्सीपर बैठते हुए कहा—"और सुनाओ, घरू-मोर्चेपर क्या हाल-चाल हैं?"

"पहले तुम पूर्वी-मोर्चेकी बात तो बताओ, घरू-मोर्चेकी चर्चा के लिए तो अभी काफ़ी समय है। ज़रा सुनूँ तो, हमारी जीतोंकी असलियत क्या है?"

"पूर्वी-मोर्चेका हाल अब क्या सुनोगे? जब हम लोग विगत वर्ष गिद्धोंकी तरह रूसियोंपर टूट पड़े थे, तो जान पड़ा था कि उन्हें हराना कुछ ही हफ़्तों या महीनोंकी बात है। जिस बुरी तरह वे लोग पीछे हटते गए, उसने हमारी इस धारणाको विश्वासमें परिणत कर दिया। पर पिछले वर्ष हमें पता लग गया कि रूसी कमज़ोर नहीं, बल्कि पूरी तरह तैयार नहीं हैं। वे डर या हारकर नहीं, बल्कि हमें अधिक भीतर खींचने और हमारी सेना तथा सामग्री खुटानेकी रणनीतिक चालके कारण पीछे हटे

थे। इस वर्ष तो उन्होंने हमारी रही-सही भ्रान्ति भी दूर कर दी है। भूखे भेड़ियोंकी तरह टूटते उनके सैनिकों, बाज़की तरह झपटते उनके लड़ाकू और बोमारू यानों और बवण्डरकी तरह चारों ओरसे बढ़ते हुए उनके टैंकोंको देखकर तो हम लोगोंके पाँव ही नहीं, दिल भी उखड़ गए हैं। कौन जाने, वे कहाँ तक बढ़ेंगे ?"

"अच्छा, यह बात है ?" डा० हाइनने आँखें फाड़कर कहा।

"हाँ, अभी तो शायद हमारी हालत इससे भी बदतर होनी है। फ़ौजी विशेषज्ञोंकी बातोंकी उपेक्षा कर फ्यूहरेरने जो यह भूल की है, वह जर्मन राष्ट्रके लिए बहुत महँगी पड़ेगी। अन्य देशोंमें हमने जो विजय प्राप्त की, उसे हम ज़ोर-ज़ुल्मसे किसी तरह अभी तक क़ायम रख रहे हैं; पर रूस में तो अब उल्टी हवा बह चली है। कौन कह सकता है कि ये लाल सेनाएँ रूसके पुराने सीमान्तपर आकर रुकेंगी या बर्लिनकी ओर बढ़ेंगी ? ख़ारकफ़से तो आगे वे आ ही पहुँची हैं।"

"ख़ारकफ़ तो वे कई दिन पहले ही पहुँच गई थीं। अब तो उन्होंने उक्रेनके लगभग आधे हिस्सेपर दख़ल कर लिया है।"

"तब तो हम लोगोंको जो हज़ारों टन युद्ध-सामग्री और लाखों जर्मन प्राणोंकी बलि देनी पड़ी है, वह सब व्यर्थ ही जायँगी।"

"जायँगी नहीं, समझ लो गईं—कभी की गईं ! तभी तो फ्यूहरेर, फ़ौजी अधिकारी और उनके खुशामदी अब बगलें झाँक रहे हैं ! लोगोंमें भीषण असन्तोष और विक्षोभ फैल रहा है।"

"तब वे इस युद्धको जारी क्यों रखे हुए हैं ?"

"और उपाय क्या है ? नात्सियों की प्रतिष्ठा और अस्तित्व तक आज दाँवपर लगे हैं। उन्होंने बॉल्शेविज्मके विरुद्ध धर्मयुद्ध कहकर इसे शुरू किया था; पर यूरोपके अन्य पूँजीवादी इस चालमें नहीं आ सके और अब तो नात्सियोंको लेनेके देने पड़ रहे हैं।"

"यह तो ठीक है; पर जनता आख़िर उनका साथ क्यों दे रही है ?"

"सुनो फ्रिट्ज़बाख़,"—डा० हाइनने कुछ गम्भीर होकर कहा—"जनता स्वेच्छासे नहीं, डरके मारे और विजयकी आशासे नहीं, पराजयको दूर ठेलनेके लिए आज इसे जारी रख रही है। युद्धोपरान्त लोगोंको किन-किन यातनाओं, कष्टों, अपमानों और अनिष्टोंका सामना करना पड़ेगा, इनकी आशंका ही आज उन्हें जड़ और कायर बनाये हुए है।"

"आपकी बातों में कुछ सचाई मालूम होती है डाक्टर!"

"कुछ ही नहीं, बहुत-कुछ। मैं चाहता हूँ फ्रिट्ज़बाख़, तुम जितने दिन भी यहाँ हो ज़रा घूम-फिरकर अपनी आँखोंसे देखो और अपने कानोंसे सुनो कि लोग क्या कहते, क्या सोचते और कैसे खाते-पीते रहते हैं? ६ राष्ट्रोंको पराजित और पद्दलित करनेवाले जर्मनकी दशा आज कैसी है? और जिस दिन रूस, फ्राँस, पोलैण्ड, नार्वे, डेन्मार्क, बेल्जियम, हालैण्ड, चेकोस्लोवाकिया यूगोस्लाविया ·आदिके लोग इसपर प्रतिशोधका दण्ड लेकर टूट पड़ेंगे, उस दिन इसकी अवस्था क्या होगी, मैं तो उसकी कल्पना ही से काँप उठता हूँ। एक ओर फ्यूहरेर विजय और साम्राज्यके स्वप्न देख रहा है और दूसरी ओर जनता उसे 'माइन काम्फ़' के साथ ही ज़िन्दा दफ़नानेके मनसूबे बाँध रही है।"

"तब क्या होगा डाक्टर? क्रांति होगी?"

"अवश्य। जर्मन जनताके उद्धारका अब और कोई मार्ग ही नहीं रह गया है।"

कुछ क्षण दोनों चुप रहे। फिर डा० हाइनने पूछा—"और हाँ तुम्हारे हाथमें क्या हुआ, यह पूछना तो मैं भूल ही गया। क्या बहुत गहरी चोट लगी है?"

"नहीं"—डा० हाइनके पास मुँह ले जाकर कप्तानने कहा—"चोट तो बहुत मामूली है; पर छुट्टी आनेके लिए यह ढोंग रचना ज़रूरी था। बिना संगीन चोटके मोर्चेपर से एक महीनेकी छुट्टी भला क्यों मिलने लगी?"

"तुममें अभी बुद्धि है!"—डा० हाइनने मुस्कराकर कहा।

"सो बात नहीं है; यह बुद्धि पूर्वी मोर्चेके अधिकांश जर्मन फ़ौजी अफ़-सरोंमें आती जा रही है। जब रूसमें हमारी भ्रान्तियों और भूलोंकी सीमा ही नहीं है तब व्यर्थ अपने प्राण गँवानेसे लाभ क्या ?"

"तुम ठीक कहते हो कप्तान ! मैं तुमसे पूर्णतया सहमत हूँ।"

"अच्छा, तो अब मुझे इजाज़त दीजिए। कई जगह जाना है। कहकर कप्तान उठे और डा० हाइनसे हाथ मिलाकर बाहर निकल आए।"

—३—

आदलोन-होटलमें एक फ़ौजी अफ़सरसे भेंटकर जब कप्तान फ्रिट्ज़बाख़ घरकी ओर लौट रहे थे तो उन्हें काफ़ी भूख लग आई थी। उन्होंने सोचा घर जानेके बजाय रास्तेमें ही कहीं क्यों न कुछ खा लिया जाय। पर साधारण होटलमें खाने-पीनेकी चीजें मिलना काफ़ी अनिश्चित था अतः वे केज़रहाफ़ होटलकी ओर ही चल पड़े।

भीतर पहुँचकर उन्होंने देखा होटलकी शान-शौकत काफ़ी फीकी पड़ गई है। सारे हॉलमें मुश्किल से १२-१५ आदमी बैठे थे जिनमें से अधिकांश गेस्टापोके ही मालूम पड़ते थे। एक मेज़के पास कुर्सी खींचकर वे भी जा बैठे। एक चेक बेहरेने आकर उनसे नात्सी सलाम किया और कुछ टूटी-फूटी जर्मनमें पूछा—"आप क्या खाएंगे ?"

कप्तानने सामने पड़े हुए मेन्यूको देखते हुए कहा—"हैम-सेण्ड-विचेज़, सासेजेज़, पोटेटो सैलैड, ब्रेड एण्ड बटर और कॉफ़ी।"

"मुझे खेद है, साहब"—बेहरेने किंचित् संकोचके साथ विनम्र भावसे कहा—"ये चीजें अभी नहीं हैं। हाँ, ब्रेड ज़रूर मिलेगी; पर मक्खन, मांस वग़ैरा नहीं।"

"और बीअर ?"

"हाँ, वह होगी।"

"अच्छा, वही ले आओ।"

बेहरा चला गया। कप्तानने मेन्यूको अपने सामनेसे सरका दिया और

सोचने लगे कि यहाँ भी यह हाल है ? संगीतके अभावमें होटलका वातावरण और भी मनहूस-सा जान पड़ता था। कुछ क्षण बाद बेहरा बीअरसे भरा एक टम्बलर लाकर कप्तानके सामने रख गया।

कप्तानने एक घूँट टम्बलरमें से ली और मुँह बिदकाकर बिना माल्टके उस रंगीन पानीकी ओर देखने लगे ! दूसरी घूँट लेनेका उन्हें साहस ही नहीं हुआ। टम्बलर अपने सामनेसे दूर खिसकाकर वे बेहरेके आनेकी प्रतीक्षा करने लगे। ५ मिनट बीते, फिर १०, फिर १५; आखिर कप्तानका धैर्य जवाब देने लगा। उन्होंने बेहरेको पुकारा। बेहरा तेज़ीसे क़दम बढ़ाता हुआ आया और गिड़गिड़ाकर बोला—"क्षमा कीजिएगा, मुझे ज़रा अधिक देर लग गई। मुझे खेद है, ब्रेड तो चुक गई।"

"तो यह सूचना देने तुम अब १५ मिनट बाद आए हो ?"—कप्तान ने साश्चर्य बेहरेकी ओर देखकर ज़रा उत्तेजित स्वरमें कहा—"आखिर तुम्हारा मतलब क्या है ?"

बेहरेने कोई उत्तर नहीं दिया और सशंक दृष्टिसे इधर-उधर देखने लगा। कप्तानने किंचित् मुस्कराहटके साथ आश्वस्त स्वर में कहा—"तुम मुझपर विश्वास कर सकते हो। मैं नात्सी नहीं हूँ। साफ़ कहो, दरअसल बात क्या है ?"

बेहरेने कप्तानकी ओर झुककर धीमी आवाज़में कहा—"इस धृष्ठता के लिए आप मुझे क्षमा करें। सच बात तो यह है कि चेक बेहरोंके संघने निश्चय किया है कि हम इसी तरह ग्राहकोंको परेशान करें, ताकि वे होटलों में आना छोड़ दें और सब जर्मन होटल बन्द हो जायँ।" यह कहकर वह फिर तनकर सीधा खड़ा हो गया और कप्तानके आगे बिल बढ़ा दिया। मुस्कराकर कप्तानने बिल देखा और १ मार्क २५ फ़ेनिंग जेबसे निकालकर उसपर रख दिये। चुपचाप उठकर वे बाहर चले आए।

पैदल, ट्राम और टैक्सीमें कप्तान फ्रिट्ज़बाख़ने बर्लिनकी अनेक सड़कें और गली-कूचे छान डाले। जहाँ भी वे गए, अधभूखे लोगोंके

मुर्झाए-से चेहरे, मैले और फटे कपड़े एक गहरी निराशा और नीरसताका परिचय दे रहे थे। लोगोंमें जिस उत्तेजना और उत्साहको उन्होंने अपने जानेसे पूर्व देखा था, आज उसका नाम भी न था। इसी तरह घूमते-फिरते उन्होंने सारा दिन बिता दिया। शाम होते ही बर्लिनके ब्लैक-आउट ने वातावरणको और भी मनहूस बना दिया। अब उन्हें रास्ता खोजनेमें भी कठिनाई होने लगी।

कुर्फ़र्युर्स्टरडाममें काफे-वीनके सामने पहुँचकर वे सहसा रुक गए। भीतरसे कई लोगों के बोलनेकी आवाज़ आ रही थी। उन्होंने देखा कि काफे-वीनके आस-पास के काफे न मालूम कबके अपने साइन-बोर्डोंके साथ ही ग़ायब हो चुके हैं। भीतर जाकर उन्होंने देखा, कई बूढ़े-बूढ़ियाँ और बच्चे जहाँ-तहाँ बैठे कुछ खा-पी रहे हैं। संगीतका यहाँ भी अभाव है। कप्तान ने रेकर्डकी मशीनके पास पहुँचकर १५ फ़ेनिंग उसमें डाले। दूसरे ही क्षण काफ़ेकी उदासीको भंग करता हुआ 'होर्स्ट वेज़ल'‡ गानका रेकर्ड बज उठा। पर कप्तानको यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि कुछ पेशेवर लड़कियों के अलावा इस गानपर कोई भी खड़ा नहीं हुआ।

एक बुढ़ियाने उन लड़कियोंकी ओर व्यंग्यभरी मुस्कराहटके साथ इशाराकर अपने पास बैठे बूढ़ेसे कहा—"इन खड़ी होनेवाली सुन्दरियों

‡नात्सियोंके इस 'अमर संगीतज्ञ' की कहानी भी बड़ी रोचक है। होर्स्ट वेज़ल एक बड़ा दुश्चरित्र और पतित नात्सी था। एक दिन एक वेश्या के यहाँ किसी दूसरे प्रतिद्वन्द्वीने उसका वध कर डाला। हिटलरने यह ड्योंड़ी पीट दी कि कम्यूनिस्तोंने उसका खून कर डाला और बड़ी शान से उसकी अर्थीका जुलूस निकाला। उसको और उसकी कलाको 'अमर' बनानेके खयालसे 'होर्स्ट वेज़ल' नाम देकर उसके एक गानको नात्सियों ने राष्ट्रीय गान बना दिया है। —ले०

की ज़रा शक्ल तो देखो।" बूढ़ेने शरारत-भरी दृष्टिसे उनकी ओर देखते तथा उन्हें सुनाते हुए कहा—"भला ये क्यों खड़ी नहीं होंगी, इन्हींके लिए तो बेचारे होर्स्ट वेज़लने जान दी थी!" और दोनों क़हक़हा मारकर हँस पड़ते हैं। लड़कियाँ कुछ झेंप-सी जाती हैं। काफ़ेमें एकत्रित कई व्यक्ति उनकी ओर घूरने लगते हैं, जिनकी दृष्टिसे घृणा और उपेक्षा स्पष्ट झलक रही है।

बाहर आकर कप्तान ज्यों ही बायीं ओर मुड़े, उन्होंने देखा कि कई स्त्री-पुरुष और बच्चे खड़े हुए गलीके मोड़पर लगे सरकारी रेडियोसे खबरें सुन रहे हैं। अभी उन्होंने दो ही तीन कदम उठाए होंगे कि रेडियोपर डा० जोज़ेफ गेबल्सके विशेष भाषणकी घोषणा सुन पड़ी। वे रुक गए और कुछ ही क्षण बाद डा० गेबल्सकी सुपरिचित चीख-चिल्लाहट आरम्भ हुई। वे कह रहे थे—"महान् जर्मन राइख़के सदस्यों, दुश्मनके झूठे प्रोपेगेण्डापर कभी कान मत दो। विश्वास कीजिए, हर मोर्चेपर हमारी सेनाएँ जीत रही हैं। सिर्फ पूर्वी मोर्चेपर सर्दीकी वजहसे हम अपनी रक्षा-लाइन को जान-बूझकर कुछ छोटी कर रहे हैं। हमारी अन्तिम विजय सुनिश्चित है!"

इसी समय टूटी हुई-सी आवाज़में एक व्यक्ति चिल्लाता है—"ज़ीग हाइल।" अर्थात् जय हो! अन्य व्यक्ति कुतूहलसे उसकी ओर देखने लगते हैं। कोई कुछ नहीं कहता। वह व्यक्ति हतप्रभ हो झुँझला जाता है; पर इस ओर कोई भी ध्यान नहीं देता।

और ऊँची आवाज़में डा० गेबल्स गरजते हैं—"यह राष्ट्रकी रक्षा का युद्ध है। हमें दोनों हाथोंसे लड़ना होगा। अभी हमें और बड़ी-बड़ी कुरबानियाँ करनी होंगी। यूरोपकी बॉल्शेविक खतरेसे रक्षा करनेका भार जर्मन सशस्त्र सेना पर ही है।......अभी और मुसीबतों और खतरों के लिए तैयार रहिए...।"

भाषण समाप्त होते ही एक बुढ़िया ज़ोरसे ठहाका मारकर पागलों की तरह हँसी और एक ओर चल पड़ी। पीछेसे तेज़ीसे क़दम बढ़ाते हुए दो वर्दीधारी नात्सी उसके पास पहुँचे और उनमें से एकने अर्द्ध-विक्षिप्त स्वरमें कहा—"माँ, तुम्हें इस तरह नहीं हँसना चाहिए। इससे जनताके धीरज और साहसपर क्या असर पड़ेगा?"

"ऐ बेवकूफ़ छोकरो, भागो यहाँसे,"—बुढ़ियाने गुर्राकर कहा—"तुम क्या जानो धीरज और साहस किस चिड़ियाका नाम है? जानते हो, मैं अपने पतिको पिछले युद्धमें और अपने पाँचो लड़कोंको इस युद्धमें खो चुकी हूँ। और यह देखो (जेबसे एक कागज़ निकालते हुए) उनकी मृत्यु का संवाद भी मुझे अब कई हफ्तों बाद मिला है, और वह भी इस चेतावनी के साथ कि मैं इसकी चर्चा न करूँ, शोक न मनाऊँ और काले कपड़े भी न पहनूँ! मेरी तरह न मालूम कितनी माताओंकी गोद आज सूनी हो गई है और तुम लोग अभी और कुरबानियाँ करने...।" सहसा एक नात्सी युवकका हाथ बुढ़ियाके मुँहपर ताला बनकर चिपक गया और दोनों उसे घसीटते हुए एक ओर अँधेरेमें ग़ायब हो गए।

—४—

फ्रीड्रिख़हाफ़न पहुँचकर कप्तानकी जानमें जान आई। स्टेशनसे बाहर आकर जैसे वे निश्चित नहीं कर सके कि उन्हें किधर जाना है। उनके पाँव निरुद्देश्य उठ और गिर रहे थे। मस्तिष्कमें एक बवण्डर-सा आया हुआ था। कभी उन्हें अपनी माँका ख़याल आता, कभी ईवा और आना का और कभी पूर्वी-मोर्चेका। नहीं, अब वे फिर वहाँ नहीं लौटेंगे, कदापि नहीं। उनकी माँ, ईवा, आना आदिका जो भी हाल हो; लोग भले ही उन्हें कायर और ग़द्दार कहें। नात्सियोंकी दुराकांक्षाके लिए वे अपने प्राण नहीं गँवायेंगे।

हिमाच्छादित पर्वतमालाओंसे आवेष्ठित कान्स्टेन्स-झीलका सुस्थिर-

निर्मल जल रूपहले चौखटे में जड़े एक बहुत बड़े दर्पणकी भाँति चमक रहा था। चन्द्रमा उसमें अपना मुँह देखकर जैसे मन-ही-मन हँस रहा था। झीलके किनारे खड़े होकर कप्तानने हसरत-भरी दृष्टिसे अमल-धवल हिम-मण्डित पहाड़ियोंको देखा, फिर झीलके सुनिर्मल जलको और फिर मृदु-मन्द समीरमें गहरी साँस खींचकर जैसे अपने फेफड़ोंमें शुद्ध वायु भरने का अभ्यास करने लगे। अभी उनके हृदय और मस्तिष्कका संघर्ष रुका नहीं था, अपितु और बढ़ता ही जा रहा था।

इसी समय पीछेसे किसीके आनेकी आहट-सी सुनाई दी। कुछ दूरीपर कोई आदमी उत्तर-पूर्वकी ओर जाता हुआ दिखाई पड़ा। कप्तान फिर झीलकी ओर देखने लगे। मन-ही मन वे कहने लगे—"कायर शायद मैं नहीं हूँ। पर वीर और कायरकी पहचान तो समयपर ही होती है। आज जो अपनी जान जोखिममें डालने चला हूँ, वह क्या अपने लिए? ६-७ मील चौड़ी यह झील क्या आसानीसे पार होगी? जो भी कुछ हो, अब अधिक सोच-विचारका समय नहीं है। आजकी रातके साथ ही मेरी छुट्टी का आख़िरी दिन भी पूरा हो जायगा। कल या तो मेरी लाश इस झीलकी सतहपर तैरती होगी और माँ, ईवा, आना और शायद डा० कोनरेड हाइन भी गेस्टेपोकी हवालातमें होंगे; या......"

खाँसकर कप्तानने अपना गला साफ़ किया और इधर-उधर देखने लगे। एक बार उन्होंने पीछे देखा और सहसा झीलमें छलाँग लगा दी। इस समय उनके शरीर और मनकी क्या स्थिति थी, वह वर्णनातीत है। कप्तान अच्छे तैराक थे, अतः दृढ़ विश्वासके साथ आगे बढ़ने लगे। रात का सन्नाटा उनकी गतिसे होनेवाली हल्की-सी छप्-छप्से रह-रहकर भंग हो रहा था; पर उस ओर ध्यान देनेवाला इस समय आस-पास कोई भी नहीं था।

× × ×

जब कप्तानकी आँख खुली, तो उन्होंने एक छोटे-से लड़कीके घर

में अपने-आपको आगके समीप एक चारपाईपर लेटे पाया। पास ही एक बूढ़ा स्विस बैठा पाइप पी रहा था। कप्तानको जगा देखकर उसने कहा—"क्यों दोस्त, अब कैसी तबियत है ? सर्दी तो नहीं मालूम होती ?"

"नहीं"—कप्तानने सिर हिलाकर कृतज्ञतापूर्वक कहा—"पर भले वृद्ध, तुमने आखिर मुझे क्यों बचाया ?"

"जर्मन-पुलिसके हवाले करनेके लिए।" बूढ़ेने शरारत-भरी आँखों से हँसते हुए कहा।

कप्तान ज़रा गम्भीर हो गए। उन्हें चिन्तित देखकर बूढ़ेने सहज मुस्कराहटके साथ कहा—"किसी बातकी चिन्ता मत करो, दोस्त! मेरे घरमें अब तुम्हें किसी भी बात या व्यक्ति का डर न होगा।"

कप्तान एक क्षण चुप रहे। फिर बूढ़ेकी ओर देखकर बोले—"इसके लिए मैं आजीवन तुम्हारा कृतज्ञ रहूँगा। पर यह तो बताओ कि तुमने आख़िर मुझे बचाया किस लिए ?"

"तुम्हारे परिवार, प्रेमल पत्नी और निरवलम्ब जर्मनीके लिए! मैं चाहता हूँ कि इस विनाशकारी युद्धके बाद भी तुम-जैसे कुछ स्वस्थ-सबल युवक बच जायँ। नवीन जर्मनकी आशा-आकांक्षा अब तुम्हीं-जैसे पुरुष हैं।"

कप्तानकी आँखें कृतज्ञता से भर आईं।

वे दोनों

लंदनकी जनाकीर्ण कोलाहल-मयी सड़कोंपर अपनी साइकलकी घंटी टनटनाते हुए आरामसे धीरे-धीरे पैडल मारते और इधर-उधर उत्सुक दृष्टि डालते हुए जानेवाली एमीलियाकी आँखोंके आगे सदा अपने ब्राइटन के उस सुन्दर मकान और छोटे-से बगीचेका दृश्य भूला करता था, जहाँ कि उसने जीवनके १६ वर्ष न मालूम किन-किन परिस्थितियों में बिता दिये थे। टेम्सका पुल पार करते समय अक्सर उसे अपने घरके पिछवाड़े के उस तालाबका ध्यान आ जाता था, जहाँ उसने पहले-पहल तैरना सीखा था और उसमें घंटों अपने करतब दिखाकर वह घर वालोंको परेशान कर दिया करती थी। उसके कानोंमें ग्रामीणोंके गीत और ब्राइटनके प्रोटेस्टेंट चर्चकी घंटी की आवाज़ आज भी गूँज रही थी।

युवावस्थाके कुछ सुनहले स्वप्न और एक अज्ञात उत्सुकता उसे लंदन खींच लाई थी। यहाँ वह रीजेंट स्ट्रीटमें अपनी मौसीके साथ ठहरी थी। अपने किसी सम्बन्धी की सिफ़ारिशसे वह एडवर्ड-मेमोरियल अस्पतालमें नर्सका काम सीखने लगी थी। यहीं उसका अस्पतालके स्टोर-विभागके एक नौजवान क्लर्क हेनरीसे परिचय हो गया। इस परिचयको घनिष्टता और फिर प्रेममें परिणत होते देर न लगी और कुछ ही हफ्तोंमें एमीलिया और हेनरी का रोमांस समूचे अस्पतालमें एक रसीले तज्करेका आधार बन गया!

जुलाई में हेनरीकी नौकरी छूट गई। पर बादमें मालूम हुआ कि यहाँसे नौकरी छूटनेसे पहले ही उसने एडिनबर्गमें अपने लिए एक अच्छी जगह खो जली है। यहाँ उसे केवल ३ पौंड साप्ताहिक मिलते थे, जबकि एडिनबरा में उसे ६ पौंड साप्ताहिकका नियुक्ति-पत्र मिल चुका था।

हेनरी और एमीलियाका प्रेम-संबंध अब उस स्टेजको पहुँच चुका था जबकि दोनोंका एक-दूसरेके बिना रहना कठिन ही नहीं असंभव-सा हो चला था। अतः हेनरीने एमीलियासे प्रस्ताव किया कि वह उससे विवाह कर ले, ताकि दोनों सुखपूर्वक एडिनबरामें जाकर रहें। ६ पौंड साप्ताहिक वेतन में दो आदमियों का गुज़र-बसर भलीभाँति हो सकता है।

पहले तो एमीलिया इस बातके लिए तैयार हो गई, पर जब उसने अपनी मौसीकी स्वीकृतिके लिए यह प्रस्ताव उसके आगे रक्खा, तो उसने समझाया कि अपनी ट्रेनिंग समाप्त करने के बाद यदि वह विवाह करे तो ज़्यादा अच्छा हो। केवल डेढ़ महीने ही में तो वह क्वालीफ़ाइड-नर्स हो जायगी। अभी हेनरीके साथ एडिनबरा चले जानेसे उसकी अब तक की मेहनत सारी बेकार जायगी और वह कभी स्वावलम्बी नहीं हो सकेगी। अभी प्रेमने उसे अंधा बना रक्खा है, पर क्या हेनरीपर वह आजीवन निर्भर कर सकेगी?

एमीलियाके विवेकने उसके प्रेमके आवेगपर विजय पाई और यह तय हुआ कि अभी हेनरी अकेला एडिनबरा चला जावे। बड़े दिनों की छुट्टियाँ वह लम्दनमें ही बिताये, क्योंकि तबतक एमीलियाकी ट्रेनिंग भी ख़त्म हो जायगी और विवाहके लिए वह समय भी अधिक उपयुक्त रहेगा। यह बात हेनरीको कुछ अटपटी तो जरूर लगी, पर एमीलिया और उसकी मौसीको एकमत और निश्चल देखकर उसे अपनी बात पर ज़ोर देनेका साहस नहीं हुआ। अपना-सा मुँह लेकर वह चुपचाप एडिनबराके लिए चल पड़ा।

—२—

यूरोपके राजनीतिक-क्षितिजपर उठी हुई अशान्तिकी बदलीने फैलकर शीघ्र ही समूचे यूरोपको अपनी छायासे ढक लिया। चारों ओर महायुद्धकी तैयारियाँ नज़र आने लगीं। युद्धकी घोषणा तो कई दिनों बाद हुई, पर उसका आतंक लन्दनमें बहुत पहले ही छा गया। ट्रामों और ट्रकोंकी आवाज़से ही लोग चौंककर इस तरह आकाशकी ओर देखने लगे जैसे कि

लन्दनकी गगनचुम्बी इमारतोंको धराशायी करनेके लिए शत्रुओंके बम-वर्षक आ पहुँचे हों। हर आदमी को गैस-मास्क दे दी गई और हवाई हमलों से बचनेके अभ्यास शुरू हो गये।

एमीलिया अभी अपना कर्तव्य निश्चित नहीं कर पाई थी। एक ओर हेनरीका प्रेम उसे खींच रहा था और दूसरी ओर मातृभूमि की ममता। हेनरीकी, एडिनबराके लिए रवाना होते समयकी, सजल आँखें आज भी जैसे उसे घूर रही हों! पर दूसरी ओर लंदनके नाशकी कल्पना उसे कँपा देती थी। उसकी आत्मा कह रही थी कि निरंकुश स्वेच्छा-चारिता, अधिकार-मद और दुर्बलोंके खूनपर पनपी हुई नात्सीवादकी विभीषिकाके नाशके बिना एक लंदन ही नहीं, न मालूम कितने नगर मिट्टीमें मिल जायँगे!—एक पोलैण्ड ही नहीं, न मालूम कितने छोटे-मोटे राष्ट्र सदाके लिए दुनियाँ के नक्शेसे मिट जायँगे।

रात-भर एमीलियाको नींद नहीं आई। वह अपना कर्तव्य निश्चित करनेमें अपनी मानसिक कमज़ोरी और कायरताका शिकार हो रही थी। पर रात भरके विचार-विमर्षके बाद उसने तय किया कि हेनरी या उसके प्रेमसे स्वदेशकी रक्षाका प्रश्न अधिक महत्त्वपूर्ण है। अपने मनोविकारोंके जालमें फँसकर वह देशके प्रति उदासीन और कृतघ्न नहीं हो सकती। अब उसके दिमागकी परेशानी और बोझ कुछ हलका हो गया था।

सुबह बिस्तरसे उठनेपर उसने अपने आपको अधिक शान्त और स्वस्थ अनुभव किया। जल्दीसे नित्य-कर्मोंसे निवृत्त होकर वह अपनी मौसीके पास गई। उससे उसने जल्दी-जल्दी दो-चार बातें कीं और अस्प-तालकी तरफ़ चल दी।

अस्पतालके अहातेमें अभी उसने पाँव रक्खा ही था कि सामने बरा-मदेकी सीढ़ियोंपर उसने हेनरीको खड़े-खड़े मुस्कराते देखा। आज हेनरी को देखकर वह हँसी नहीं। उसका चेहरा गम्भीर ही बना रहा। इस समय उसे हेनरीको यहाँ देखनेकी कोई आशा नहीं थी। पास पहुँचनेपर

हेनरीने आगे बढ़कर कहा—"एमीलिया, तुम खुश तो हो ? आज इतनी देर कहाँ लगाई ।"

"कहीं नहीं" एमीलियाने सधी हुई आवाजमें कहा—"पर तुम इस समय यहाँ कैसे ?"

पहले तो हेनरी एमीलियाका यह रुख देखकर कुछ सहमा, फिर बनावटी मुस्कराहटसे बोला—"एमी, तुम्हें देखने चला आया। जानती हो मुझे तो कानूनन लड़ाईमें जाना ही पड़ेगा। फिर विवाह कर ये कुछ दिन हम आनन्दपूर्वक क्यों न बितावें ?"

"यह विवाह और आनन्दका समय है हेनरी ?" एमीलियाने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए कहा—"तुम्हें क्या हो गया है ? यह कहते तुम्हें शर्म नहीं आती ?"

"लेकिन एमी," हेनरीने साहस करके कहा—"इसमें सिर्फ़ मेरा ही स्वार्थ तो नहीं है। अगर मैं जीवित लौटा तब तो हमारा जीवन सुखपूर्वक बीतेगा ही, पर अगर कहीं मैं लड़ाई में काम आ गया, तो तुम्हें पेंशन मिलेगी। तुम्हारी मुसीबतें भी हल हो जायँगी।"

"इस कृपा और दूरदर्शिताके लिए धन्यवाद हेनरी !" एमीलियाने ज़रा मुस्कराकर कहा—"पर मुझे क्षमा करना, तुमने मुझे समझने में ग़लती की है। एमी तुम्हारे नामकी पेंशन लेकर आराम और अकर्मण्यतासे ज़िन्दगी बिताने वाली नहीं है। तुमसे अधिक वह अपने देशसे प्रेम करती है। इस संकटके समय वह हाथपर हाथ रखकर चुप बैठने वाली नहीं।"

एमीलियाने अपनी कलाईपर बँधी घड़ीमें समय देखा और बोली—"मुझे काफ़ी देर हो गई है, हेनरी ! अभी क्षमा करो, फिर किसी वक्त मिलूँगी।"

एमीलियाने अभी एक ही कदम आगे रक्खा था कि हेनरीने भरी हुई आवाज़ में कहा—"लेकिन एमी, तुम वही एमी हो ? तुम बदल तो नहीं गई हो ? आज तुम कैसी बातें कर रही हो ?"

"ओह !" एमीने फीकी मुस्कराहटके साथ कहा—"तुम्हारी सब बातोंका जवाब पीछे दूँगी। अभी मुझे जाने दो; देर हो रही है। क्षमा करना।" एमीलिया तीरकी तरह निकल गई। हेनरी आँखें फाड़कर देखता रह गया।

—३—

एमीलियाकी मौसी बैठी-बैठी सब बातें बड़े ध्यानसे सुनती रही। एमीलिया उससे बातें भी करती जाती थी और एक सूट-केसमें अपने कपड़े तथा छोटी-मोटी आवश्यक चीजें भी रखती जा रही थी। जब वह चुप हुई तो उसकी मौसीने बड़े निराशापूर्ण स्वरमें कहा—"तू जाने तेरा काम जाने, एमी। जब तू किसीका कहना ही नहीं मानती और हमेशा अपनी ज़िदपर ही चलती है तो फिर क्या कहा जाय ? पर कमसे कम अपने माँ-बापसे इस सम्बन्धमें सलाह ले लेनी थी।"

"लेकिन इसमें ऐसी बात क्या है, आॅन्टी ? मैं कोई बुरा काम तो कर नहीं रही।"

"न सही बुरा, पर अच्छे काम भी क्या सबके बसके होते हैं ? मैं शर्त्त लगाकर कहती हूँ कि इस काममें तू सफल नहीं होगी और अपनी जान व्यर्थमें गँवायेगी।"

"पर आॅन्टी, काम करनेसे पहले सफलता-असफलताका अन्दाज़ा क्योंकर लगाया जा सकता है ?"

"तू जर्मनोंको जानती नहीं। वे बड़े खूँखार लोग हैं। वहाँ खुफियागीरी करना औरतोंके बसका काम नहीं। वहाँके गेस्टेपोका नाम तो तूने सुना होगा ?"

"सब कुछ सुन रक्खा है आॅन्टी, पर क्या जर्मनीकी स्त्रियोंने हमारे यहाँ सफलतापूर्वक खुफ़ियागीरी नहीं की है ? जान ही तो जायगी। इससे ज्यादा और क्या होगा ?"

"तो जान जाना तेरे ख़यालमें कुछ भी नहीं, क्यों ? अभी तेरी

आँखें पीछे हैं, पीछे। जब जानपर बन आयगी, तब देखना छठीका दूध याद आता है या नहीं।"

"लेकिन आॅन्टी, तुम मुझे यह सब कहकर डरा क्यों रही हो? तुम्हें तो आशीर्वाद देना चाहिए, कि मैंने जो ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ली है, उसे सफलतापूर्वक निभा सकूँ।"

इस बार उसकी मौसी कुछ नहीं बोली। दोनोंने जाकर खाना खाया और एमीलिया अपना सूट-केस उठाकर चल दी।

—४—

बासलके पास एमीलियाने राइन नदी पार की। न मालूम कितने दिनोंसे उसे अकेले ही सफ़र करना पड़ रहा है। फ्रांस तक तो उसे किसी प्रकारकी कठिनाईका सामना नहीं करना पड़ा क्योंकि युद्ध छिड़नेके बाद से स्विस-सरकारने अपने देशमें विदेशियोंका आना बिलकुल बन्द कर दिया है। एक नौजवान स्विस-संतरीको जिस ढंगसे उसने झाँसा दिया, वह बात यादकर अब भी उसे हँसी आ जाती है।

अभी राइनके तटपर पहुँचकर वह कपड़े बदल ही रही थी कि सामनेकी सड़कसे एक घोड़ागाड़ी आती हुई दिखाई दी। एमीलियाने जल्दी-जल्दी कपड़े सूट-केसमें रक्खे और धीरे-धीरे नज़दीक आने वाली गाड़ीकी प्रतीक्षा करने लगी। जब गाड़ी उसके निकट आई तो उसने देखा कि उसमें बैठा हुआ वर्दीधारी जर्मन गाड़ीवान उसकी ओर घूर रहा है।

अपनी टूटी-फूटी जर्मनमें एमीलियाने कहा—"तुम किधर जा रहे हो? मेरी कुछ सहायता नहीं कर सकोगे?"

गाड़ीवानने गाड़ी रोकी और कूदकर नीचे आ गया। एमीलियाको दो-एक क्षण निर्निमेष दृष्टिसे देखकर उसने एक ज़ोरका ठहाका मारा और बोला—"हलो एमी, तुम इस वक्त यहाँ—इस पोशाक में—कैसे?"

एमीलियाके पाँवों तलेसे जैसे ज़मीन ही खिसक गई हो! उसने घबराकर गाड़ीवानकी तरफ़ देखा। उसके मुँहसे एक शब्द भी नहीं

निकला। यह देखकर गाड़ीवान फिर हँसा और अपनी नकली मूँछें हटाता हुआ बोला—"तुमने हेनरीको पहचाना नहीं, एमी? तुम भी तो आसानी से नहीं पहचानी जा सकतीं।"

एमीलिया ज़ोरसे हँसी और हेनरीके ओठोंपर अँगुली रखते हुए बोली—

"चुप! तुमने सचमुच डरा दिया था। तुम किधर जा रहे हो?"

"मैं जर्मनीकी ट्रांसपोर्ट-सर्विसमें हूँ। यह घास जर्मनीके रिसालेके लिए जा रही है, जो कि यहाँसे कुछ मीलके फ़ासलेपर स्टूटगार्टकी दिशामें डेरा डाले पड़ा है।"

"इसमें छिपाकर तुम मुझे वहाँ तक नहीं ले जा सकते?"

"क्यों नहीं, लेकिन कैम्प तक पहुँचनेसे पहले संतरी, घासमें कोई छिपा है या नहीं, यह देखनेके लिए इसमें संगीन घोंपकर देखता है।"

"संगीन किधरसे घोंपता है—एक ही तरफ़से या चारों तरफ़से?"

"नहीं, सिर्फ़ एक ही तरफ़से—जिधर कि वह खड़ा रहता है। वह अक्सर बाईं ओर ही खड़ा रहता है।"

"अच्छी बात है, मैं कुछ दाईं ओरको घासके बीचमें लेट जाती हूँ। तुम मेरे चारों तरफ़ घासके पूले इस तरह रख दो कि किसी भी तरह दीख न सकूँ। संतरी को बहका सको, तो और भी अच्छा है।"

घासकी आठों गाड़ियाँ जब कैम्पके पास पहुँचीं तो एक संतरीने जोरसे चिल्लाकर पूछा—"किसीकी गाड़ीमें कोई आपत्तिजनक चीज़ तो नहीं है?"

सबने एक स्वरसे कहा—"नहीं।"

संतरी बोला—"अच्छी बात है, निकल जाओ।"

अभी पहली गाड़ीके घोड़ेने पाँव बढ़ाये ही थे कि दूसरे संतरीने पहलेको डाँटते हुए कहा—"तुम हमेशा ऐसी ही सुस्ती करते हो। अरे इस वक्त थोड़ी-सी ग़फ़लतसे भी बहुत बड़ा बिगाड़ हो सकता है। क्यों नहीं

सब गाड़ियोंमें संगीन घोंपकर देख लेते ? कोई शंका या संदेह तो फिर न रहेगा।"

"अच्छा दादा, जैसे तू कहे, वैसा ही सही"—यह कहकर संतरीने अपने कन्धेपर से बन्दूक उठाई और पहली गाड़ीके पूलोंमें डालकर निकालते हुए कहा—"ले देख लिया न, क्या धरा है इनमें ?"

दूसरा संतरी इसपर कुछ नहीं बोला।

पहले संतरीने आगे बढ़कर बारी-बारीसे दूसरी गाड़ियोंके घासमें भी संगीन घोंपी, पर कहीं कुछ न मिला। जब तक वह आठवीं गाड़ी तक पहुँचा, तो उसका हाथ काफ़ी थक चुका था। इसमें उसने संगीन घोंपी और कोई आधा मिनट सुस्ताकर निकाल ली। इस बार उसे घासमें कुछ सख्ती-सी महसूस हुई। गाड़ीवानको सम्बोधित कर वह बोला—"क्यों भाई कोई ऐसी-वैसी चीज़ तो नहीं है ?"

"नहीं सार्जेण्ट, कुछ नहीं है। मेरे घासके पूले ही कुछ सख्त बँधे हैं। होनेको भला इनमें क्या हो सकता है ?"

संतरीने लापरवाहीसे कहा—"अच्छा, चल आगे बढ़ !"

× × ×

कुछ ही दिन बाद जर्मनीके उत्तर-पश्चिममें गोलाबारी शुरू हो गई और दक्षिणमें ज़ेल्पिन-वर्क्स तथा कई अन्य कारख़ानोंपर 'अज्ञात' देशके हवाई जहाज़ोंने बम बरसाये पर कितने आदमी एमीलिया और हेनरी को जानते हैं ? शायद आज वे जीवित भी न हों !

—०—

पीकिंगका भिखारी

चीनकी युगातीत सभ्यता और संस्कृतिका वह केन्द्र, चीनके नवजागरण और नव-शिक्षाका वह प्रतिष्ठान तथा मंचू-नरेशोंके वैभव-विलास का वह प्रतीक आज पतझड़की वाटिकाके समान श्री-सौन्दर्य-विहीन हो सिसक रहा था।

आज पीकिंगके सुरम्य नगरका भग्नावशेष श्मशानसे भी अधिक सूना और भयावह प्रतीत हो रहा था। नगरके चौराहोंपर मलवांके ढेर न मालूम कितने दिनोंसे सड़ और सुलग रहे थे? जिधर दृष्टि जाती थी बुरी तरह क्षत-विक्षत खण्डहरोंकी डरावनी रूप-रेखा देखकर आहत हो लौट आती थी। शताब्दियोंका परिश्रम आज धूलमें मिल चुका था। न मालूम कितने कोट्याधीशोंका वैभव देखते ही देखते जल-बुद्‌बुद्‌की तरह निःशेष हो चुका था।

किन्तु पीकिंग नगर मरा नहीं था। मृत-प्राय सिसकियाँ लेते हुए उस नगरकी रक्त-विहीन नसों-सी सड़कोंपर रेंगते हुए कीड़ोंकी तरह कभी-कभी कोई चीनी—या कुछ चीनी युवक-युवतियोंका दल भयविह्वल हरिणी की भाँति कातर दृष्टिसे इधर-उधर देखता हुआ दबे पाँव दौड़ता निकल जाता था।

जब-तब जापानी सैनिकोंसे भरी मोटर-लारियों या सड़कपर खट-खट शब्द करते हुए जापानी सैनिकोंके गुज़रनेसे नगरके किसी भागकी शून्यता कुछ क्षणके लिए ज़रूर भंग हो जाती थी, अन्यथा चारों ओर रात-दिन श्मशानकी-सी नीरवता छायी रहती थी।

जब कभी पास या दूर बन्दूक चलनेकी आवाज़ सुनायी देती, सुनने वाले चीनी अपने किसी देशभक्त भाईका जापानी राक्षसों द्वारा वध किये

जानेका अनुमान करते—एक क्षण वे साँस रोककर खूनका घूँट पीकर रह जाते और मन-ही-मन जापानियोंको कोसते हुए अपने कामोंमें लग जाते।

पर उन अभागोंके लिए काम भी क्या था? जापानियोंकी गालियो, लात-घूसों और गोलियोंका निशाना बनना या भूखा मरकर अपने खाद्य और स्त्रियोंके मूल्यपर जापानियोंको रँग-रेलियाँ करते देखना! इस स्थिति ने न मालूम कितने चीनियोंको दर-दरका भिखारी बना दिया था! जैसे उनका आत्माभिमान उनके पेटकी ज्वालाकी लपटोंमें धुआँ बनकर उड़ गया था।

× × ×

एक अर्द्धविक्षिप्त-सा चीनी फटे-पुराने चिथड़ोंमें अपनी अस्थिशेष देह छिपाये धीरे-धीरे मलवेके एक ढेरकी ओर बढ़ा जा रहा था। उसकी चमकती हुई छोटी-छोटी आँखें चौकन्नी हो कभी आगे, कभी पीछे, कभी दायें, कभी बायें इस प्रकार देख लेती थीं कि कहींसे कोई उसे देख तो नहीं रहा है।

मलवेके पास पहुँचकर वह रुक गया और एक तीक्ष्ण दृष्टिसे फिर चारों ओर देखा। धीरेसे वह झुका, दाहिनी जेबसे एक पिस्तौल निकाला और उसे एक क्षण तक देखता रहा—मानो कह रहा हो कि बिना कारतूसों के तेरा होना न होना बराबर ही रहा। फिर उसे मलवेमें हाथ डालकर छिपा दिया।

दूसरे ही क्षण बायीं जेबसे उसने मिट्टीकी तम्बाकू-भरी एक चिलम निकाली, जिसके साथ जापानी माचिसकी एक पेटी भी निकल आयी। अभी उसने चिलम सुलगानेको दियासलाई जलायी ही थी कि फ़ौजी बूटका एक जोरदार आघात उसके कूलोंपर पड़ा, जिससे वह औंधे मुँह मलवेके ढलाव पर जा गिरा और चिलम तथा दियासलाई दोनों उसके हाथसे छूट गयीं।

इसी समय किसीने कड़ककर कहा—"बदमाश कहींका, छिपे-छिपे यहाँ चोरकी तरह क्या कर रहा था ?"

चीनीने अपने आपको सँभालते हुए पीछे मुड़कर देखा—एक जापानी सन्तरी हाथमें संगीनसे लैस बन्दूक लिये खूनी आँखोंसे उसकी ओर घूर रहा है।

उसने गिड़-गिड़ाकर कहा—"कुछ तो नहीं सरकार, हवामें चिलम सुलग नहीं रही थी, सो हवाका रुख़ बचा, झुककर, उसीको सुलगा रहा था।"

सन्तरीने इधर-उधर नजर दौड़ायी, तो वहाँ मिट्टीकी एक चिलम-जिसमेंकी तम्बाकू चारों ओर बिखर गयी थी—और कुछ दियासलाइयों को इधर-उधर फैला पाया। और वहाँ उसेकुछ नहीं दीखा।

इसी समय मोटर साइकिलपर जापानी गश्ती फ़ौजी-पुलिसका एक सिपाही भी उधर आ निकला। चीनीने बड़े अदबसे उसे सलाम किया, जिसका कोई उत्तर न दे उसने सन्तरीको सम्बोधित करके कहा—"क्या बात है, शियोतो ?"

"कोई खास बात तो नहीं, यह चीनी यहाँ छिपे-छिपे न मालूम क्या कर रहा था; इसीकी खबर लेने इधर आ गया था।"

सिपाहीने एक क्षण उस अधेड़ और भिखारीका भेष धारण किये चीनीकी ओर देखा, फिर ठहाका मारकर हँसा और सन्तरीसे बोला—"शियोतो, मालूम होता है तुझे इन चीनियोंकी अभी तक पहचान ही नहीं हो पाई। अरे, यह तो पीकिंगका एक निरीह भिखारी है, जो दिन-भर सारे नगरकी ख़ाक छानता फिरता है। मैं तो इसे दिनोंमें कई-कई बार देखता हूँ। चल छोड़, जाने भी दे इसे। आज एक नई चीनी लड़की हाथ लगी है और पीने-पिलानेका बन्दोबस्त भी है। चलना हो तो आ मेरे साथ।"

"वाह मेरे दोस्त!" जापानी सन्तरीकी कठोर मुद्रा अनायास आल्हादसे चमकने लगी—"चल, मेरी ड्यूटी भी अब ख़त्म ही है।"

सन्तरीको अपने पीछे मोटर-साइकिलपर बिठाकर आगन्तुक सिपाही देखते ही देखते चीनी भिखारीकी आँखोंसे ओझल हो गया।

भिखारीने सन्तोषकी एक साँस ली और चिलम तथा दियासलाई जेबमें रखकर दाहिनी ओरकी सड़कपर चल पड़ा।

× × ×

उस टूटे-फूटे घरके सहनमें रखी अँगीठीपर ऐल्यूमीनियमकी एक देग़ची चढ़ी थी, जिसमें कोई चीज़ उबल रही थी। पासमें एक अधेड़ चीनी स्त्री उदास मुँह, नीची आँखें किये बैठी थी।

उसीके पास उसकी युवा लड़की बैठी थी। लड़कीकी आँखें जैसे रो-रोकर लाल हो गई हों और आँसुओंके चिह्न उसके गालोंपर अब भी दिखाई पड़ रहे थे। उसकी शोकातुर आँखें देग़चीसे निकलनेवाली भापपर लगी थीं।

सहसा किसीके दरवाज़ा खटखटानेपर दोनों डरीं और सहमी दृष्टिसे पहले एक-दूसरेकी ओर देखा और फिर एकसाथ दरवाज़ेकी ओर। दोनों-के मुँहसे एक शब्द भी नहीं निकला। उनके शरीर पीपलके पत्तों-से काँप गये।

कुछ ही क्षण बीते होंगे कि दरवाज़ा ज़रा अधिक जोरसे खड़का। लड़कीने फिर उसकी ओर देखा और फिर सिसककर अपनी माँके गलेसे लिपट गयी। उसकी भी आँखें भर आयीं। दो-एक क्षण रुककर, जब कि दरवाज़ेकी खड़खड़ाहट बन्द न हुई, उसने लड़कीको अपनेसे अलग करते हुए दबी आवाज़में कहा—"लिन-सी, बेटी जरा साहससे काम ले। मैं देखती हूँ, कौन है?"

"नहीं माँ, मेरी प्यारी माँ, ईश्वरके लिए दरवाजा मत खोल।" लड़कीने चीख़कर माँकी फ्राकका छोर पकड़ते हुए कहा—"अब मुझसे यह

सब देखा-सहा नहीं जाता। रोज़-रोज़का यह बलात्कार···—···एक, दो, दस, पचास······राक्षस, और·········! माँ·········नहीं, नहीं······"

"पर तू भूलती है, बेटी"—माँने अपनी उठती हुई चीख़को दबानेका प्रयास करते हुए लड़खड़ाती ज़बानमें कहा—"वे दरवाज़ा तोड़कर क्या नहीं आ सकते ? याद नहीं, अभी परसों ही उन्होंने दरवाज़ा खोलनेमें ज़रा-सी देर होनेपर क्या सज़ा दी थी ?"

बरसती हुई आँखों और लड़खड़ाते हुए पाँवोंको धीरे-धीरे उठाते हुए लिन-सीकी माँ दरवाजेकी ओर बढ़ी। उसकी सारी देह बेंतकी तरह काँप रही थी। किवाड़ोंके पास जाकर जैसे वह पत्थरकी जड़-मूर्त्ति बन गई और उसके हाथ ऊपर उठनेसे इन्कार-सा करने लगे। इसी समय उन्होंने बाहर किसीको बड़े आवेशके साथ, किंतु दबी आवाज़में, कहते सुना—"श्रीमती सू-चेह जल्दी कीजिए, जल्दी। देर होनेपर सारा काम ख़राब हो जायगा।"

पलक मारते ही जैसे लिन-सीकी माँके शरीरमें बिजली दौड़ गई और हाथोंने यन्त्रवत् आगे बढ़कर दरवाज़ा खोल दिया। आँधी की तरह आगन्तुक भीतर आया और मज़बूतीसे किवाड़ बन्दकर हाँफते-हाँफते बोला—"श्रीमती सू-चेह, आप कभी-कभी बड़ी नादानी कर बैठती हैं। अभी ज़रा और देर होनेसे अगर मैं पकड़ लिया जाता, तो कैसा होता ? आपको कुछ तो सोचना चाहिए।"

"मुझे क्षमा कीजिएगा डाक्टर युन-शान ! मैं कुछ और ही समझी थी ! वाक़ई मुझसे बड़ी संगीन गलती होते-होते बची।"

"इसमें क्या शक है ?"—आगन्तुकने मुस्कराकर कहा।

"डाक्टर युन-शान ?"—कहती हुई लिन-सी दौड़कर उनसे आकर लिपट गई और बिसूरती हुई बोली—"मुझे इन राक्षसोंसे बचाइए। यह सब ज़ोर-जुल्म मुझसे अब अधिक नहीं सहा जाता। अब हद हो चुकी डाक्टर, ईश्वरके लिए मुझे बचाइए।"

"लिन-सी बेटी"—डाक्टर युन-शानने लिन-सीकी पीठ थपथपाते हुए कहा—"धीरज धरो। मैं क्या कुछ समझता नहीं, तुम्हारी यह पीड़ा क्या मेरी यन्त्रणा नहीं ? पर बेटी, आज तुम्हारी ही तरह न मालूम कितनी चीनी माँ-बहनोंके सतीत्वकी रक्षा करना मेरे जीवनका मुख्य प्रश्न बन गया है। किन्तु किया क्या जाय, जबतक हमारे पास साधन नहीं, जी कड़ाकर यह सब सहना ही होगा।"

"यह सब सहनेसे तो मर जाना अच्छा है, डाक्टर!"

"लेकिन कितनोंके लिए, मेरी भोली बच्ची ? क्या महान् चीनकी थाती को पशु-बलकी वेदीपर होमकर हम-तुम अमर हो जायँगे ? नहीं, यह ग़लत है। आओ, महान् चीन जीवित रहे, इसके लिए प्राणोत्सर्ग करना सीखें।"

"हमारा चीन फिर जागेगा, फिर जी उठेगा, बेटी"—श्रीमती सू-चेह ने आँसू पोंछते हुए उत्साह-पूर्वक कहा।

"इस विश्वासके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ, श्रीमती सू-चेह।" डाक्टर युन-शानने सस्मित गंभीर मुद्रासे उनकी ओर देखते हुए कहा।

बातें करते-करते तीनों भीतरवाले कमरेके द्वारपर आ पहुँचे थे। डाक्टर युन-शानने पेटके पास बेल्टमें खोंसी हुई एक पिस्तौल निकाली और कोटके भीतरकी जेबसे एक भरी हुई बोतल। दोनोंको श्रीमती सू-चेह को देते हुए उनके कानके पास मुँह लेजाकर फुसफुसाते हुए कहा—"यह है पिस्तौल और यह शराबकी बोतल। आज जब वे आयें तो आप दोनों को पहले ख़ूब शराब पिलायें और फिर इस पिस्तौलसे दोनोंका काम तमाम कर दें। इसमें केवल दो ही कारतूस हैं। पर देखिए, दोनोंकी बन्दूकें पहले अपने क़ब्जेमें कर लें और उन्हें पिछवाड़े फ़ेंक दें। मैं अँधेरेमें वहाँ छिपा रहूँगा।" फिर लिन-सीको सम्बोधित करते हुए वे बोले— "लिन-सी बेटी, महान् चीनकी ख़ातिर तुम्हारी माँको और तुम्हें यह महँगी सेवा सौंप रहा हूँ। देखो, इसमें किसी तरहकी ढिलाई न हो। कठोर धैर्य और साहससे काम लेना। पर उन्हें ख़ूब शराब पिलानेसे पहले कहीं वार

न कर बैठना, नहीं तो बना-बनाया सारा काम ही बिगड़ जायगा।"

"अब तो मेरे पिताकी जगह आप ही हैं, डाक्टर युन-शान। आपका आशीर्वाद पानेके बाद लिन-सीको किसका भय है? महान् चीनका नारीत्व अभी भी निर्जीव नहीं हो गया है। मुझपर विश्वास कीजिए।"

"स्वतन्त्र चीन ज़िन्दाबाद!"

"महान् चीन ज़िन्दाबाद!"

उत्तेजित होकर डाक्टर युन-शान कह उठे। और लिन-सीके कन्धे पर हाथ रखकर बोले—"शाबाश बेटी, महान् चीनका नारीत्व तुझसे जीवित है। माता चाईका स्थान तुझ जैसी कोई वीरांगना ही लेगी।"

फिर वे बोले—"अच्छा, तो अब चलता हूँ। उन लोगोंके आनेका समय भी निकट आ रहा है।"

और बिना उत्तरकी प्रतीक्षा किये वे तेज़ीसे बाहर चले गये।

× × ×

पीकिंग नगरके लिए प्रत्येक प्रातःकाल न केवल एक नयी उदासी, बल्कि अनाचार और अत्याचारोंका सन्देश लेकर आता था। इसीलिए शायद लोग सूर्योदय हो जानेपर भी शय्या त्यागनेमें जल्दी नहीं करते थे—जैसे उन्हें यह आशंका होती थी कि उठनेके बाद तो उनकी लाशको शायद सड़क या पानीका ही बिछौना मिलेगा।

उस दिन जापानी सैनिकोंने प्रत्येक घरमें जा-जाकर लोगोंको जगाया और उनके चेहरोंका मिलान अपनी जेबसे एक चित्र निकालकर उसकी रूप-रेखासे किया। कुछ काम न बननेपर वे जो कुछ मिलता, उसे खा जाते; छीनकर ले जाते और जाते हुए घरके स्त्री-पुरुषोंको लातों और घूँसों का पुरस्कार दे जाते! पर कई घण्टोंकी दौड़-धूपके बाद भी उन्हें अपने काममें सफलता नहीं मिली।

दोपहरको पीकिंगके फौजी-अध्यक्षकी आज्ञासे प्रमुख राज-मार्गों पर मोटे-मोटे अक्षरोंमें छपे पोस्टर लगाये गये, जिनमें लिखा था :—

देशद्रोहियों से सावधान !
जापानी सैनिकोंकी रहस्यपूर्ण हत्याएँ
अपराधीके पकड़ाये जानेपर बदला लिया जायगा

जापान सरकारको मालूम हुआ है कि रूसके कम्युनिस्टोंके एजेंट कुछ देश-द्रोही चीनियोंने उनकी जान-मालकी रक्षा के लिए तैनात जापानी सैनिकोंकी कायरतापूर्वक हत्या करने के षड्यन्त्र रचे हैं। यदि अपराधियोंने कल दोपहरके दो बजे तक आत्मसमर्पण नहीं किया, या उनकी जानकारी रखनेवालों ने उन्हें गिरफ्तार नहीं करवाया, तो पीकिंगके प्रत्येक चीनीसे १० येन हर्जाना वसूल किया जावेगा और जितने जापानी सैनिक अबतक मारे गये हैं उनसे दस गुना चीनियोंका बध किया जायगा। जो व्यक्ति पीकिंग विश्व-विद्यालयके भूतपूर्व प्रोफ़ेसर डा० युन-शानको—जो कई दिनोंसे भिखारीके छद्म-वेशमें घूमते देखे गये हैं—ज़िन्दा या मृत-रूपमें गिरफ्तार करवायेगा, उसे समुचित पुरस्कार दिया जायगा।

जिस समय पीकिंगमें उपर्युक्त पोस्टरकी चर्चा हो रही थी और देश-भक्त चीनी वास्तवमें डा० युन-शानके जीवनके सम्बन्धमें चिन्तित हो रहे थे, शान्तुंगकी मुख्य सड़कपर डा० युन-शानकी अध्यक्षतामें कोई अठारह-सौ गुरिल्ला सैनिकोंका दल जिनमेंसे प्रत्येकके पास जापानी सैनिकोंसे छीनी हुई बन्दूकें और पिस्तौलें थीं—राष्ट्रीयताके मदमें झूमता हुआ और आज़ादीका निम्न तराना छेड़ता हुआ चला जा रहा था :—

"महान् चीन—ज़िन्दाबाद !
स्वतन्त्र चीन—ज़िन्दाबाद !
चीनके लिए लड़ें
चीनके लिए मरें
महान् चीन—हो आज़ाद !
स्वतन्त्र चीन—ज़िन्दाबाद !"

कप्तानकी वसीयत

खानेके कमरेमें रखी लम्बी मेज़पर आज नयी धुली हुई साफ़ चादर बिछायी गयी थी। उसके एक छोरपर एक बड़ी तश्तरीमें काफ़ी बड़ी 'क्रिसमस-केक' रखी थी। केककी ऊपरी सतहपर बीसों छोटी-छोटी मोम-बत्तियाँ जल रही थीं। मेजके उस छोरके पास रखी हुई कुर्सी खाली पड़ी थी। बायीं ओरकी कुर्सीपर पीटर बैठा निर्निमेष दृष्टिसे मोमबत्तियोंको देख रहा था। दाहिनी .ओरकी कुर्सीपर बैठी श्रीमती इवलिन एडम्स कभी केककी ओर देखतीं, कभी पीटरकी ओर और फिर अपनी कलाईपर बँधी हाथ-घड़ीको देखकर आशा-भरी दृष्टिसे द्वारकी ओर देखने लगती थीं।

कभी-कभी पीटर उनकी नज़र बचाकर धीरे-धीरे अपना हाथ केकके पास रखी सुन्दर चमकीली छुरीकी ओर बढ़ाता और वे एक झटकेके साथ अपनी गर्दन केककी ओर घुमाकर किंचित् क्रोधसे कहतीं—"पीटर नहीं मानेगा तू? मैं एकबार कह चुकी हूँ कि केक या छुरीको छूना अच्छा नहीं। फिर करने लगा न तू शरारत? अच्छा, आने दे देख तेरे पापा को!"

सकपकाकर पीटर अपना हाथ पीछे खींच लेता और बनावटी भोलेपनसे कहता—"लेकिन मैं छू कब रहा हूँ तुम्हारी केक या छुरीको ममी? मैं तो सिर्फ यह देख रहा था कि यह छुरी नई है, या जो हमारे यहाँ पहले से व्यवहारमें आ रही थी, वही। अगर मुझसे ग़लती हुई हो, तो कृपया मुझे क्षमा कर दीजिए। पापासे कुछ न कहियेगा।"

किंचित् मुस्कराकर श्रीमती इवलिनने कहा—"अच्छा" और फिर द्वारकी ओर देखने लगी—मानो पीटरको ताड़ना या दण्ड देनेके लिए इस समय उनके पास वक्त नहीं था। कितने उत्साह और आशाके साथ आज उन्होंने नई पोशाक पहनी थी। कप्तान ब्रुक्स एडम्स द्वारा बड़े दिनोंके

लिए विशेष रूपसे लाया हुआ इत्र आज पहली बार उन्होंने लगाया था। बड़े दिनके अतिरिक्त आज उनके विवाहका दिन भी था, अतः उन्होंने खाने और शराबकी विशेष व्यवस्था की थी। इसी कारण आजकी शाम उन्होंने किसी परिजन-पड़ोसीके यहाँ आने-जानेकी ज़हमतसे बचाकर सिर्फ़ अपने और ब्रूक्स के लिए ही सुरक्षित रखी थी। पर ब्रूक्सका कहीं पता भी न था—न वे स्वयं आये, न कहींसे फ़ोनपर ही कुछ कहा। वे इवलिन को कितना चाहते हैं, कितनी आन्तरिकतासे उनसे प्रेम करते हैं, इसकी कल्पना इवलिनके सिवा शायद ही कोई कर सके। आखिर आज ऐसा क्या काम आ पड़ा, जो त्योहारके दिन भी वे उन्हें भूल-से गये ? बड़े दिनकी शाम क्या प्रतीक्षा में बितानेकी होती है ? आज उनके दाम्पत्य जीवनका एक नया वर्ष भी तो आरम्भ हो रहा था।

इस बार जब श्रीमती इवलिनने केककी ओर देखा, तो उसपर जलने वाली मोमबत्तियाँ आधीसे अधिक जल चुकी थीं और पीटर कुर्सीपर ही एक ओर सिर झुकाकर सो चुका था। उनकी निराश आँखें फिर द्वारकी ओर गयीं; पर इस बार अधिक देर वहाँ टिक न सकीं और शीघ्र ही वहाँ से हटकर फिर मेज़पर आ लगीं। मेज़पर दोनों हाथोंके बीच सिर टिकाकर वे कुछ सोचने लगीं। उनका दाम्पत्य मानो आज कसौटीपर कसा जा रहा था, जिसके लिए वे अपने-आपको तैयार नहीं पा रही थीं। धीरे-धीरे उनकी आँखोंसे आँसू निकलकर साफ़ सफेद चादरपर दो गीले धब्बे बनाने लगे। ज्यों-ज्यों उनकी आँखोंसे अधिक आँसू निकलते जाते थे, ये गीले धब्बे भी शनैः-शनैः बड़े होते जाते थे।

कुछ देर बाद द्वार खुला और ब्रूक्सने उदास मुख-मुद्रा सहित कमरेमें प्रवेश किया। उनके हाथोंमें कई बड़े-बड़े गत्तेके बक्स थे, जिन्हें दरवाजे के पास रखी एक छोटी मेजपर रखकर ब्रूक्स इवलिनकी ओर बढ़े। कन्धा पकड़कर ब्रूक्सने उन्हें उठाया और अपनी भुजाओंमें भरकर कहा—

"प्यारी ईव, आज मुझसे बड़ी भयंकर ग़लती हो गई। मैं इसके लिए बहुत शर्मिन्दा हूँ। मुझे क्षमा कर दो।"

इवलिनने कुछ नहीं कहा। ब्रूक्सके कन्धेपर सिर रखकर वे सिसकने लगीं। उन्हें ढाढ़स बँधाते हुए ब्रूक्सने कहा—"विश्वास करो इसमें ग़लती मेरी नहीं है। एक बहुत जरूरी कामसे मुझे रुकना पड़ा। उस सम्बन्धमें तुमसे कई आवश्यक बातें करनी हैं। पर वे बादमें होंगी। पहले आओ कुछ खा-पी लें। यह कहकर ब्रूक्सने इवलिनको कुर्सीपर बैठाया और पीटरकी ओर गये। पीटरको गोदमें उठाकर उन्होंने उसका ललाट चूमा और उसे जगाते हुए बोले—"प्यारे पीटर, तुम इतनी जल्दी ही सो गये आज? अरे वाह, मैं तो तुम्हारे लिए कई उपहार लेकर आ रहा हूँ और तुम सो भी गए?"

पीटरने जगकर कहा—"पापा, तो बताओ क्या-क्या उपहार लाये हो मेरे लिए? फ़ादर क्रिसमस लाये? क्रिसमसका पेड़? और मेरा वह मैकेनो?"

"हाँ, हाँ, सब कुछ लाया हूँ; पर पहले आओ कुछ खा लें, तब देखेंगे वे उपहार। बड़े ज़ोर की भूख लग रही है।"

और तीनों बैठकर क्रिसमसकी दावत उड़ाने लगे।

—२—

सारे खिलौने सिरहानेकी मेज़पर सजाकर पीटर सो चुका था। कप्तान एडम्स अपने कमरेमें चहल-कदमी कर रहे थे और पास ही की कुर्सी पर इवलिन स्थिर बैठी जड़-भावसे फ़र्शकी ओर देख रही थीं—मानो सिर झुकाए कोई मूर्त्ति हो। टहलते-टहलते रुककर कप्तानने कहा—"ईव, तुम्हें अपना दिल मजबूत बनाना चाहिए। यह दुनिया कायरों के लिए नहीं है। तुम स्वयं भी इस युद्धके महत्त्वको भली-भाँति समझ सकती हो।"

गर्दन उठाकर इवलिनने कप्तानकी ओर देखा और फिर सधी हुई आवाज़में कहा—"वह मैं समझती हूँ। पर जब स्वेच्छा सेवाकी बात थी,

तो अभी कुछ दिन और तुम नहीं जाते, तो क्या हो जाता ? आखिर और अफ़सर भी तो हैं।"

"यह ठीक है, पर कर्त्तव्य-पालनमें सबसे पहले आगे आना ही मेरी रायमें श्रेयस्कर है। आज दुनियामें आग लग रही है, और तुम कहती हो कि मैं उसे बुझानेका काम कल पर छोड़ दूँ।"

"यह मैं कब कहती हूँ, मगर......"

"अगर-मगर इसमें कुछ नहीं। तुम्हें मुझे खुशीसे हँसते हुए बिदा देनी चाहिए। तुम्हारी खुशी ही मेरा सबसे बड़ा बल है। यह तुम्हारी मिथ्या धारणा है कि हमें लड़ाई-झगड़ोंसे दूर ही रहना चाहिये। दर-असल हमारी यही अदूरदर्शिता आजके भीषण रक्तपातका कारण है। दुनियाके सब लोग आज एक हैं। कहीं भी यदि उनके सुख-शान्तिके लिए ख़तरा पैदा होता है, तो वह समूचे संसारका ख़तरा है। अगर इससे दुनियाको बचानेमें मैं काम आ सकूँ, तो तुम्हें गर्व ही होना चाहिये—शोक नहीं।"

इवलिनकी आँखें भर आयीं। गम्भीर मुख-मुद्रासे वे बोलीं—"युद्ध की आगमें भोले-भाले लोगोंको झोंकनेके लिए सदा ही ऐसे आदर्शों की दुहाई दी जाती रही है; पर क्या वास्तवमें शान्ति और सुख सुलभ हुए ?"

"परन्तु इसका मतलब यह भी तो नहीं कि यदि अब तक हम एक काममें सफल नहीं हुए, तो आगे भी उसके लिए प्रयत्न न करें।"

"करो, खूब करो; मैं कब रोकती हूँ ? लेकिन..."

उत्तेजनाके बीच इवलिनको सहसा शान्त होते देखकर कप्तान उनके निकट आये और किंचित् मुस्कराहटके साथ बोले—"हाँ कहो, आगे कहो न, क्या कहना चाहते हो ? मैं भी तो सुनूँ।"

इवलिनने अपनी सजल आँख कप्तानकी ओर उठाते हुए कहा—"लेकिन प्रयत्न सचाई और ईमानदारी के साथ होना चाहिये। दुनियाके बहुत बड़े भू-भागके लाखों आदमियोंको गुलाम बनाये रखकर क्या

फ़ासिज्मका यथार्थ अन्त किया जा सकेगा ? फ़ासिस्त प्रतिद्वन्दी भले ही मर जायँ, किन्तु इससे फ़ासिज्मका मूलोच्छेद तो नहीं होगा।"

कप्तान इवलिनके बायेंवाली कुर्सीपर बैठ गये और उनके कन्धेपर हाथ रखकर बोले—"हाँ, यह बिल्कुल ठीक कह रही हो, ईव। पर ज़रा यह भी सोचो कि हम सारी दुनियाके मालिक तो हैं नहीं। सच पूछो तो हम अपने देशके भी असली और पूरे मालिक नहीं हैं। अधिकांश देशों में आज सम्पन्न निहित हितोंवाले लोगोंका ही बोलबाला है। सहसा उन्हें हटाना सम्भव नहीं। यदि हम उन्हें हटानेकी चेष्टा करते हैं तो हर देशमें गृह-युद्ध होनेकी सम्भावनाके सिवा अभी शायद कोई खास लाभ न हो, और ऐसा करनेसे हमारे शत्रुओंको ही लाभ पहुँचेगा। उनसे फ़ासिज्म के मूलोच्छेदकी आशा करना भी भ्रान्ति ही है। पर इस बातसे कोई इन्कार नहीं करेगा कि जर्मनी, इटली और जापानकी फ़ासिस्त शक्तियोंके नाश से सर्वत्र पूँजीवादी शासन दुर्बल होगा और जन-शक्ति दृढ़ होगी। इसका प्रभाव ज़ाहिरा तौरपर भले ही गहरा और व्यापक न हो, पर यह जनताकी विजय-यात्राका नया क़दम होगा।"

"यह तो ठीक है, पर···"

"फिर परका क्या मतलब ? अगर तुम इसे ठीक समझती हो, तो तुम्हें मुझे मुस्कराकर विदा देनी चाहिए। तुम्हारी आँखोंमें आँसू देखकर मैं भारी मन लेकर ही यहाँसे जाऊँगा और वह चीज़ मुझे कर्त्तव्य-पालन में दुर्बल बनायेगी। बड़ीसे बड़ी विजय और सफलतामें भी मेरे मनः-चक्षुओं के आगे तुम्हारी सजल आँखें ही घूमेंगी—जो मुझे गोली और बमसे भी अधिक बेकार कर सकेंगी, मैं तुम्हारी हँसती हुई प्रतिमाको मनमें बैठाकर जाना चाहता हूँ। बोलो, क्या मुझे यह सुयोग भी न दोगी ?

इवलिनने अपने आँसू पोंछे और हँसकर दोनों हाथ कप्तानके गले में डाल दिये। कप्तानका चेहरा आनन्दसे खिल उठा और उन्होंने इव-लिन को अपने गाढ़ आलिंगनमें बाँध लिया। सधी हुई आवाज़में

कप्तानने कहा—"मैं तुम्हें बराबर पत्र लिखता रहूँगा। एक क्षण भी तुम और पीटर मेरी आँखोंसे दूर नहीं हो सकोगे। पर एक वायदा तुम्हें मुझसे करना होगा।"

"वह क्या ?"

"पीटरके सामने कभी दुःख या निराशाकी बातें न करना, कभी आँसू न बहाना। वह नयी दुनियाका नागरिक है, उसे निराशा और निरुत्साहसे कायर न बनाना।"

एक क्षण रुककर कप्तानने अपनी जेबसे चपड़ीकी मुहर लगा एक लिफ़ाफ़ा निकाला और इवलिनके हाथ में देते हुए कहा—"अगर मैं लड़ाई में काम आ जाऊँ, तब इसे खोलकर पढ़ना; अन्यथा लौटनेपर मुझे बिना खोले ही वापस कर देना। पर प्रण करो कि कभी उत्सुकता, निराशा या मानसिक दुर्बलताके कारण पहले इसे नहीं खोलोगी।"

सहसा इवलिनका चेहरा फीका पड़ गया। उनके कानोंमें सनसनाहट रेंग गयी जैसे तत्काल उसे खोलकर पढ़नेको वे अधीर हो उठीं। फिर दूसरे ही क्षण अपने-आपको सँभालकर उन्होंने कहा—"अच्छा वायदा करती हूँ, इसे पहले कभी न खोलूँगी।"

कप्तानका चेहरा एक बार फिर खिल उठा। इवलिनकी आँखें मानों सजल होते-होते रुक गईं।

—३—

फ़र्श साफ़ कर चुकनेके बाद श्रीमती इवलिनने खिड़कियोंके शीशे साफ़ करने शुरू किये, छुट्टीके दिन सारे घरकी सफाई करनेमें आरामके बजाय उन्हें थकान ही अधिक होती थी, पर वे इसे आनन्द ही मानती थीं। इस तरह एक तो छुट्टीके दिन काममें व्यस्त रहनेसे समय आसानीसे कट जाता था और दूसरे ब्रूक्सकी यादको भुलावा देनेमें भी सहायता मिलती थी। अक्सर नटखट पीटर आकर थोड़े ही देरमें उनके किये-

करायेको बराबर कर देता था; पर उन्हें यह तो सन्तोष था कि अगर अचानक किसी समय ब्रूक्स आ जाय, तो वे यह कह सकेंगी कि मैंने तो अभी-अभी सफाई की थी, पर इस शरारती पीटरने फिर गन्दगी कर दी। और ब्रूक्स के लौटने की सम्भावना जैसे उन्हें प्रतिदिन ही दिखाई देती थी। रोज़ सुबह उठकर वे इस तरह सफ़ाई-धुलाई करतीं मानो उस दिन ब्रूक्स अवश्य लौटेंगे। वह दिन गुज़र जाता, फिर दूसरा दिन आता और वह भी उसी तरह गुज़र जाता। पर इवलिनकी आशा कभी धुँधली या बासी नहीं पड़ती। यह आशा ही उन्हें ब्रूक्स की अनुपस्थितिको सहनेका साहस और सम्बल प्रदान किये थी। खाते, पीते, सोते, जागते, दफ्तर जाते और लौटते समय सदा उन्हें यही ख़याल बना रहता कि पता नहीं कब ब्रूक्स आकर दरवाज़ेपर दस्तक दें! उनके कान मानो हर क्षण इसी दस्तककी आहट पानेको चौकन्ने रहते थे। पर उनकी प्रतीक्षा और आशाके ये क्षण मानो दिनों दिन लम्बे ही होते जा रहे थे।

एक दिन श्रीमती इवलिन दफ्तरसे लौटी ही थीं कि किसीने द्वार पर की घण्टी बजाई। दौड़कर उन्होंने द्वार खोला, तो देखा, सामने नौ सेना-विभागका चपरासी हाथमें एक लम्बा-सा लिफ़ाफ़ा लिये खड़ा है। साथकी चिटपर हस्ताक्षर करके उन्होंने लिफ़ाफ़ा ले लिया और भीतर चली आईं। एक क्षण उन्होंने लिफ़ाफ़े को ध्यानसे देखा और फिर काँपते हुए हाथोंसे उसे खोला। किसी अज्ञात आशंकासे उनके हृदयकी धड़कन बढ़ गई थी और गला सूख-सा गया था। फिर सहसा उन्होंने जैसे सारा साहस बटोरा और दिलपर पत्थर रखकर पत्रको पढ़ना आरम्भ किया। टाइप किये हुए उस पत्रकी पहली पंक्ति थी—'नौसेना-विभाग सखेद सूचित करता है कि आपके सुयोग्य पति कप्तान ब्रूक्स एडम्स लूलोज़ द्वीपपर हुए धावेमें वीरता-पूर्वक लड़ते हुए काम आए। उनकी...' आगे वे नहीं पढ़ सकीं और अचेत होकर टूटे हुए पेड़की तरह सोफ़ेपर गिर पड़ीं।

जब श्रीमती इवलिनको होश आया, तो उन्होंने देखा, पीटर सामने की कुर्सीपर बैठा हुआ रो रहा है। उछलकर उन्होंने उसे अपने अंकमें भर लिया और उसके आँसू पोंछकर बड़े प्यारसे पूछा—"मेरे प्यारे बच्चे, तुम इतनी देर तक कुछ बोले क्यों नहीं ? मुझे पुकारा क्यों नहीं ?"

"देखो, झूठ मत बोलो ममी ! मैंने तुम्हें कितनी बार पुकारा, पर तुमने सुना ही नहीं। मुझे बड़ी भूख लगी है।"

श्रीमती इवलिनका कलेजा बैठने-सा लगा। जैसे-तैसे अपने-आपको सँभालते हुए उन्होंने कहा—"अच्छा चलो, पहले खाना खा लें।"

दोनों खानेके कमरेमें पहुँचे। श्रीमती इवलिनने नौसेना-विभागके पत्रकी चर्चा पीटरसे करना उचित नहीं समझा। पर खाना शुरू करते ही पीटर पूछ बैठा—"ममी, पापा कब आयेंगे ? कई दिनोंसे उनकी कोई चिट्ठी भी नहीं आई।"

पीटरकी आँखोंके आगे अपनी आँखोंमें उमड़ने वाले आँसुओं को रोकना श्रीमती इवलिनके लिए असम्भव-सा काम था। बड़ी कठिनाई से उन्होंने सफलतापूर्वक ऐसा किया और बोलीं—"वे शीघ्र ही लौटेंगे, पीटर ! अब लड़ाई जल्द ही ख़त्म होनेवाली है।"

पीटरने और कुछ नहीं पूछा। खाना ख़त्मकर वह अपने कमरेमें चला गया। श्रीमती इवलिनके लिए तो खाना खाना दूभर हो रहा था। सिर्फ़ पीटरका साथ देनेके लिए उन्हें खानेका ढोंग-सा करना पड़ा था, अन्यथा उन्हें भूख बिलकुल नहीं थी। मुँह पोंछकर वे अपने कमरेमें आ गयीं और मेजकी दराज़से ब्रूक्सका दिया हुआ सीलबन्द लिफ़ाफ़ा निकालकर उसमें का पत्र पढ़ना शुरू किया। पत्र इस प्रकार था—

"प्राणेश्वरी ईव, अशेष प्यार !

'"यह पत्र तुमसे अधिक मैं पीटरके लिए लिख रहा हूँ। पर इसका यह मतलब नहीं कि तुम्हें मैं कुछ भी नहीं लिखना चाहता। सच तो

यह है कि तुम वय-प्राप्त हो, बुद्धिमान हो, युवा और सुन्दर हो। अपना भला-बुरा मुझसे अधिक तुम स्वयं सोच सकती हो, तय कर सकती हो। हम लोग दो प्रेमियों या साथियोंकी तरह रहे हैं, पर जब मैं इस संसारसे कूच कर चुका, तो तुम्हें अपने भविष्य-निर्माणकी पूर्ण स्वतन्त्रता और अधिकार है। जीवन को आहों और आँसुओंके पागलपनमें व्यर्थ न गँवाकर जीनेके अधिकार का सदुपयोग करना, यही मेरा तुमसे अनुरोध है। तुम एक वीर और साहसी सन्नारी हो। तुम्हारे बुद्धि-विवेकपर मुझे पूरा भरोसा है।

"पर पीटर अभी बच्चा है। वह उस अस्फुट कलीकी तरह है, जिसे अपने भविष्यका स्वप्नमें भी गुमान नहीं। उसके भविष्य-निर्माणकी ज़िम्मेदारी हम दोनोंपर है। काश, हम तुम दोनों मिलकर उसके सुन्दर भविष्य का निर्माण करते! पर अब तो वह प्रश्न ही नहीं उठता। उसकी माँकी हैसियतसे तुम उसके प्रति अपने कर्तव्यका पालन किस तरह करोगी, यह तुम जानो, पर पिताकी हैसियतसे उसके प्रति मेरा जो कर्तव्य था— उसकी आंशिक ज़िम्मेदारी भी अब तुमपर ही है। उसे भावी जगका विचार एवं विवेकशील ज़िम्मेदार नागरिक बनना तुम्हारे हाथोंमें है। पीटरके प्रति अपने कर्तव्यके साथ ही तुम उसके प्रति मेरे कर्तव्यका भी पालन किस प्रकार करो, इसीलिए ये पंक्तियाँ लिख रहा हूँ।

"एक बार पीटरने मुझसे पूछा था कि जीना अच्छा है या मरना; तो मैंने कहा था–जीना। एक दूसरी बार उसने पूछा था–लड़ना अच्छा या प्रेम और शान्तिसे रहना; तो मैंने कहा था—शान्ति और प्रेमसे रहना। तब फिर मैं मरने और लड़नेके लिए क्यों चल पड़ा, यह प्रश्न उसको अवश्य असमंजसमें डालेगा। अतः उसे यह समझाना तुम्हारा काम होगा कि जीनेके दो ढंग हैं—एक सुख, समृद्धि, समानता एवं स्वतन्त्रताका, जिसे 'जनतन्त्र' कहा जाता है; और दूसरा दुःख, कङ्गाली, श्रेष्ठता एवं उच्चताकी

मिथ्या भावना और पराधीनताका, जिसे 'फ़ासिज़्म' कहा जाता है। मैंने बेहतर जीवनके पहले ढंगको दूसरेके खतरेसे बचानेके लिए अपने प्राण खोये हैं—केवल लड़ने, रक्त-पात और हत्या या विजयके लिए नहीं। मेरा विश्वास था कि समान रूपसे सभी देशों, जातियों, वर्णोंके लोग सुखी, समृद्ध एवं स्वतन्त्र हों। फ़ासिज़्म को मैंने इसका विरोधी एवं ख़तरा समझा। यह भावना कि हम दूसरोंसे सबल, श्रेष्ठ, अधिक अधिकार एवं सुविधावाले और दूसरोंके पीड़न-शोषणपर अपनी सुख-समृद्धिके महल खड़े करनेके अधिकारी हैं, सबसे अधिक दोषपूर्ण, ख़तरनाक और सारे झगड़ों एवं अशान्तिका मूल है। अतएव इससे पीटरको सदा बचाना और उसे ऐसे समाज-निर्माणके लिए तैयार करना, जिससे सबको काम करने और पेट भरनेका समान अधिकार हो, सबको समान सुविधाएँ हों, सब के समान कर्तव्य हों। आदमी आदमीका शासक, शोषक, शत्रु और संहारक न बनकर साथी और सहयोगी बने, यही भावी मानव समाजका चरम उद्देश्य हो। इसीके प्रयत्नमें मैंने अपना जीवन उत्सर्ग किया है।

"पर साथ ही वीर-पूजाका भूत भी पीटरके सिरमें न घुसने देना। निर्बलको सता या हराकर 'बड़ा' या 'ऊँचा' बननेवाला 'वीर' और 'महान्' होता है, यह भ्रम सदाके लिए उससे दूर रहे, ऐसी चेष्टा करना। किसीको सता, दबा या हराकर सफल होनेवाला 'वीर' या 'महान्' नहीं होता। जर्मनी और जापानके बच्चोंका मस्तिष्क इसी वीर पूजाकी भावनासे विकृत किया गया है। आज रक्तपात और विजय उसके लिए गर्व एवं उल्लासकी चीजें हैं। इस खतरेसे पीटरको बचाना। सब मनुष्य भाई-भाई हैं, और उन्हें आपसमें हिल-मिलकर सहयोग-स्नेहसे रहना चाहिए, यही उसके विचारोंका आधार हो, ऐसी चेष्टा करना।

"अधिक क्या लिखूँ? पीटर हम दोनोंके प्रेमका मूक प्रतीक है। उसे

उसीके अनुरूप बनानेकी चेष्टा करना। पीटर और तुम्हारे लिए मेरी यही वसीयत है।

—तुम्हारा ही,

एडम्स।"

समाप्त होते-होते पत्र श्रीमती ईवलिनके आँसुओंसे तर हो चुका था। उसे मेजपर रख श्रीमती ईवलिन आँसू पोंछकर निर्निमेष दृष्टिसे सामने रखे हुए कप्तान एडम्सके चित्रको देखने लगीं।